# किरण

सम्पादक

मोहन भारद्वाज

# किरण

सम्पादक

**मोहन भारद्वाज**

## सोच-विचार
**सम्पादक**

**'किरण'** अशोकक परिकल्पनाक प्रतिफल अछि । दू हजार छौ इसवीक घटना अछि । एक दिन ओ कहलनि जे साहित्य आ समाजक मादे किछु एहन कयल जाय जाहि सँ जड़ता खतम हो । एकरा बाद ओ साहित्यिक गतिविधि केँ सार्थक आ प्रभावी बनयबाक मादे अनेक विचार पर गप कयलनि । एहि उद्देश्य के ध्यान मे रखैत 'प्रतिमान' बनल । प्रतिमान-परिवारक सदस्य भेलाह : राजमोहन झा, नरेन्द्र झा, मोहन भारद्वाज, भीमनाथ झा, अग्निपुष्प, अशोक, हरेकृष्ण झा, तारानन्द वियोगी आ प्रमोद कुमार झा । संयोग एहन छल जे ओही वर्ष मैथिलीक तीनटा शिखर साहित्यकारक जन्मशती पूर होइत रहय : रमानाथ झा, काशीकान्त मिश्र 'मधुप' आ कांचीनाथ झा 'किरण' । प्रतिमान तीनू महापुरुषक जन्मशती राष्ट्रीय संगोष्ठीक रूप मे ज्योतिरीश्वर नगर (दीपनारायण सिंह क्षेत्रीय सहकारी प्रबन्ध संस्थान, शास्त्री नगर, पटना) मे आयोजित कयलक । किरणजीक व्यक्तित्व-कृतित्व पर 25-26 नवम्बर, 2006 क' विचार-विमर्श भेल । एहि अवसर पर 'जन्मशती समारोह विशेष' नामक एकटा संकलन सेहो छपल। अग्निपुष्प एकर

सम्पादकीय मे लिखने छथि-'प्रगतिशील चेतनासम्पन्न हमर सभक साहित्यिक पुरखा कांचीनाथ झा 'किरण'क साहित्य-यात्रा आन्दोलन सँ आरंभ भेल छल आ ओहि मे वैचारिक स्पष्टता-प्रखरता ओ जन पक्षधरता क्रमिक रूपेँ बढ़ैत गेल ।'

एही तथ्य केँ एहि पोथी मे उनटि-पुनटि क' देखल आ गुनल गेल अछि । हुनक व्यक्ति आ रचनाक दशा आ दिशा, भावप्रवणता आ वैचारिकता के आलोचकलोकनि जाहि गहनता आ निष्पक्षता सँ पढ़लनि अछि से मैथिली साहित्यक उपलब्धि अछि । एहि मे सन्देह नहि जे किरणजीक सम्पूर्ण लेखनक अनुपलब्धता आलोचना-दृष्टि केँ आरो व्यापक होयबा मे बाधक भेल अछि । ओना, एहि संगोष्ठीक बाद अनेक प्रकाशन भेल अछि, भइये रहल अछि । तैयो किरणजीक व्यक्ति आ रचनाक जतेक आ जेहन विवेचन भेल अछि से, विश्वास अछि, मैथिली आलोचनाक प्रतिमान बनत ।

सोच-विचारक नवल-धवल रूप एहि आलोचना पोथीक निजता अछि । जहिना लेखन के बुझबाक लेल लेखक केँ पढ़ब आवश्यक तहिना लेखक केँ जनबाक लेल हुनक साहित्य के गुनबो जरूरी । मिथिला आ मैथिलीक प्रति किरणजीक लगाओ के मैथिल राष्ट्रीयता केँ प्रतिष्ठित करबाक अभियान मानब । आजुक वैश्वीकरणक हो-हल्ला मे किरणजीक प्रगतिशीलताक मैथिल संस्करणक महत्व बूझब । एहि पोथी मे एहन अनेक विन्दु अछि जे एकैसम शतीक मैथिली आलोचनाक हाव-भाव जनबाक आँखि दैत अछि ।

■



# किरणजी

कैलासनाथ झा

23 अक्टूबर 2006 कऽ बाध सँ एलहुँ तऽ केसरीनाथ कहलनि जे भारद्वाजजीक फोन आयल रहय। लगले वैह सम्पर्क करौलनि। गप भेल। भारद्वाजजी कहलनि जे किरणजी पर एकटा लेख लिखू। हुनका सन स्नेही बन्धु दऽ देलनि धर्म संकट मे। अपने पिताक कृतिक प्रसंग मे की लिखू? कोना लिखू? लिखब तऽ आत्म प्रशंसाएक रूप हैत। मुदा भारद्वाजजीक अनुरोध केँ टारबोक साहस नहि।

पाछू सँ अशोकजीक चिट्ठी आयल। हुनक फरमान छल-अहाँ केँ 25 नवम्बर 2006 केँ किरणक महत्व पर आलेख पाठ करबाक अछि। दूनू बन्धु हमरा फाँस मे दऽ देलनि। की करब? आदेशक पालन तऽ करहि पड़त।

किरण शब्दक अर्थ होइछ ज्योति सँ प्रवाहरूप मे बहराइत रेखा। जकर कार्य होइछ अन्धकार केँ दूर करब। सूर्यक किरण सँ रातुक अन्धकार बिला जाइछ। चन्द्रक किरण सँ सभ आह्लादित होइछ। सूर्यक किरण बिना सृष्टिक नाश भऽ जाएत। चन्द्रक किरण बिना कोजागराक मखान कोना खाएल जाएत।

यदि सूर्य आ चन्द्रक किरण प्रकृतिक रक्षा करैत अछि तऽ काञ्चीनाथक 'किरण' मैथिली मे व्याप्त अज्ञानताक अन्धकार केँ सेहो दूर करबाक प्रयत्न कैलक।

मैथिली साहित्यक विभिन्न विधा मे रचना कैनिहार किरणजीक दृष्टिपथ पर

मैथिल समाज मे व्याप्त कुरीतिक संग आर्थिक विपन्नता सेहो छल। एतय उल्लेखनीय जे किरणजीक बाल्यकाल भयंकर आर्थिक विपन्नता मे व्यतीत भेलनि। जेना तेना रजौरक राजा स्वर्गीय टंकनाथ चौधरीक अनुकम्पा सँ शिक्षा प्राप्त कैलनि। आर्थिक विपन्नता ता धरि संग नहि छोड़लकनि जा धरि जीविकापन्न नहि भेलाह।

शिक्षेँ चिकित्सक, रुचिएँ साहित्यकार, प्रवृत्तिएँ समाज सुधारक किरणजीक जीवन आद्यन्त संघर्षमय रहलनि। मातृभाषा मैथिलीक हेतु संघर्ष, अपन आर्थिक स्थिति कैँ सुदृढ़ करबाक हेतु संघर्ष, मैथिल समाज कैँ जाग्रत करबाक हेतु संघर्ष। किरणजी अर्थशास्त्रक विद्वान तऽ नहि रहथि मुदा 'आमद सँ थोड़ खर्च करी' एहि सिद्धान्तक पालन सभ दिन कैलनि। संघर्षशील, क्रान्तिकारी, सुधारवादी दृष्टिकोणक अभिव्यक्ति तऽ हुनक रचनाओ सभ मे भेल छनि। ''शीतलसेनी'', ''कर्ण'' आदि एकाङ्की मे सामाजिक व्यवस्था पर जे प्रहार कैने छथि से स्पष्टे अछि। हुनक रचना सभक विवेचना तऽ विद्वान लोकनिक द्वारा कैले जा रहल अछि।

हम किछु निबन्धक चर्च करब जे प्रकाशित रहितहुँ नुकैल अछि। इतिहासकार लोकनि ओकर उल्लेख नहि कैने छथि।

हमर दृष्टिएँ निबन्धकार किरणजीक सभ सँ पहिल निबन्ध ई थीक। शीर्षक अछि ''प्राचीन ओ नवीन सभ्यता'' जे प्रकाशित अछि द्वितीय जन्मक मिथिला मोदक उद्‌गार मे।

पाश्चात्य सभ्यताक अनुकरण मे मैथिल समाज अपना कैँ बिसरि रहल छल। भाषा, संस्कृति नष्ट भऽ रहल छलैक। मिथिलाक दुःस्थितिक प्रसंग मे कहैत छथि :-

''वर्त्तमान समय मिथिलाक हेतु बहुत विकट भै रहल अछि। जे मिथिला बौद्ध राजाक संग धार्मिक और सांस्कृतिक युद्ध मे जीति अपन प्राचीन धर्म ओ संस्कृतिक रक्षा कैलक, जे मिथिला कैक सय वर्ष धरि आर्थिक और राजनीतिक दृष्टिसँ मुसलमानक अधीन रहिओ कऽ धार्मिक, ओ राजनीतिक क्षेत्र मे स्वाधीने रहल से मिथिला आइ सभ दृष्टि सँ अपन अस्तित्व नष्ट कै रहल अछि। सम्प्रति मिथिलाक आत्माओ पराधीन भै रहल अछि।''



दोसर निबन्ध अछि ''भारतीय युद्धशास्त्र''। देश भक्ति, स्वातंत्र्य प्रेम, राजनीतिक दूरदर्शिताक अभिव्यक्ति एहिमे भेल अछि। मोदक उद्‌गार 25मे ई प्रकाशित अछि।

तेसर निबन्ध अछि ''घर बैसल रोजगार''। मोदक उद्‌गार चैत-अगहन मे प्रकाशित अछि। 1347-48 साल मे। हमर दृष्टिएँ एहन उपयोगी निबन्ध यैह टा अछि। ओना तऽ सम्पूर्ण देश मे विशेष कऽ मैथिल समाज मे बेरोजगारी पराकाष्ठा पर छल। अर्थे दुर्बल व्यक्ति की कै सकत? भूखल पेटे क्यो मलार गाबि सकैत अछि?

''जकरा अपन पेटक हेतु आनक खुशामद करै पड़तैक से कोन काज कै सकत? ओ अपन जातिक वा देशक सम्मान रक्षा कोना कै सकत। तेँ नोकरी सँ भिन्न कोनो जीविकोपार्जनक रास्ताक खोज करक चाही।''

थोड़ पूँजी मे विभिन्न प्रकारक गृह उद्योगक परामर्श देने छथि जाहि सँ हुनक व्यावसायिक बुद्धिक परिचय प्राप्त होइछ। एहि निबन्ध सँ प्रभावित भऽ किछु व्यक्ति मंजन आ मोसि बनाकऽ बेचथि से मोन अछि। कोना बनाबी ताहू प्रसंग मे विस्तृत रूपेँ विचार केने छथि।

किरणजीक विचारधारा सभदिन सत्य रहत। हुनक चिन्तनक आधार छलनि यथार्थक धरातल। कल्पनाक पाँखि लगाय कहियो उड़ान नहि भरलनि।

अपन पिताक एक छोट छीन कविता प्रस्तुत करैत छी जे हुनक डायरी मे भेटल अछि। एहि मे हुनक यथार्थवादी दृष्टिकोणक संगहि मैथिलीक साहित्यकारक दुःस्थितिक अभिव्यक्ति भेल अछि।

''हे कवि कोकिल<br>
देश रहय स्वाधीन<br>
राजा परजा मैथिल सकले<br>
अहाँक गीत छल गबैत सुनैत<br>
विसफी सन जागीर पौल<br>
तँ शास्त्र काव्य केर चिन्तन रचना टा मे<br>
मन छल लगैत छन छल बितैत।<br>
मुदा हमर युग होइतय जन्म<br>
पबितहुँ नड़ पड़िया राजा रंज गंज

अपने गद्दी ले परेसान
बाभन, रजिपूत, कायथ, शिवजन, हरिजन
मुहम्मद जन लड़बैक लेल
संस्कृत-अरबी फारसी हिन्दी-उर्दू अंगरेजी
घर घर मे ठूसि कोंचि नेना सबहक
प्रतिभा केँ थकुचैत, भोतिअबैत।
पढ़ि लिखिक' हरपति रोजीक लेल
बौआ ढ़हना क' होइतथि आगू मे आबि ठाढ़
दुल्लहि रहतथि अजग्ग कुमारि
ताल पत्र पर लिखल गीत रहितय
भिजैत फुफड़ैत सड़ैत तँ
कोन रस भास मे लिखितहुँ गीत''?

अपन जीवनक कटु मधु अनुभवक चिन्तन करैत एकरा लिखलनि। ई कविता हुनक अन्तिम कविता थीक।

हुनक सुधारवादी प्रवृत्तिक अभिव्यक्ति-

''दिअ खेत मे ढाकी गोबर।
उपजा होयत लगले दोबर।।
टोना टापर करय गमार।
पोखरि मारय लाढ़ि सेमार।।
धोबि, डोम, हेला, धड़िकार।
करय समाजक बड़ उपकार।।
आब न ककरो कहिऐ छोट।
सब केओ देत बरोबरि भोट।।
लोभ थीक सभ कलहक मूल।
भोरे तोड़ू तगड़क फूल।।

ई कविता थीक किरणजीक अप्रकाशित बाल साहित्यक एकटा अंश।

85 ई०क चोरि, 86 ई०क बाढ़ि आ 88 ई०क भूकम्प बड़ नाश कैलक। बाबूक लिखलहो सभकेँ। से दुःख अछि आ जाबे जीयब ताबे रहत।

■



# किरणजीक महत्त्व

**शिवशंकर श्रीनिवास**

**आइ** मैथिली भाषा संविधानक आठम अनुसूची मे अछि। भारतक विभिन्न सरकारी भाषा-साहित्यक संस्था द्वारा एकर विकासक हेतु कार्य भ' रहल अछि। भाषा संस्थान मैसूर अन्य भारतीय भाषा-भाषी के मैथिली पढ़ेबाक लेल सम्प्रति भुवनेश्वरमे मैथिली शिक्षक बहाल क' मैथिली सिखा रहलए। संघलोक सेवा आयोग ओ बिहार लोकसेवा आयोगक परीक्षामे मैथिली विषय रूपमे सम्मिलित अछि। नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया वा अन्य प्रकाशन संस्था द्वारा मैथिली पोथी प्रकाशित भेल आ भ' रहलए। मैथिलीक कवि (नचिकेता) फ्रैंकफर्ट सँ अपन भाषामे कविता पढ़ि सादर घुमलाहे। मैथिली रचनाकार मे पोथी प्रकाशनक उत्साह आह्लादक अछि। किन्तु, एहि सभक उत्साहमे मैथिलजन अपन समूह सङ उत्साहित नहि भ' रहलाहे। एकर बहुतो कारण अछि। कारण जे रहय, प्रश्न अछि जे हुनका लोकनिक उत्साह कोना जागत? की मात्र पोथी वा पत्रिकासँ जेना चाही तेना जगाओल जा सकैए। एहि लेल विभिन्न बाट तकबाक आवश्यकता अछि। ई सभ विचार उठत त' किरणजी मन पड़ताह। ओ मैथिल जनके जगेबाक लेल पोथी ओ पत्रिका सँ फूट सेहो बाट तकने छलाह। आइ पुनः ओहेन लोकक खगताक बोध तीव्र भ' जायब सेहो आवश्यक अछि आ वैह बोध होयब किरणजीक महत्व थिक।

किरण मैथिलजन समूह केँ जगेबाक लेल पोथी ओ पत्रिका सँ फूट बाट ताकि

अद्भुत कार्य कयने छथि। किन्तु से कोन आ केना? एकरा विस्तार सँ कहबाक लेल हुनक जीवन ओ जीवन संघर्ष केँ समक्ष राखि देखब आवश्यक अछि।

किरणजीक जन्म बहुत गरीब घरमे भेल रहनि, शरीर सँ रोगियाह। तथापि पढ़ाइ नहि तँ' जँ जीताह त' करताह की? एहि मनस्थिति मे लोहनाक संस्कृत पाठशालामे पढ़ए लगलाह। एतए सँ प्रथमा पास कयलनि जेठ भाइ दिनाजपुर ल' गेलथिन। 1928 ई० मे ओतहि सँ मैट्रिक प्रथम श्रेणी मे सफल भेलाह। एल.एम.पी.क प्रवेश-परीक्षामे सफलो भेलाह परन्तु आर्थिक साधन कतए जे डाक्टर बनि सकथि? फलतः ओ 1930 ई० मे काशी आबि गेलाह। 1935 मे हिन्दू विश्वविद्यालय सँ आयुर्वेद मे डिग्री प्राप्त कयलनि। ओही साल आइ०ए० सेहो कयलनि। उत्तम रिजल्ट आ देखार प्रतिभाक बलें काशीमे रानी चन्द्रावती डिस्पेन्सरी मे चिकित्सक पद प्राप्त कयलनि। किन्तु एहि सभक बीच अपन भाषाक प्रति अनुराग जे हुनका मे रहनि ओ विकासोन्नमुख रहलनि। ई वाल्यकाले सँ गीत लिखैत छलाह, किन्तु ओ गीत छल अपन समाजक धार्मिक ओ अन्य सामाजिक उत्सव परक, जाहि जे सँ किछु 'किरण कवितावली' मे प्रकाशित अछि। हुनका मे वाल्येकाल सँ भाषाक अनुराग कोना भेलनि ताहि प्रसंङ ओ स्वयं लिखैत छथि–''हमर पितामह वैयाकरण नेना झा अपन पितिऔत छोट भाय म०म० हर्षनाथ झाक संग एक आश्रमस्थ बहुत दिन धरि छलाह। अतः हर्षनाथ झाक मैथिली गीत हमर घरमे सभ जनैत छल और अवसर पर गाओलो जाइते छल।

हमर जेठ भाय स्व० काशीनाथ झाक बंगला उपन्यास ''राजपूत जीवन सन्ध्याक मैथिली अनुवाद मिथिला मोद सँ प्रकाशित होबय लागल छल। तेँ मैथिली हमर मातृभाषा थिक, ई चेतना परिवारे सँ भेटल।''1

'किरण कवितावली' मे जे रचना सभ संगृहीत अछि, ओहि मे 1930क बादक जे रचना अछि, ओ तद् ई. सँ पूर्वक रचनासँ एकदम बेछप अछि। तकर कारण जे 1930 ई० मे ई बनारस अयलाह, ओत' हिनक दृष्टिमे भारी परिवर्त्तन भेलनि जे हुनक अन्य गतिविधि ओ रचनासँ बुझल जा सकैत अछि। किरणजी स्वयं अपनाके भाषाक क्षेत्र मे सक्रिय रूपमे अयबाक समय 1930 ई० सँ मानैत छथि। दिसम्बर 1987 मे



प्रकाशित पत्रिका 'हालचाल' मे 'हम कवि कोना भेलहुँ' मे देल गेल वकतव्य मे कहैत छथि–''1930 ई० ओ समय छल जखन हम मैथिलीक क्षेत्र मे आबि गेलहुँ। स्वराजक आन्दोलन चलि रहल छल। हम ओहिमे प्रवेशक' गेलहुँ त' हमर जेठ भाय लोकनि हमरा काशी पठा देलनि। ओतऽ दुनू काज चलैत छलैक। हड़तालो होइक, जुलुसो बहराइक आ अपन-अपन भाषा-साहित्यक काज सेहो होइक। मराठी मलयालम आदि भाषाक साहित्य-परिषदक वार्षिक सम्मेलन मे बड़ उल्लास सँ लोक भाग लीअय। हम पता केलियैक त' बुझायल जे मैथिलीक ने कोनो संस्था अछि एहिठाम आ ने मैथिली स्वीकृते अछि। हमरा हृदय पर एकटा चोट लागल। ओएह अपमान-बोध हमरा मैथिलीक क्षेत्र मे प्रवेश करा देलक।'' आ से किरणजी जखन सँ अपनाके एहि क्षेत्र मे प्रवेश के बुझलनि तखनसँ ओ अपन भूमि ओ समाज विकासक चिन्ता सङ जुटि गेलाह। जाहि मे राष्ट्रीय दायित्वक निर्वाहक प्रति सेहो पूर्ण साकाञ्च छलाह। जाहि क्रममे मिथिला मोद, फागुन 1939 ई०क अंक मे हुनक आक्रोश कविताक पंक्तिमे देख सकैत छी–

**''कर्म बल सँ एक कुल्ली, ब्रिटिस केर साम्राज्य साजल।**
**ताही ब्रिटिसक दास नृपतिक हम रहै छी पाछु लागल।''**

एहि क्रममे मिथिला मिहिर 1938 ई० शारदीय अंकमे डा० काञ्चीनाथ झा 'किरण'क 'एहि चारि खूनक खोज केनिहार के?' मे ब्रिटिश प्रशासनक दुर्नीति, ओकर न्यायिक-व्यवस्थाक आलोचना आदि हुनक स्वराज आन्दोलनमे सहभागिताक द्योतक अछि। हिन्दू विश्वविद्यालयमे मैथिली के स्थान भेटैक एहि लेल संघर्ष कयलनि आ सफल भेलाह। जकर परिणाम स्वरूप 1933 ई० मे आबि क' काशी हिन्दू विश्वविद्यालयमे मैथिलीके स्थान भेटलैक। हिनके प्रयासे हिनक प्रिय मित्र प्रबोध नारायण चौधरीक 'बिछल फूल (1940) नामक मैथिलीमे पहिल कथा-संग्रह प्रकाशित भेल, जाहिमे पाँचटा कथा अछि। किरणजी एहि पोथीमे 'लेखक ओ लेखकक विषयमे' लिखने छथि जाहिसँ स्पष्ट होइत अछि जे किरणजी केँ जाहि प्रयासवले हिन्दू विश्वविद्यालयमे मैथिलीके स्थान भेटलनि ओहि प्रयासमे प्रबोध नारायण चौधरी हिनक सफल सहयोगी रहथिन। काशीमे रहि किरणजी 1936 मे दोसर खेप जखन मिथिलामोदक दोसर क्रम शुरू भेल त' ओहिमे ई बहुत सक्रिय भूमिका मे रहथि। ओहिमे हिनक काञ्चीनाथ झा 'किरण',

विक्षिप्त, भीमनाथ, दीन, अनाथ रमाशंकर, उमाशंकर आदि नाम सँ कतेको रचना प्रकाशित भेल। हस्तलिखित पत्रिका 'मैथिली सुधाकरक उद्भव हिनके आयासें संभव भ' सकल। 1932 ई० मे चन्द्रग्रहण (उपन्यास) ओ 1939 ई० मे वीर प्रसून (बाल कथा-संग्रह), जाहिमे हिनक दूटा कथा अछि, प्रकाशित भेलनि। एतावता स्वराज आन्दोलन, भाषा आन्दोलन ओ साहित्य-रचना आदि स्तर पर हिनक काशी मे महत्वपूर्ण कार्य अछि।

किरणजी काशीसँ नोकरी छोड़ि 1947 मे गाम धर्मपुर (उजान) अयलाह। किछु दिन सरिसबमे अपन औषधालय चलौलनि आ तखनहि सँ लागि गेलाह मैथिलीक विकास हेतु विभिन्न रचनात्मक कार्यमे। 28 ओ 29 दिसम्बर 1947 ई० के वरहगोड़िया मे आयोजित 'मैथिली साहित्य परिषद'क एगारहम अधिवेशन मे प्रधानमंत्री निर्वाचित भेलाह, जाहि पद पर ओ 24 दिसम्बर 1953क पूर्व तक रहलाह। हिनके प्रधानमंत्रीत्व मे महावैयाकरण दीनबन्धुझाक मिथिला भाषा विद्योतन, द्वितीयभाग, प० जीवानन्द ठाकुर सँ प्राप्त तड़िपत्र पर लिखल डाकवचन 'मैथिल डाक'क प्रकाशन भेल, आरो कतेको रचनात्मक कार्य भेल।

हिनक आगूक महत्वपूर्ण कार्य अछि जे ई 14.11.1948 ई० (कार्तिक धवल त्रयोदशी) केँ सरिसव मे 'विद्यापति गोष्ठी' नामक संस्थाक स्थापना कयलनि। एहि संस्थाक माध्यमे किरण मैथिल जन समूह के जगेबाक ओरिआओन कार्य प्रारम्भ क' देलनि जकर अपन गौरवपूर्ण इतिहास अछि, जाहि मे हिनका ओहि इलाकाक विद्वान ओ साहित्यकारक सहयोग सङ अपन कार्यक्षेत्रक सहयोगी मित्र ओ नवतूरक अपूर्व सहयोग भेटलनि। उक्त संस्था द्वारा मैथिल जन समूह केँ जगेबाक हेतु आन्दोलन शुरू भेल। एहि आन्दोलनक मुख्य उद्देश्य छल जन चेतना केँ मैथिली सँ जोड़ब। मैथिलीक सम्बन्ध मे जे भ्रम छल जे ई मात्र ब्राह्मण ओ कर्ण कायस्थक भाषा अछि ओकर निवारण क' ई स्पष्ट करब जे ई मिथिलामे बसनिहार सभ जातिक भाषा थिक। एहि भाषाक उन्नति सँ ओकरा बेसी लाभ होयतैक जे जतेक सामाजिक रूपेँ पछुआयल अछि। विद्यापति गोँष्ठीक दृष्टि छल जे एहि लेल गाम-गाम ओ व्यक्ति-व्यक्ति सँ सम्पर्क कयल जाय। मिथिला विकासक बात केँ आन्दोलन सँ जोड़ल जाय। मैथिली विकासक डेग ओकर भूमि सँ उठाओल जाय।' एहि लेल विद्यापति गोष्ठी कतेको वर्ष



तक गाम-गाम घुमि कार्य कयलक। एहि संस्थाक बाद मे भेल अध्यक्ष प्रो० सुशील झा एक साक्षात्कार मे (जे भाषा पत्रिका, नवम्बर 1988 क अंक मे प्रकाशित 'आजुक संदर्भ आ विद्यापति-गोष्ठी' नामक हमर निबन्ध मे संयुक्त अछि) कहने छथि-''किरणजीक निर्देश रहनि जे कार्यक्रमक प्रारम्भ विद्यापतिक प्रसिद्ध गोसाओनिक गीत 'जय जय भैरवि' सँ कयल जाय। संगहि रहै जे गीतक सम्मान मे सभ उठि क' ठाढ़ भ' जाइ। प्रत्येक व्यक्ति गायनक संग देथि चाहे हुनका गाब' अबनि वा नहि। किरणजी 'जय जय भैरवि' केँ मिथिला मैथिलीक ऊर्जा जगेबाक हेतु उद्बोधनक गान मानैत छलाह। ओ जय जय भैरविक माध्यमे मैथिलीक दुष्ट (असुर) दृष्टि के समाप्त क' मातृ दृष्टिक भाव सभतरि पसार' चाहैत छलाह। गोष्ठी कार्य क्षेत्र छल 'विसफी, महता सँ मधेपुर-ठाढ़ी, रामपट्टी सँ आशी सुपौल-हावी भौआर'क बीच विभिन्न गाम। एकरा मिथिला क्षेत्रक हिसाबे सीमित कहल जा सकैए किन्तु व्यापक प्रभाव ओ जागरणक दृष्टिएँ महत्वपूर्ण अछि। एहि संस्थाक सदस्य जखन गाम-गाम घुमथि त' लाथ रहनि अपन भाषाक कविता सुनायब, उद्देश्य रहनि भाषाक प्रति जागरूक बनायब। हिनक सङ जे समूह चलै छल ओकरा लोक 'किरण सेना' कहैत छल। ई गाम-गाममे भाषा प्रति अनुराग जगेबाक कार्य कयलनि आइ सोचल जाय जे कतेक महत्वपूर्ण छल। लोक मैथिलीक काज करब संकोच बुझै छल जकरा बहुत अंश तक ई उक्त संस्था बलेँ तोड़लनि, रचनात्मक भाव जगौलनि। उक्त संस्था को-ऑपरेटिव सोसाइटी जकाँ अपन प्रकाशन समिति बनौलक जकर नाम रहैक 'मैथिली प्रकाशन समिति। एहि समिति द्वारा संचयिता (कथा-संग्रह), प्रतिबिम्ब (अनुवाद, कथा-संग्रह) ओ मणिपद्मक 'कंठहार' नाटक आ बाद मे जीजीविषा (कविता-संग्रह) प्रकाशित भेल। उक्त गोष्ठीक प्रेरणा सँ मिथिला नाट्य कला परिषद्'क स्थापना भेल जाहि संस्था द्वारा नाट्य क्षेत्र मे उल्लेखनीय कार्य भेल।

किरणजी जाहि तरहेँ मैथिलीक प्रति मैथिल जन समूहक संकोच के तोड़ि चेतनाक प्रेरणा देलनि तहिना समाजमे जमल अन्धविश्वास ओ जड़ता के तोड़बाक सेहो अद्भुत कार्य कयल। आइ सँ पहिने जातीय-विभेद आ अर्थक विसंगति समाज केँ आरो ग्रसित कयने छल। जाति कारणे, धनक कारणे होइत आदर केँ-अनादर केँ किरणजी नकारलनि। ओ अपन

व्यवहारिक जीवन मे लोक केँ गुणक आधार पर आदर देब प्रारम्भ कयलनि। समाज मे श्रमिक वर्गक लोक दलित वर्ग सँ अबैत रहलाहे। किरणजीक समय ओ काल छल जहिया श्रमिक वर्गक लोक मात्र श्रम कर' जनै छल। ओ वर्ग अपन मालिक लोकनि सँ अपमानित जीवन जीबैत आत्महीन भाव सँ ग्रसित भ' गेल छल। से तेना जे ओहि वर्गक लोकक सन्तानक एहन नाम होइत छल, जाहि सँ लोक सहजहि बुझि जाइत छल जे ई ओही वर्गक (दलित वर्गक लोक जे छोट जातिक लोक कहबैत छल) लोक थिक जेना-नेपला, दुखीबा, भुटबा, घोघना, सुखनी, सुकनी, फेकनी, मुङिया आदि। किरणजी अद्‌भुत रूप सँ एहि बात पर ध्यान देलनि। ओ समाजक ओहि वर्गक लोकमे बहुतो गोटय के स्वयं छठिहारक अवसर पर जाक' नाम राखथि। जे ओहि काल मे तथाकथित ऊँच जातिक नाम होइ छल। एहि लेल गाममे टोल-टोल जा लोकके उत्साहित करैत छलथिन आ ओकरा अपना बेटा-बेटीक नीक नाम रखबाक हेतु प्रेरित करैत छलथिन ओ कहैत छलथिन जे जेना नीक बोल सँ ककरो मन पुष्ट होइत छैक, तहिना नीक नाम सँ मन उत्साहित होइत छैक। मनुष्य जन्मना ने छोट होइत अछि ने पैघ। मनुष्य अपन गुण सँ महत्वपूर्ण होइत अछि जाति सँ नहि। एहि लेल किरण सामाजिक धरातल पर उतरि कार्य कयलनि। हुनक एहि कार्य पर विचार करैत हुनक कविताक किछु पाँतीक स्मरण होयब स्वभाविक अछि-

**'एके रंगक सोनित-मासु पर रंग-विरंगक खोल।**
**खोलक रंगक लेल दुनियामे मचय अनघोल॥**
**जाति की? कुल की? गुनक करु मान।**
**सितुआक पूत मोती हो रतन समान।**
**मोती माय सितुआ कमलक माय थाल।**
**व्यासक माय गोढ़नी गुनक इहे हाल॥**

-एहि सम्बन्धमे हुनक टिप्पणी संसारक ओइ देशक लोक पर सेहो अछि जे श्वेत ओ अश्वेतक बात करैत अपनां के श्रेष्ठ बुझैत अछि। अपन महत्वपूर्ण काव्य 'पराशर' मे किरणजी कहैत छथि जे समाज मे दुए वर्णक लोक अछि-कारी ओ गोर। कारी मे ओ लोकनि छथि जे शारीरिक श्रम क'क' जीविकोपार्जन करैत रहलाहे आ गोर वर्णक लोक शिक्षा ओ शासन



सँ जुड़ल रहलाह। किरणजी अपन उक्त महत्वपूर्ण काव्यक कथा सँ जे कहलनि अछि ओहि सँ स्पष्ट होइत अछि जे ओ कारी ओ गोर वर्णक मिलनसँ उन्नत समाजक निर्माण चाहैत छलाह। अपन समाज लेल किरणजीक यैह साहित्यिक दृष्टि छल, ओ एहि संग समाजसँ जुड़ल छलाह।

धार्मिक ओ सामाजिक अन्धविश्वास केँ तोड़बाक लेल ओ कतेको कार्य कयलनि 22.1.1948 ई० के अपन औषधालय बन्द क लक्ष्मीश्वर एकेडमी सरिसबमे शिक्षक भेलाह। जत' ओ 1964 ई०क किछु मास तक रहलाह। शिक्षक रूपमे किरणजी विद्यार्थीक बीच जातीय विभेद ओ अर्थ विभेद पर चर्चा करैत ओकरा निरर्थक सिद्ध कयलनि। अछोप कहबैत विद्यार्थी के जखन लोक हुनका ओइ ठाम पढ़ैत देखय त' विद्यार्थीक बाल मन कहय - मास्टर साहब ठीके कहि रहलाहे। शुभ-अशुभक धारणा के लोक जखन खण्डित होइत हुनका लग देखय त' किरणजीक वाक्य ओ कार्य पर ककरो संदेह नहि रहि जाइ।

किरणजी कारी ओ गोर लोकक हेतु शोषक ओ शोषित दुइ जाति लोकक संज्ञा दैत आ, ओकर मानसिकताक बात सेहो करैत छथि। ओ एहि सँ वर्गहीन समाजक निर्माण चाहैत छथि। हिनक 1941 ई० मे प्रकाशित कथा 'धर्मरत्नाकर' केँ स्मरण कयल जाय। उक्त कथा मे वीरमणि सिंह जाहि तरहक लोकक बलें रामकिसना सन लोक पर अत्याचार करैत छथि, ओहि मे खास क' के वराहिल निश्चित रूपेँ रामकिसने जाति कोटिक लोक थिक। ओकरा राम किसना पीटैत अपन जाति नहि मन पड़ैत छैक, तहिना वीरमणि सिंह के अपन जाति वर्गक लोक रामकृष्ण झाक हत्या करेबामे कोनो अटक नहि होइत छनि। कारण जे वराहिल सामन्त मानसिकताक लोक संग रहैत शोषक मानसिकता केँ भ' गेल अछि। रामकृष्ण झा सामाजिक चेतनाक स्तर पर शोषितक पक्षधर छथि। स्वतंत्रता सँ पूर्व उक्त कथा मे किरणजी जाति-पाति सँ ऊपर वर्ग संघर्षक दृष्टि दैत सामाजिक ओ आर्थिक संघर्षक कथा कहैत छथि ओ आइ कतेक प्रासंगिक ओ महत्वपूर्ण अछि, तकरा सहजहि बूझल जा सकैत अछि।

डा० काञ्चीनाथ झा 'किरण' अपन टोलमे नत्थू भाइ वा नत्थू बाबू आ सम्पूर्ण गाम ओ परिसर मे मास्टर साहेब आ किरणजी नाम सँ प्रसिद्ध छलाह। साधारणत: विद्वान लोक जीवन सँ कटल तथाकथित अलौकिक

बुझल जाइत रहलाहे, जखन कि विद्वान लोकक रचना सँ लोक जीवनक बात बुझल जाइत रहल। किरणजी विद्वान होइतो लोक जीवनक बीच छलाह। जेना श्रमिक वर्गक लोक केँ घर छाड़ैत, जौड़ बँटैत, घास कटैत, कोदारि चलबैत देखतहुँ तहिना किरणजी कखनो ओ सभ कार्य करैत देखाइ दैतथि। एकदम सहज सामान्य लोक जकाँ सामान्य लोकक बीच बैसल किछु करैत। ई अद्‌भुत आ सहज बात विरल रूप सँ विद्वान जनक भेटत, जे किरणजी मे छलनि।

कोनो काज छोट नहि थिक। एहि लेल किरणजी उदाहरण छलाह, प्रेरणा छलाह। अन्धविश्वास के तोड़ि प्रगतिकबाट पर चलनिहारक लेल बाट देखौनिहार छलाह से हमहीं नहि कहै छी। भारतक महान जनकवि यात्री सेहो कहने छथि ओ अपनो लेल कहने छथि। एहि बात केँ हम भारती मंडन पत्रिकाक अंक-6 मे 'बाबा यात्री गाममे' शीर्षक निबन्ध मे उद्धृत कयने छी। तारानन्द वियोगी सेहो ओहि घटना दिन सम्मेलन मे छलाह। आरो कतेको मैथिलीक रचनाकार छलाह। वियोगी सेहो अपन आलोचनाक पुस्तक 'कर्मधारय' मे संगृहीत 'किरणजीक महत्व' शीर्षक आलेखमे उक्त बात के उद्धृत कयने छथि। 1987 मे कम्यूनिस्ट नेता विजयकान्त ठाकुर 'चिनगी-मंच' सँ लहेरियासराय मे जनवादी लेखक सम्मेलन कयने छलाह। हमहू ठाकुरजी संग सक्रिय रही। सक्रिय रहथि सोमदेव, रमानन्द रेणु आदि। तारानन्द वियोगी, सारंग कुमार लोकनि सेहो रहथि। ओहि कार्यक्रम मे मैथिली-हिन्दीक लेखक लोकनि भाग ल' रहल छलाह। कार्यक्रम दिन हिन्दी कवि आलोकधन्वा, रमेश कुन्तल मेघ, हरीश भशानी, सरला माहेश्वरी, कथाकार गोविन्द मिश्र संग आरो कतेको लोक रहथि।

से ओहि दिन जनवादी लेखक सम्मेलनमे एक कोन मे ठाढ़ हम भाइ वियोगी संग बाबाक अयबाक प्रतीक्षा करैत रही। देखलियनि-आबि रहल छलाह। शोभाकान्तजी सङ छलथिन। लोक सँ गप्प करैत, कुशल-क्षेम पुछैत-हँसैत, गम्भीर होइत, चारुकात तकैत आबि रहल छलाह। दुब्बर-पातर शरीर, उज्जर दाढ़ी-केश, मोचरल कुर्ता-पैजामा पहिरने आबि रहलाहे। मंच पर गेलाह। मंच पर पहिने सँ किरणजी बैसल छलाह। ओ कहलथिन-'के वैद्यनाथ?' हुलसि क' बाबा किरणजी लग गेलाह। बाबा आब किरणजी सँ



सटि गप्प-शप्प मे मग्न भ' गेलाह। जखन बाबाक भाषणक बेर भेलनि त' ओ किछु पाँती मैथिलीमे कहि, हिन्दी मे कह' लागल छलाह-यहाँ मैथिली के प्रसिद्ध कवि डा० काञ्चीनाथ झा 'किरण' बैठे हैं, जो कई मायने मे मेरे अभिभावक रह चुके हैं। मुहावरा में कह रहा हूँ जब मैं 'भुतिया गया था तो इन्होंने ही मुझे झुटका से कान पकड़ कर सही रास्ते पर लाया था।' बाबाक ओ शब्द सँ वस्तुतः रोमांच भ' गेल रहय। हम बहुत किछु सोचैत ओइ दुनू महान विभूति के एक सङ देखैत-सुनैत रहि गेल रही।

किरणजी मौलिक चिन्तक छलाह। कोनो बात के तखनहि स्वीकार करब जखन सही बुझायत। परम्परा सँ कोनो बात आबि रहल'ए तेँ स्वीकारि लेब हुनक स्वभावक विरुद्ध छलनि। ओ कबीर जकाँ आँखिन देखी' रचना करैत छलाह, आ जाहि दृष्टिक रचना करैत छलाह, ओही दृष्टि सङ जीवैत छलाह। डा० भीमनाथ झा अपन निबन्ध 'मैथिली संघर्ष महाकाव्यक नायक : किरणजी' मे कहैत छथि-''साहित्यक सर्वाङ्गीण विकासक प्रयास हो कि राजनीतिक माध्यमे क्षेत्रक आयास, मैथिली के विश्वविद्यालय मे प्रवेशाधिकारक लड़ाइ हो कि भाषा आन्दोलनक युद्ध मे प्रतिपक्षी पर चढ़ाइ, जन-जन मे स्वभाषा-प्रेम जगयबाक अभियान हो कि गाम-गाम मे साहित्यिक-सांस्कृतिक चेतनाक शंखनाद करबाक संधान, मिथिला-मैथिली द्रोही केँ ताकि-ताकि क' माटि चटौनाइ हो कि माटि मे लेढ़ायल रत्न केँ, अपने झाड़ि-पोछि क' समाजक सोझाँ रखनाइ। किरणजी सभकाज स्वयं कयलनि, ककरो अढ़ौलनि नहि कहियो।''1

किरणजी अपन उद्देश्य सङ जीवन भरि संघर्ष करैत रहलाह, कतौ अटकलाह नहि। हुनक कर्मठता प्रमाण थिक जे ओ पचपन वर्षक अवस्था मे बी.ए. (1961 ई.) आ 1964 ई. मे एम.ए. कयलनि। 1967 ई. मे लक्ष्मीश्वर एकेडमी सँ चन्द्रधारी मिथिला कॉलेज दरभंगा मे व्याख्याता भेलाह। 1972 मे चन्द्रधारी मिथिला कॉलेज सँ अवकाश ग्रहण कयलाक बाद दू वर्ष धरि विश्वविद्यालय अनुदान आयोगक प्रोफेसर एमेरिटस रूपमे कार्य कयलनि। किरणजीक ई जीवन-संघर्ष आ साफल्य ककरा ने मोहित, चकित आ प्रेरित करैत रहत।

किरणजी आन्दोलनात्मक ओ सर्जनात्मक दुनू क्षेत्र मे कार्य कयलनि आ दूनू क्षेत्र मे हुनक से महत्व अछि जे सदा प्रेरित करैत रहत। हिनक विभिन्न विधा मे रचना अछि आ से कोनो विधा मे झुस नहि अछि। ई

मैथिली कथा केँ सर्वप्रथम जन-सामान्य सँ जोड़लनि। कविता मे आत्मविश्वासक बाट अगुऔलनि। नाटकमे ऐतिहासिक सत्य के उद्घाटित कयलनि। आलोचनाकेँ मौलिक दृष्टिसँ समर्थ बनौलनि अर्थात् जाहि विधा मे लिखलनि ओ विधा हिनका सँ नव दृष्टि पौलक।

हिनक रचनाक सम्बन्ध मे किछु विद्वान कहैत छथि ई प्रतिक्रिया मे लिखलनि। हमरा जनैत क्रिया-प्रतिक्रिया त' रचना प्रक्रियाक सहज क्रिया थिकैक, तखन हुनक की कहब छनि?

किरणजीक रचना परम्परा पर चोट करैत, एकदम नव ढंग सँ चलैत मर्म के छुबैत, आँखि खोलि देब' वला होइत छल। एहन रचना जे संरचना बदलैवला होइत छल। कारण, किरणजी अपना रचना सँ सामाजिक सुधार नहि परिवर्त्तन चाहैत छलाह। एहन रचना परम्परा सँ मोहित व्यक्ति हेतु झट ग्राह्य तहियो ने छलैक आ आइयो ने छैक।

किरणजी ओहेन साहित्य नहि चाहैत छलाह जे कल्पना पर आधारित हो। ओ एहन साहित्य चाहैत छलाह जाहिमे लोक अपना के देखय, जाहि मे ओकरा अपन समाजमे जीवनक बाट भेटै। एहि बातक लेल ओ समाजक अनुरूप साहित्य रचलनि। हुनक कहब रहनि जे समाज गरीब अछि, श्रमिक अछि त'-ओकर जीवनकेँ कहब आवश्यक अछि, अनावश्यक रूप सँ राजसी रूप-यौवनक वर्णन सँ की लाभ? ओ लिखैत छथि–

**''नैना मे लहुक लेश ने छै, उपमान हेतैक सरोज कोना**
**जागल छै छातीक हाड़-हाड़ चकबा बनतैक उरोज कोना।**

असलमे किरणजीक कविता हो वा अन्य विधाक रचना ओहिमे ओहि लोकक स्वर उठब' चाहैत छलाह वा उठबैत छलाह जे समाजमे पछुआयल छल, शिक्षा नहि छलै, रोजगार नहि, जीवन निर्वाह कठिन छलैक। एहन लोकके उठेनिहार रचनाकारक रचनामे पारम्परिक आलंकारिक योजना कोना भेटतैक? किरणजीक कविता मे काव्य सौन्दर्य हुनक दृष्टि मे, कथ्य संवेदनामे छलनि। एहन सौन्दर्य जे मनुष्य लेल उपयोगी नहि से हुनका मान्य नहि छलनि। मुदा एहि सभ सँ विपरीत किरणजीक रचनामे आलोचक लोकनि द्वारा 'पाण्डित्यक-प्रकर्ष' ताकल गेल जकर प्रदर्शन सँ ई बहुत



फूट छलाह। एहि संदर्भमे आलोचक ओ श्रेष्ठ कवि कुलानन्द मिश्र कहैत छथि–'ओ अपन अधिकांश रचना पण्डितक मनःस्थिति ओ सोच मे रमिक' पण्डितक अन्दाजोमे लिखब स्वीकार नहि कयलनि। ओ अपन कथ्य प्रकृति सँ परिचित रहथि आ अपन श्रोता-पाठकोक सम्बन्ध मे 'किरण'क मोन मे कोनो भ्रम नहि रहनि।''

किरणजी मैथिली कविताक लेल आधुनिक युगक आरम्भ कवि फतूर लाल सँ मानैत छथि। ओ कहैत छथि–फतूर लाल 1281 सालक वर्णन द्वारा ऐतिहासिक काव्य रचना कय जे बाट देखौलनि तकरा यदि पंडित अपनवितथि तँ निर्विवाद रूपेँ मैथिलीभाषा साहित्यक आइ, दोसर रूप रहैत, कारण तखन जनजीवनक संग सम्बन्ध साहित्यकार के बनल रहैत।'' कहबाक तात्पर्य किरणजी येह जन-जीवनक सङ रह' चाहैत छलाह। ओ अपन अनुसंधान मे 'फकड़ा' मे काव्यक मर्म तकलनि फक्कड़ कविक रचना तेँ फकड़ा कहौलक। ओकरा पारम्परिक कवि द्वारा काव्यक मर्यादा नहि देल गेल जखन कि जीवन-दर्शनक अद्भुत दृष्टि दैत ओ 'फकड़ा' कहबैत कविता लोक जीवनक लेल मूल्यवान अछि। एहन जीवन-दर्शनक कवि के उपेक्षा करब परम्परा-मोहित लोक लेल सामान्य बात छलैक। किन्तु किरणजी अपन उपेक्षा सँ अधीर नहि भेलाह, ओ कहैत छथि–

**'हमर नाम केँ दाबि सकत के?**
**कादो सँ रवि झाँपि सकत के?**
**....मानि लोभ केँ वाटक बन्धन**
**वीर करय नहि लाभक चिंतन**
**लाभ लोभमे लागल लोभी**
**देशक गौरव बढ़ा सकत के?**
**हमर नाम केँ दाबि सकत के?**

किरणजी पहिने आर्थिक दृष्टि सँ विपन्न रहथि, किन्तु अपने ओ तेना सम्हरि गेल छलाह मे नीक गृहस्थ कहबैत छलाह। पुरना डीह पर सँ आबि नवका डीह पर आबि घरो बनौलनि। किन्तु अपन पोथी छपेवा मे उदासीन रहलाह। जाबत जीलाह साहित्य सँ कोनो आर्थिक लाभ नहि उठौलनि। कहिओ साहित्यकार रूपे कोनो तेहन पुरस्कार नहि पओलनि।

9.4.1989 के किरणजीक देहावसान भए गेल। ओकर बाद 1989 मे हुनका 'कथा-किरण' पर वैदेही पुरस्कार आ 'पराशर' पर साहित्य अकादेमी पुरस्कार भेटलनि। किरणजीक महत्व तहियो छलनि जहिया आलोचक लोकनि हुनकामे पाण्डित्यक-प्रकर्ष तकैत छलाह। किन्तु से महत्व रहनि लोकमानस मैथिली भाषाक विकास मे ओ विभिन्न विधाक विकास धारा मे। 1941 मे प्रकाशित 'धर्मरत्नाकर' मैथिली कथा धारा के प्रभावित नहि कयलक, से आइ के कहत? 'मधुरमनि' सन कथा, कथा-शिल्प के आगू नहि बढ़ौलक, से के कहत? किन्तु ई सत्य जे साहित्य जतेक जन जीवनसँ जुड़ैत आगू ततेक किरणजीक महत्व स्पष्ट भेल जायत।

एहिठाम हम अपन वक्तव्य के समाप्त करैत किछु आर कह' चाहब जे किरणजी सन संघर्ष कयनिहार व्यक्तिमे उपेक्षा सँ कठोर परक व्यक्तित्व भ' जाइत छैक किन्तु किरण जी मे से नहि छलनि। नहि त' ओ 'कोन महल नाम रखबैक एकर?' वा मधुरमनि सन अनुराग भरल कथा नहि लिखतथि। आलोचक मोहन भारद्वाजक एहि बात सँ हम सहमत छी जे 'जीवनक स्पृहणीय रूपमे संघर्षशीलते नहि अछि, माधुर्यो अछि। जीवनक सम्वेदनाक अर्थ उत्साहे नहि, प्रेम सेहो थिक। तेँ किरणजी 'धर्म-रत्नाकर'क संग 'मधुरमनि' सन कथा लिखैत छथि। प्रलय-रागक संग प्रणय-राग आ रणभेरी संग बाँसुरी के सेहो अपन स्वर प्रदान करैत छथि।'' हम मोहन भारद्वाजजीक बात मे अपन बात जोड़ि समाप्त करब जे जन-जीवनक विकास मे जे बाधक तत्व अछि ओहि पर प्रहार कयनिहार जे जेहन छथि ओ बूझू मानव जीवन सँ प्रेम करैत छथि। हमरा जनैत किरणजी सैह छलाह आ सैह हुनक महत्व थिक।

■



# अपन सरिस एक 'किरण'जी

सुकान्त सोम

'1930 ई. ओ समय छलैक जखन हम मैथिलीक क्षेत्र मे आबि गेलहुँ।

स्वराज आन्दोलन चलि रहल छल। हम ओहि मे प्रवेश क' गेलहुँ त' हमर जेठ भाइ लोकनि हमरा काशी पठा देलनि। ओत' दुनू काज चलइत छलैक। हड़तालो होइक, जुलूसो बहराइक आ अपन-अपन भाषा-साहित्यक काज सेहो होइक। मराठी, मलयालम आदि भाषा साहित्य पषिदक वार्षिक सम्मेलन मे बड़ उल्लास सँ लोक भाग लीअय। हम पता केलियैक त' बुझायल जे मैथिलक ने कोनो संस्था अछि एहिठाम आ ने मैथिली स्वीकृत अछि। हमरा हृदय पर एकटा चोट लागल। ओएह अपमान बोध हमरा मैथिलीक क्षेत्र मे प्रवेश करा देलक।' ई गद्यांश 'किरण'जीक आत्मकथ्यक हिस्सा थिक। एहि सँ एतबा तँ स्पष्ट अछि जे 'किरण'जी भाषा-संग्रामी अथवा मैथिली सेवी होएबा सँ पहिने सार्वजनिक रचनात्मक स्वयंसेवकक भूमिका मे आबि गेल रहथि आ जगत-जीवनक द्वंद्व बूझ' लागल रहथि। एहि आत्मकथा मे हुनक कवि बनबाक प्रसंग सेहो कहल गेल अछि : 'काशी सँ घुरि क' गाम अएलहुँ। मैथिली साहित्य परिषदक मंत्री भेलहुँ। एहिक्रममे कवि सम्मेलनक आयोजन कयल। मधुपजी आ सुमनजी हमरा संगे रहथि। दुनूगोटा संगी थिकाह... मधुपजी आ सुमनजी कवि सम्मेलन मे कविता पढ़थि। मधुप, सुमन,

किरण–हमहूँ देखाउस मे उपनाम राखि लेलहुँ। ओ दुनू गोटा कविता पढ़थिन तँ हमरा (लोक) कहय पढ़ लै, अगत्या हम की करब तँ किछु कविता लिखी। हमरा कवि बनऽ पड़ल हुनके लोकनिक सम्पर्के। यदि मधुपजी–सुमनजी संगी नहि रहितथि आ प्राय: ओ विवशता हमरा संग नहि रहैत जे 'मैथिल सुधाकर' ओ 'मिथिला मोद'क प्रकाशन करैत काल मे छल, तँ हम कवि नहि होइतहुँ–हमरा सैह विश्वास अछि। सुनैत छी जे कवि जन्म लइत छथि, बनइत नहि छथि। हम त' जन्म लेलहुँ एहन व्यक्ति भ' क' जाहि व्यक्तिक टीपनि मे कोनो विद्या नहि छइक। तरहत्थीक केशवत् हमर टीपनि मे विद्या लिखल अछि। गरीब घरक संतान, ताहि संग भलमानुस घरक, जे व्यक्ति बोनि नहि क' सकैए, बड़ अनुकम्पा भ' गेलनि तँ राज दरभंगा मे भनसिया–तनसियाक काज भेटि गेलै। एहि स्थितिमे कवि बनब हमरा हेतुएँ कल्पनाक बाहरक वस्तु छल। तइयो हम कविता लिखलहुँ।'

प्राय: कविता करैत, गीत लिखैत लोक भाषा संग्रामी होइए। मैथिलीमे किछु अपवाद छोड़ि दी त' यैह सत्य छइक। मुदा 'किरण'जी पहिने सार्वजनिक रचनात्मक कार्यकर्त्ता बनलाह। एहि अपराधक दंडमे काशी पठाओल गेलाह। काशी मे मैथिली सेवी किंवा भाषा संग्रामी बनि गेलाह। मैथिली केँ बीएचयू मे मान्यता दिअयबाक बाद स्तरीय साहित्यक चिन्ता भेलनि त' पत्रिका प्रकाशित करबाक ओरियौन करैत ओ साहित्यकार बनि गेलाह। फेर गाम अएलाह त' मैथिली केँ मिथिलाक मालिकान सभ सँ–शासक समूह आ प्रभु वर्गक गछार सँ बहार करइत ओकरा खेत–खरिहान मे ल' अनलनि। गत शताब्दीक पचास–साठिक दशकमे तत्कालीन दरभंगा जिलामे जनश्रुति रहैक जे कैरियर पर सतरंजी लदने जँ कियो अधवयसू साइकिल सवार देखाय पड़थि त' बुझि जाउ 'किरण'जी छथि आ कतहु विद्यापति पर्व मनाब' जा रहल छथि। अपन एहि अभियानक प्रतापें ओ जीवित लीजेंड जकाँ बनि गेलाह।

एकटा कठोर नैष्ठिक आ किछु हद धरि रूढ़िवादी उच्चकुलीन, विपन्न आ अर्द्ध शिक्षित परिवारमे जन्म भेल रहनि 'किरणजी'क आ आडम्बरपूर्ण सामाजिक कर्मकांडी परिवेश मे पालन–पोषण भेलनि। आ,



एहन परिवेश मे रहियो क' आजन्म रैडिकल प्रतिपक्षीक हुनकर ई रूपान्तरण उत्कट सामाजिक यथार्थ बोध आ दुर्लभ इच्छा–शक्तिक परिणाम थिक। कांचीनाथ झा 'किरण'क जन्म एक दिसम्बर 1906 मे भेल रहनि। गोर चौबीस वर्षक वयस धरि–एहि बीच गोर तीन साल के छोड़ि–ओ दरभंगा–मधुबनी परिसरक सीमा नहि टपलनि; मिथिले मे रहलाह। एहि अवधि मे तीन वर्ष दिनाजपुर (आब बांग्लादेश) मे रहलाह। ई प्रवास हुनका मैट्रिक पास करौलकनि। परिवारक आर्थिक स्थितिक अनुमान एही सँ लगाओल जा सकइए जे मधुबनीक वाटसन स्कूल मे अपन शिक्षा हुनका अपूर्ण छोड़' पड़लनि आ मैट्रिक धरि शिक्षा पूरा करबा लेल दिनाजपुर जाय पड़लनि। अपन एकटा संबंधी ओत' गोर तीन वर्ष रहि क' शिक्षा ग्रहण कएलनि आ 1928 मे मैट्रिकक परीक्षा बाइसम वर्ष मे उत्तीर्ण भेलाह। ओना एहि सँ पहिने 1922 मे संस्कृतक प्रथमा परीक्षा पास कएने रहथि। 'किरण'जी आर्थिक विपन्नता सँ एक बेर फेर 1929 मे आहत भेलाह। ओहि साल दरभंगा मेडिकल कॉलेज मे नामांकन लेल हुनक चयन भ' गेल रहनि। मुदा अर्थाभाव मे नाम नहि लिखा सकलनि। 1930 मे 'किरण'जीक जीवन मे कतोक नव आ प्रमुख तत्त्व जुटल। प्रथम, ओहिसाल मध्यमा कएलनि। दोसर, विवाह भेलनि, आ तेसर, चिकित्सक बनबाक ईच्छा केँ पूरा करबा लेल ससुरक सत्प्रयासें आयुर्वेद पढ़बा लेल काशी गेलाह आ ओत' आयुर्वेदिक कालेज मे नामो लिखौलनि। एहिबेर जे 'किरण'जी मिथिला सँ बाहर भेल रहथि त' फेर स्थायी भावें हुनक घर घुरब आजाद भारत मे भेल रहनि। सन् 1948 ई. मे ओ सरिसब स्थित लक्ष्मीश्वर एकेडमी के शिक्षक नियुक्त भेलाह। एहि बीच ओ गोर तीन वर्ष कोलकाता मे रहलाह। बीएचयू आयुर्वेदिक कॉलेज सँ अपन स्थानान्तरण 1933 ई. मे कलकत्ता करा लेलनि और एलएएमएस डिग्री ओतहि सँ प्राप्त कएलनि। फैर जीविका लेल दोसर खेप बनारस गेलाह सन् 1936 ई. मे चिकित्सक भ'क' एहि बात केँ ध्यान मे राखब जरुरी जे 'किरण'जी गोर बीस–एकइस वर्ष मिथिला सँ बाहर रहलाह आ से काशी आ बंगाल मे। बंगाल मे गोर छह वर्ष रहलाह, शेष पूरा प्रवास–जीवन काशिए बितलनि। तत्कालीन मिथिला आ देश परदेसक स्थिति पर दृष्टिपात

करब 'किरण'जीक मानसिक संरचनाक गढ़निक पात सभ खोलबा मे सहायक हैत।

'किरण'जीक बाल-किशोर मानस जखन बोध ग्रहण क' रहल रहए देश-दुनियेटा मे नहि, मिथिलामे परिवर्त्तनक बसात तेज भ' गेल रहैक। अन्तरराष्ट्रीय क्षितिज पर प्रथम विश्वयुद्ध राजनीतिक आ सामरिक स्तर पर दुनिया के अलग-अलग गोलबंद क' चुकल रहै, सफल रुसी क्रान्तिक बाद समाजवादी व्यवस्था आकार ग्रहण क' रहल रहै। तानाशाही अपन पारंपरिक स्वरूप मे अंतिम चरण दिस रहै त' जनतांत्रिक व्यवस्था नवोदित राष्ट्र सभक आकर्षण बनि रहल रहै। बंगाल बँटिक' पूर्व बंगाल आ पश्चिम बंगाल भ' गेल रहय आ एहि विभाजन सँ उत्पन्न राजनीतिक आलोड़न थमि गेल रहै। मुदा मुक्ति आंदोलन मे जनभागिता निरन्तर व्यापक आ विस्तृत भेल जा रहल रहै, मध्यवर्ग जुड़' लागल रहै आ एकर आक्रामकता बेसी तेजी सँ बढ़ल जाइत रहैक। बंगाल मे गरम दल पूर्ण उभार पर रहै। मुक्ति आंदोलन मे बारुद आ आग्नेयास्त्रक पहिल प्रयोग खुदीराम बोस आ हुनक मित्र प्रफुल्ल चाकी बिहारेक धरती पर क' चुकल रहथि। बिहारक अलग प्रान्त बनि गेल रहै। भारतीय नायक मोहन दास करमचंद गांधी दक्षिण अफ्रिका मे सत्याग्रहक सफल प्रयोग कय अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर यश अर्जित कयलाक बाद भरत मे बिहारेक चम्पारण मे अपन एहि राजनीतिक हथियारक पहिल प्रयोग कएलनि आ सफल भेलाह। देशक आन भागक कोन कथा, बिहार आ मिथिला सेहो एकरा संग-संग दोसर तरहक छोट-छोट जन उभारक साक्षी बनैत रहय। एही अबधि मे दरभंगा राजक विरोध मे भूमिहीन आ सीमान्त खेतिहरक आंदोलन आरंभ भेल रहैक। शोषण आ वंचनाक पराकाष्ठा सँ पीड़ित भूमिहीन खेतिहर मजूरक बीच सारण-चम्पारण सँ आयल संन्यासी स्वामी विद्यानंद प्रवचन करथि, नीति आ नैतिकता ज्ञान-दान करथि। से करइत ओ एक वर्ग कें गोलबंद कर' लगलाह। परड़ीक एकटा घटना हुनक अभियान के स्पूतनिकक गति द' देलक। एहि मे भूमिहीन खेत मजूर आ सीमान्त किसान विद्रोह क' देलक आ ओकरा सभक जबर्दस्त दमन कएल गेलैक। कतोक दिन धरि सभक चलब-फिरब आ गाम सँ बहरायब बंद क' देल गेल रहैक।



एतेक धरि जे लगानक विरोध केनिहारि एकटा स्त्रीगण कें जे दंड देल गेल से मानवताक सभटा मर्यादा कें तोड़ि क'। ओकरा नांगट क'क' ओकर जाँघ कें ससुरक जाँघ संगे बान्हि देवाक आदेश देल गेल रहै। राजक अमला तंत्रक एहि आ एहने क्रूर आदिम मानसिकताक विरोध कें नेतृत्व देलनि स्वामी विद्यानन्द। एहि आंदोलनक गूँज तत्कालीन दरभंगा जिलाक प्रायः सभ हिस्सा मे घनगर रूप सँ सुनल गेल रहैक। ओना, स्वामी विद्यानंदक एहि आंदोलनक मुख्य क्षेत्र मधुबनिये छलनि। एहि आंदोलनक एकटा महत्वपूर्ण उपलब्धि ई रहलै जे मिथिलांचल मे जमींदारी उन्मूलनक माँग एही काल सँ आरंभ भेल। स्वामीजी अपन अभियान कें बेसी व्यापक आ ताकतवर बनेबाक उद्देश्य सँ काँग्रेसक मंचक उपयोग सेहो करैत छलाह। एही काल मे बिहारक आन भाग जकाँ मिथिलांचल मे सेहो पिछड़ा वर्णक जातीय संगठन सभ आकार लेब' लागल रहै। तत्कालीन भागलपुर जिलाक सुपौल-मधेपुरा, मुंगेर जिलाक बेगूसराय-खगड़िया, मुजफ्फरपुर जिलाक सीतामढ़ी आ महनार आ दरभंगा जिलाक रोसड़ा-दलसिंहसराय क्षेत्र मे पिछड़ा वर्णक जातीय संगठन सभक कतोक ने आयोजन भेल रहै।

समय आ समाज करौट फेरबाक उपक्रम मे रहै। तकर अभिव्यक्ति आर्थिक आ शैक्षणिक क्षेत्र मे सेहो भ' रहल रहैक। आर्थिक संकट बढ़ल जाइत रहैक। लगान आ जमींदारी तंत्रक अन्य अपेक्षा पूरा करबा मे आम रैयत परेशान रहै। प्रथम विश्वयुद्धक कुप्रभाव अपन रंग देखा' रहल रहै। अन्न आ वस्त्र सहित सब आवश्यक वस्तुक दाम लगातार बढ़ि रहल रहै, देसी शिल्प प्रायः नष्ट भ' गेल रहैक और औद्योगिकीकरणक गति तेज भेल जा रहल रहै। रेलक विस्तार स्थानीय उत्पाद कें पैघ शहर पहुँचाब' मे अनवरत लागल रहै। नेपालक तराईक अपेक्षा काज-रोजगार तकबा लेल मिथिलांचलक अन्नकट्टू आ अखरकट्टू लोक पूब दिसक यात्रा आरंभ कएलक। आ संभ्रान्त समाज-शासक समूह आ प्रभु वर्ग-पारंपरिक संस्कृत शिक्षा त्यागि अंग्रेजी दिस बढ़ि रहल रहए। संक्रमणक एहि दौर मे ग्रामांचल मे पसरल पारंपरिक शिक्षा-संस्थान कें बदलि आमजनकें आधुनिक शिक्षा देबाक बेगरता कोनो राज दिस सँ आवश्यक नहि मानल गेलइ। एहने भेदभावक बीच आम मैथिल किशोर आ नौजवानक-से खाहे कांचीनाथ झा

होथु किंवा चेतन कुम्हार-मानसिक गढ़नि तैयार भ' रहल रहैक। गत शताब्दीक तेसर दशक त' आरो आलोड़नपूर्ण रहल। राष्ट्रीय मुक्ति अभियान तेज भेल। महात्मा गांधीक संग भगत सिंह सेहो मुख्यधारा मे अएलाह। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टीक गठन भेल आ कांग्रेस मे नव-नव सामाजिक समूह नव-नव विचार आन' लागल। आ एही काल मे किरणजी पहिल बेर मिथिलांचल सँ बाहर गेलाह आ सेहो दिनाजपुर। एहि सभ स्थिति पर गहकी नजरि रखैत, सभ केँ भोगैत अकानैत किरणजी स्वदेशी आंदोलनक कार्यकर्त्ता भेल रहथि। तहिया राजनीति समाजक कार्य व्यापार सँ गंभीर रूप सँ सम्बद्ध रहै आ एहि मे साहित्यिक-सांस्कृतिक गतिविधिक लेल सेहो जगह रहैत रहैक। हमरा लगइए जे मैथिलीक प्रति किरणजीक मोन मे सक्रिय अनुराग एही अवधि मे जागल हेतनि। 'किरण'जीक आत्मकथ्य सँ सेहो सैह साबित होइए। से; कांचीनाथ झाक सामाजिकीकरण (सोशल बैप्टिज्म) ऐना भेल रहनि आ एहना मे भाषा किंवा साहित्य किंवा समय किंवा समाजक संदर्भ मे हुनक रूपान्तरण किरणेजीमे हेबाक चाहैत छलनि आ सैह भेलनि।

'किरण'जी मृत्यु (9 अप्रैल 1989) सँ किछु दिन पहिने धरि सृजनरत रहलाह। हुनक भाषा संग्रामी ओ साहित्यकार गोर पचपन वर्ष धरि सक्रिय रहल। एहि मध्य ओ कविता-कथा-निबंध-एकांकी-नाटक-महाकाव्य सभ किछु रचलनि। 'किरण'जी केँ 'पराशर' महाकाव्य पर साहित्य अकादमीक सम्मान भेटलनि-मरणोपरान्त। एकरा विडम्बने कहबै जे 'किरण'जी सन कालजयी भाषा संग्रामी आ रचनाकार केँ जीवन काल मे अकादमी पुरस्कार एहि लेल नहि भेटलनि जे कोनो पोथी समय पर प्रकाशित नहि भेलनि। अस्तु। हुनक सबसँ पहिल प्रकाशित रचना 'चन्द्रग्रहण' (1932 ई) छनि जकरा उपन्यास कहल गेल आ बेस चर्चित भेल। कुलानंद मिश्रक अनुसारें एहि विनिबन्ध मे किछुए रचनाक सूचना देल गेल अछि। 'किरण'जीक पहिल रचना हुनक विनिबन्धकार कुलानंद मिश्र सेहो नहि ताकि सकलाह। मुदा हुनक रचनाकारक जन्म 1930 ई.क लक-;धक ओ मानैत छथि। कुलानंद मिश्रक विश्लेषण-विवरण सँ ई वास्तविक लगितो अछि। एकरा संग, इहो सत्य जे 'किरण'जीक काव्य रचना श्रृंगार आ



भक्तिपरक पद्य सभ सँ शुरु भेल रहनि। अपन जाहि सामाजिक बोध आ लोकपक्षी साहित्यक लेल ओ जानल जाइत छथि तकर विकास क्रमशः भेलैक। हुनक बोध जेना-जेना समाज सापेक्ष आ लोक सापेक्ष होइत गेल, तेना-तेना हुनका मे परिवर्त्तन अबैत गेलनि। एहि क्रम मे एकटा बात आर ध्यान देबाक थिक जे श्रृंगार आ भक्ति सँ भरल-पुरल एहन रचना सभ 'किरण'जीक स्वीकृत साहित्यकार रूपक जन्म सँ पूर्वेक थिक। एहन रचना सभक भनिता मे 'कांचीनाथ' नामक उल्लेख अछि। कायाकल्पक प्रक्रिया पूर होइत-होइत हुनक गीतकार श्रमशील मानवक विजयक कामनाक गीत गाबय लागल। वैह गीतकार **'अंजनी अहिल्या केर सतीत्व/कुंती केर कौमार/कयलक जे नष्ट/से लम्पट दुष्ट/देवता छल कहबैत, घर-घर मे पूजित होइत।'** सन कतोक काव्य पंक्तिक रचना कएलनि। भक्ति आ श्रृंगारक मैदान दिस टहलैत 'किरण'जी केँ सामाजिक यथार्थक डाँग पड़ै छनि आ ओ काशी जाइत छथि, त' हुनक भक टुटैत छनि। काशी सँ फेर कलकत्ता आ फेर काशी। मिथिलांचल मे भलमानुसक समाज मे गादि जकाँ बैसल अति गरीबीक अनुभव आ काशी आ कलकत्ताक जागरूक परिवेश मे हासिल नव-नव ज्ञान ओ वैज्ञानिक विवेचन-शक्ति आ सामाजिक यथार्थ सँ उपजल बोध हुनक चेतना केँ रंदा मारि साफ क' देलकनि आ कांचीनाथ झा 'किरण'क कायाकल्प भेलनि। फेर सब किछु साफ होअ लगै छनि। एकरे परिणति थिक : **'उठू मैथिल युवक, युग मे कर्मयोगक शंख बाजल/विश्व विजयी संगठन बल पाबि जनता सैन्य साजल/रहि सकल नहि जारसाही मूल सह सुलतान गेला/ जनमतक प्रतिकूल चलि इंग्लैंड पति पेरिस पड़ैला।'** 'युवक सँ' कविताक एहि पंक्ति मे 'किरण'जीक पूर्ण रूपान्तरण अभिव्यक्त होइए। एकरा बाद किरणजीक कवि किंवा साहित्यकार केँ मानवीय सत्ता पर कोनो संदेह नहि रहलनि। हुनक सम्पूर्ण काव्य साहित्य शोषित, वंचित, उत्पीड़ित आ उपेक्षितक पक्ष मे ठाढ़े नहि, युयुत्सु देखाय दैत अछि। सामाजिक व्याधिक मूल केँ तकबा आ ताकि क' ओकरा नष्ट करबा लेल सदैव तत्पर देखाय दैत अछि। आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक आ जातीय विषमताक पोषक समूह, पाखंड

आ कट्टरता केँ महिमा मंडित कर' वला समाज, अहंकारी आ मानवीय गरिमा पर आघात कर' वला समूह हुनक आक्रमणक केन्द्र रहल। मुदा प्रगति, वैज्ञानिक सोच, समानता आ सहज स्वाभिमानक रक्षा हुंनक काव्यक संबल आ सकारात्मक पक्ष रहल अछि। 'किरण'जीक एकटा कविता छनि 'हमर कामना'। एहि मे हुनक पाँती छनि : **'नगराजक सिर पर मस्त ठाढ़/जे जरा गलाक अपन हाड़/मानव समाज केँ सुखी करय/से थिक हमर कविताक विषय'।** से कवि 'किरण'क आजन्म विषय बनल रहल– कवितेक नहि, कथोक, निबंधोक आ भाषा विकासक चिन्तनक सेहो।

'किरण'जीक प्रथम कथा 1937 ई. मे 'भारती' मे प्रकाशित भेल रहय। ओना ताहि सँ पहिने उपन्यासक संज्ञा सँ 'चन्द्रग्रहण' प्रकाशित भेल रहै आ ओकर चर्चो भेल रहैक। 'चंद्रग्रहण' केँ कात क' दी तइयो पंद्रहटा कथा हुनका नामे भेटैत अछि। कथा भंडार लघु रहितो सामाजिक सरोकारक सशक्त अभिव्यक्तिक कारणे 'किरण'जीक कथाकार मैथिली कथा साहित्य मे विशेष स्थानक अधिकारी अछि। एहि मे 'करुणा', 'धर्मरत्नाकर', 'मधुरमनि' आ 'कोन महल नाम रखबै एकर?' बेस प्रसिद्धि पओलक। मानवीय रागबोधक अद्भुत कथा थिक 'मधुरमनि'। ई कालजयी कथा कोनो कथा साहित्य लेल ईर्ष्या भ' सकैत अछि। कुलानंद मिश्रक एहि स्थापना सँ ककरो असहमति नहि हेतनि : 'मधुरमनि' हुनका मैथिली कथा साहित्य मे अमरत्वक अधिकारी बना देने छनि।' 'किरण'जी आन कोनो नहि मात्र येहटा कथा लिखने रहितथि, तइयो मैथिली कथा साहित्य मे हुनक स्थान सुरक्षित रहितनि। 'किरण'जीक खाता मे 'विजेता विद्यापति' नाटक आ 'जय जन्मभूमि' ओ 'कर्ण' एकांकीक अतिरिक्त किछु बाल कथा सेहो अछि।

मैथिली निबंध 'किरण'जीक स्नेह पाबि धन्य भेल। हुनक निबंध सभक एकटा संग्रह छनि जाहि मे एगारह गोट निबंध संकलित अछि। विभिन्न पुस्तक मे देल गेल सूचीक अनुसारें किरणजीक तीन दर्जन सँ



बेसी निबंध अछि। 'किरण निबंधावली' (पूर्व खंड) मे संकलित निबंध सभ 'किरण'जीक एहि पक्ष पर विचार करबा लेल पर्याप्त त' कथमपि नहि अछि। हँ, नहि मामा सँ कनहा मामा। एहि निबंध सभ मे 'किरणजीक विचार अंकुठ भावें अपन सम्पूर्ण तर्कशक्तिक संग उपस्थापित भेलए आ से अकृत्रिम रूपें हुनक प्रगतिकामी, जनपक्षी आ लोकरंजक व्यक्तित्व केँ रेखांकित करैत अछि। ओ मिथिलाक जन सामान्यक– एहि पछुआयल भूखंडक नब्बे प्रतिशत आबादीक–प्रवक्ता भ'क' ठाढ़ छथि। एहि निबंध सभ मे ओ मिथिलाक संभ्रान्त समाज-शासक समाज-दिस सँ तैयार आ बलात् जारी कएल भाषिक, साहित्यिक ओ सांस्कृतिक मान्यता सभकेँ तोड़ैत नव भावभूमि गढ़ैत छथि। ओ साहित्य मे लोकपक्षक अपना समयक सबसँ पैघ व्याख्याकार छलाह, सकारात्मक परिवर्त्तनक प्रबल पक्षधर रहथि आ एहि लेल समाज ओ साहित्यक विकास जाहि दिशा मे अपेक्षित मानैत छलाह तकरा लेल अक्लान्त संघर्ष करैत रहलाह। निबंध संग्रहक अंतिम दू गोट निबंध 'मैथिली शब्द समाज' ओ 'फकड़ा' 'किरण'जीक भाषा विषयक अवधारणा के बड़ दूर धरि साफ करैत अछि आ मैथिली साहित्यक सकारात्मक भविष्य कोना ओ केहन भ' सकइए तकरो संकेत करइए। एहि दुनू निबंध मे 'किरण'जी मैथिली भाषा केँ बाबू-बबुआनक दरवाजा आ ड्योढ़ी सँ बहार आनि ओकर व्यापक जन आधार देबा लेल व्यग्र छथि। ई व्यग्रता हुनक भाषा संग्रामी व्यक्तित्वक अनुरूप त' अछिए, मैथिलीक भविष्य सँ बेसी जुड़ल अछि। हमरा इहो कहबाक अनुमति दिअ जे मैथिली भाषाक सार्वजनिकीकरणक संदर्भ मे अपन लेखनीक जे उपयोग 'किरण'जी कएलनि, से अभूतपूर्व त' अछि, भविष्य मे एहन समर्पित आ संवेदनशील भाषा संग्रामी फेर कहिया हैत, से कहब कठिन। आ एहि सभक मूल मे अछि समाज सापेक्ष करुणा। करुणा आ ताहि सँ जनमल प्रतिहिंसा साहित्यकार आ भाषा संग्रामी 'किरण'जीक स्थायी भाव अछि। आ से ओहि आम मैथिलक पक्ष मे जकर कोनो जाति नहि छैक, जकर कोनो धर्म नहि छैक, जकर कोनो अपन गाम-डीह-डाबर नहि छैक। जकर अपन राति नहि छैक, अपन दिन नहि छैक, अपन प्रात नहि छैक, अपन

साँझ नहि छैक। कोनोटा निजता सँ वंचित एहि बहुजन समाजक लेल 'किरण' अपन सभ विधाक रचना मे संघर्षरत छथि।

काँचीनाथ झा 'किरण' सभ विधामे लिखलनि। बिरासी वर्षक वय धरि लिखैत रहलाह–अर्थात् जीवनक अंतिम क्षण धरि किछु क' जयबाक उत्कंठा मे बाझल रहथि। 'किरण'जीक रचना साहित्य–सौष्ठवक हिसाबें, शिल्पगत नवता आ प्रस्तुतिक चाकचिक्यक हिसाबें, संवेदनाक विस्तार किंवा साहित्य आलोचनाक आन निर्धारित शास्त्रीय आ पारंपरिक मानदंडक हिसाबें झूस साबित भ' सकइए। कदाचित् साबितो भ' जाए– हमरा ई स्वीकार करबा मे बेसी असौकर्य नहि हैत। मुदा डॉ॰ रामविलास शर्माक एकटा ऐतिहासिक उक्ति पैंच लैत हम कह' चाहब जे मैथिली मे भाषा आंदोलन आ साहित्य-संस्कृतिक अभियान केँ समान भाव सँ संचालित कर' वला कोनो व्यक्तित्वक कहियो कोनो प्रतिमा ठाढ़ कएल जेतैक त' से साइत 'किरण'जी सँ पैघ नहि हैत। मैथिली भाषा केँ, साहित्य आ संस्कृति केँ मिथिलाक शासक समाज ओ प्रभु वर्गक वाविलासक केन्द्र सँ बाहर निकालि खेत खरिहान मे ल' जाएवलाक चर्च हेतैक त' 'किरण'जीक नाम शीर्ष पर रहतनि।

■



# किरणजीक कथा

आशुतोष झा

**काञ्चीनाथ झा 'किरण'** समाज आ साहित्य दुनूक विकास केँ दृष्टि मे राखि क' कथाक रचना करैत छथि। अपन कृति सभ मे ओ मिथिलाक ग्रामीण समाज पर गहिकी दृष्टि दैत छथिन। व्यक्तिक समाज मे स्थान सुनिश्चित करबा मे अर्थक कतेक बेसी प्रधानता छैक से किरणजी अपन कथा सभ मे बेसीकाल रेखांकित केने छथि।

किरणजीक एक मात्र कथा-संग्रह **कथा–किरण** हुनक जीवन-दर्शन, सम्पूर्ण समाजक आ समाजक दलित वर्गक प्रति हुनक चिन्ता के व्यक्त करइये। हुनक दीर्घ जीवन अत्यन्त घटनापूर्ण रहलनि। ओ कखनो एकर चिन्ता नहि केलनि जे हुनक अमुक निर्णय सँ हुनका व्यक्तिगत लाभ हेतनि अथवा हानि। हुनक मोन मे सदिखन येह विचार खदबदाइत रहलनि जे गाम, समाज, मैथिली आ मिथिलाक उत्थान कोन तरहेँ हुअए। आ, ओहि उद्देश्यक प्राप्तिक लेल कम-सँ-कम व्यक्तिगत स्तर पर कोनो त्याग करब हुनका पर्याप्त नहि बुझेलनि। ई गप्प हुनक कथा मे प्रकट रूपेँ परिलक्षित होइत छनि।

संग्रहक पहिल कथा थिक 'करुणा'। कथाक मुख्य चरित्र करुणा एकटा भाग्यहीन, निस्संतान, विधवा सुन्दरी अछि। धनिक कुल मे जनमल करुणाक बियाह एकटा अत्यन्त निर्धन परिवार मे भ' जाइत छैक। सासुर मे ओकर पति, पतिक पितामही आ एकटा ढूगर जाउतके छोड़ि आओर कियो

नहि छैक। ओत' आबि ओ एकाएकी पहिने अपन पतिक पितामही आ तकर उपरान्त अपन पतिक मृत्यु होइत देखैत अछि। अंततः बचि जाइत छैक ओकर पाँच वर्षक जाउत। आ ओ अपने। जाउत के सेहो ओकर नानी अपना लग मंगा लैत छैक। एहन निराशाक स्थिति मे एक राति ओ बैसल अछि त' एकटा छोट बच्चाक निर्दिष्ट टिप्पणी पर ओ अचानक अपन सौन्दर्य, अपन यौवनक प्रति साकांक्ष भ' जाइत अछि। ई गप्प ओकर मोन मे अपन अक्षत सतीत्व पर संभावित आक्रमणक प्रति आशंकित क' दैत छैक। ओ एकटा अभूतपूर्व निर्णय लैत अछि आ अपन मुँह के तेजाब सँ झरका लैत अछि जाहि सँ कोनो व्यभिचारी मनुष्यक कामुक मंशाक ओ शिकार ने बनि जाए।

ई कथा मात्र करुणाक नहि प्रत्युत् मिथिलाचंलक कतेको स्त्रीगणक कथा अछि। 'करुणा' एहि क्षेत्रक कतोक अभागिनक असुरक्षा भाव के प्रतिबिम्बित करैत अछि। ताहि दिन पारम्परिक समाज मे विधवा-विवाहक कोनो प्रश्न नहि छलैक। स्त्रीक लेल दैहिक आवश्यकता सेहो किछु होइत छैक से कोनो तरहेँ विचारणीय गप्प नहि छलैक आ अपन सतीत्वक रक्षा करब त' स्त्रीक सभ सँ पैघ कर्त्तव्य छलैहे, छैहे। एहि कथा द्वारा किरणजी ताहि दिनक मिथिलाक स्त्रीक अंतरतम मे पैसि ओकर वेदना, ओकर संवेदनाक रहस्योद्घाटन करैत छथि। ताहि संग तटस्थ भाव सँ समकालीन मिथिलाक स्त्रीक दासत्व भावक वर्णन करैत छथि। ई कथा निस्संदेह बीसम शताब्दीक पहिल चतुर्थांश मे मिथिलाक स्त्रीक पराधीनता, मानसिक दासत्व आ विवेकक अभाव के रेखांकित करैत अछि।

एहन गप्प नहि छैक जे एहि प्रकारक कथा सभ मैथिलीमे नहि लिखल गेल हो, मुदा एहि मे कोनो संशय नहि जे ओहि सभ मे सँ 'करुणा' उच्चस्थ कथा सभक कोष्ठक मे राखल जाएत।

आब मधुरमनि!

'मधुरमनि' किरणजीक सभ सँ चर्चित कथा अछि। हमर दृष्टियेँ वैह हुनकर सर्वश्रेष्ठ कथा सेहो छनि। ई मधुरमनि नामक एकटा निर्धन स्त्री आ ओकर विकलांग पति मोचनक मर्मस्पर्शी खिस्सा अछि।

मोचन सामर्थ्यहीन शरीरक स्वामी अछि। ओ नाङड़े टा नहि एक टा हाथ सँ अक्षम सेहो अछि। बोनि करब ओकरा लेल संभव नहि छैक। तैं



ओ अपन दलान पर बैसल पथिया आ डाली बुनैत रहैत अछि। बीच-बीच मे ओ बाड़ी मे जा क' खुरपी सँ कमाब'-कोड़' सेहो लगैत अछि। यैह ओकर प्रतिदिनक नित्यचर्या छैक।

एम्हर ओकर बहु, ओकरा सँ पूर्णतः विपरीत छैक। मेहनतिया आ जंघगरि, बोनि-बुत्ता मे लागल, ओ एहि आंगन सँ ओहि आंगन दौड़ैत रहैत अछि। ओकर सभक गुजर चलैत छैक मधुरमनियेक बलेँ। एहना मे 'अप्पन कमाइ खा क' नाङड़ लुल्हक तर मे कियेक बसैत छल आ से गाम आ टोल मे लोक केँ आश्चर्य होइत छैक। प्रतिदिन भिनसर ओकरा बहु सँ पुछबाक आदति छैक।

''भानस भेलै?''

आ तदुपरान्त ई सुनबाक जे ''भानसे टा? नौ टा तीमन-सचार लागल राखल ऐ। काज ने धंधा, तीन रोटी बंधा!'' अथवा तेहने सन किछु।

रोज-रोजक एहि अपमान के पीबाक मोचन के आदति भ' गेल छैक। मुदा ओहि दिन पत्नीक चिरपरिचित प्रतिक्रिया ओकरा अशांत क' दैत छैक। ओ घर छोड़ि देबाक निर्णय लैत अछि। अपन निर्णयक समर्थन मे ओकर तर्क छैक, ''नै काज कएल हएत, तँ धिया-पुता के खेलाओल-सम्हारल होयत किने? आ सेहो नै होयत तँ भीखे मांगब। घरो मे तँ भीखे खाइ छी। आनक कमाइ भीखे थिक किने?'' एत' आन सँ ओकर अर्थ पत्नी सँ छैक। ततेक व्यथित अछि ओ अपन बहुक व्यवहार सँ!

एकटा मोटरी मे अपन फाटल-पुरान कपड़ा सभ कसि ओ कांख तर मे राखि ओ निकलि जाइत अछि... अनिश्चित लक्ष्यक दिस! ओम्हर खेनाइ बनबैत-बनबैत मधुरमनिक मुँह स' अपशोचक शब्द सभ झड़' लगैत छैक। ओ अपना पर खौंझाइत, बड़बड़ाइत अछि, ''एक कोन बासि रोटी भिनसरे मनसाक पेट मे पड़लैक। कखन ने बिलायल हेतै।''

जल्दी-जल्दी खेनाइ तैयार केलाक उपरान्त ओ यथासंभव 'बंसी जकाँ अपना दिस घेंचि लेब' बला' स्वर सँ मोचन के बजबैत अछि, ''कत' छै? आबौ ने आब!'' कोनो जवाब नै सुनि ओ ओकरा ताक' लय बाहर निकलि ओकर पाछाँ करैत अछि।

ओम्हर कनिये आगाँ बढ़ला पर मोचनक हिम्मति जवाब देब' लगैत छैक आ ओ बाटक कात मे बैसि जाइत अछि। तावत् मधुरमनि ओकरा लग पहुँचैत छैक। आ मना के घर ल' अनैत छैक। कथाक केन्द्र बिन्दु छैक ओकर अंतिम भाग जत' मधुरमनि बर के मनाब' लए जाइत अछि। एक दिस बाहर जेबा द' सोचि मोचन हिम्मति हारि के बैसल अछि मुदा दोसर दिस पत्नीक संग घर नहि जेबाक ओ क्षीण विरोध करैत अछि। आ जखन ओ नहि तैयार होइत अछि घुरबा लय त' मधुरमनि अपन नैहर चल जेबाक स्वाङ करैत अछि। ताहि पर मोचन ओकरा उन्टहि मनब' लगैत अछि। फेर दुनूक मध्य उचिती-विनती प्रारंभ भ' जाइत छैक। आ अन्त मे सभ किछु सामान्य भ' जाइत छैक।

1962 मे छपल एहि कथा मे किरणजी अपन रचनात्मकताक शिखर पर छथि। दुनू मुख्य पात्रक बीचक वार्तालाप, ओकर सभक बीचक आदान-प्रदान आ भावनात्मक लगाओ मे प्रत्येक पाठक/पाठिका के अपन प्रतिबिम्ब देखाइत छैक। चाहे ओ मोचन/मधुरमनिक निर्धनताक विपरीत धनिके कियेक ने होथि। ई तथ्य एहि कथा के निस्संदेह कालातीत बनबैत छैक।

जेना नामे स' स्पष्ट छैक, 'जाति-पाँजिक जादू'क द्वारा किरणजी मैथिल ब्राह्मण मे जाति-पाँजिक कुप्रथा पर रोचक ढंग सँ प्रहार करैत छथि। यद्यपि जाति-पाँजिक व्यवस्था आब अंतिम साँस ल' रहल छैक मुदा मधुबनी आ दरभंगाक खास-खास क्षेत्रक परिष्कृत ब्राह्मण समाज मे एखनहुँ आ व्यक्त रूप मे देखल जा सकैत अछि। कथा मे एहि गप्पक चर्च छैक जे साबिक मे जँ कोनो व्यक्ति जाति मे उच्च रहैत छल त' कोन तरहेँ छोट जाँति-पाँजि बला लोक सभ ओहि व्यक्ति सँ अपन बेटीक बियाह करएबा लय उताहुल रहैत छलाह चाहे ओहि व्यक्तिक बियाह पहिने सँ एक बेर अथवा कैक बेर सेहो कियेक ने भेल हो। एहन व्यक्ति सेहो अपन जातीय श्रेष्ठता के भजायब जेना अपन जन्मसिद्ध अधिकार बुझैत छलाह। भविष्य मे ओहि कन्याक उत्तरदायित्व लेब ओ अपन कर्त्तव्य बूझथि अथवा नहि। एहि भावना के भजबैत अछि एहि कथाक मुख्य पात्र भद्रकान्त। समाज मे सोतिक प्रति आकर्षण के देखि ओ कोनो तरहेँ एकटा हाथी उपर'बैत



अछि आ ओहि पर सहरसाक बनगाँव पहुँचैत अछि। ओत' असत्यक ताना-बाना बुनि क' ओ अपन सोति होयबाक घोषणा करैत अछि। सोति त' ओ अछिये कियेक त' कैक टा बियाह केनिहार ओकर सोति पिताक एकटा पत्नी ओकर माय सेहो रहथिन। फेर चाहे ओकर माम फुलतोड़े कियेक ने रहल होथिन्ह। आ अपन ऐश्वर्य देखाब' लए ओकर लग हाथी त' छइहे। आश्चर्यक गप्प नहि सम्भ्रान्त परिवार मे ओकर बियाह भ' जाइत छैक। ओकँर सत्यताक बोध यावत् ओकर ससुर के होइत छैक तावत् बड्ड देरी भ' गेल रहैत छैक।

ई कथा जाति-पाँजिक व्यवस्थाक बहुत रोचक ढंग सँ हँसी उड़बैत छैक। मुदा हँसी की, एहन क्रिया अपवाद नहि अपितु रेवाज रहैक ताहि दिन!

'धर्मरत्नाकर' मे किरणजी मिथिलाक, मिथिलाक किये सभ ठामक जमींदार एवं जमींदारी प्रथाक विद्रूपक परत उघाड़ि के राखि दैत छथि। बेसी काल होइत ई छैक जे हम सभ भूतपूर्व जमींदारी आ जमींदार सभक ऐश्वर्यक चकाचौंध मे ततेक ने रमि जाइत छी जे हुनकर सभक घिनाओन चेहराक पूर्णतः उपेक्षा क' दैत छियैक। ओहो लोकनि जे बीसम शताब्दीक जमींदार सभक क्रूरता, रैयत सभ पर हुनका सभक द्वारा कयल गेल अत्याचार आ विरोधाभास सँ युक्त हुनकर सभक कार्यकलाप देखने छथि, अधिक काल सब किछु बिसरि हुनकर सभक विरूदावली मे लागल रहैत छथि, हुनकर सभक जयजयकार करबा मे गौरवान्वित महसूस करैत छथि।

एहि कथाक मुख्य चरित्र बाबू वीरमणि सिंह जे ने बेसी पढ़ल आ लिखल छथि मुदा अपन बुद्धिमानी सँ अपन जमींदारी के डेढ़ लाख सँ तीन लाख क' देने छथि। आगाँ कथाकार स्पष्ट करैत छथि जे एहि 'बुद्धिमानी'क आधार हुनक बल प्रयोग छनि।

हुनकर इलाकाक दू गुट जखन कोनो संघर्ष होइत छैक त' पूजा-पाठ विस्तार सँ केनिहार बाबू साहेब ओकरा सभ पर कड़ा जुर्माना लगबैत छथि। ओहि जुर्माना सभ सँ हुनका ततबा धनराशि प्राप्त भ' जानि जे हुनक 'देवाहि-धर्म्माहि'क खर्चा निकलि जाइत छनि। रमकिसना हुनका लग ई नालिस कर' पहुँचलनि जे जखन ओ हुनक बराहिल स' अपन खस्सीक उचित दाम मंगलक त' ओ मारि-मारि क' ओकर कपार फोड़ि देने छैक।

सैह टा नहि, ओ ओकर खस्सियो खोलि क' नेने आयल अछि। ओकर गप्प सुनितहि ओ तामसे चिकर' लगैत छथि जे 'जीह कियेक ने काटि लेलें?'' आ गारि पढ़ैत ओकरा अपन बराहिल सँ पचास जूता मरब'बैत छथि। प्रतिक्रियास्वरूप जखन ओ हुनका पर फौजदारी मोकदमा क'दैत छनि त' हुनकर पटवारी आ बराहिल सभ पहिने ओकर पत्नीक सतीत्व लुटैत अछि आ तकरा बाद ओकर झोपड़ी के उजाड़ि ओकर डीह के जोति-कोड़ि के सहन बना दैत अछि। आ अंततः अपन बाहुबलक मदति सँ रमकिसना के नेस्तनाबूत क' ओ अपन प्रभुत्व स्थापित करबा मे सफल भ' जाइत छथि। बाबू साहेबक अकबाल 'किछु दिनु हेतु' जमि जाइत छनि मुदा पूर्व जकां नहि। अर्थात् विद्रोहक आगि जे रमकिसना लगबैत अछि से दबा त' अवश्य देल जाइत छैक जमींदार साहेबक द्वारा, मुदा ओ पूर्णतः मिझाइत नहि छैक।

1941 मे छपल एहि कथा मे किरणजी जमींदार सभक अन्याये टा पर प्रकाश नहि दैत छथि प्रत्युत आब' बला समयक दिशा दिस संकेत सेहो करैत छथि। जे अंततः 1947 मे देशक स्वतंत्रता आ 1950 मे संसद द्वारा गणतांत्रिक प्रणालीक अंगीकरणक रूप मे हमर सभक सामने आयल। अतः 'धर्मरत्नाकर' आब' बला घटना-क्रमक पूर्वाभासक उल्लेखनीय उदाहरण अछि।

संग्रहक अंतिम कथा 'रूपा' संभवतः हुनक अंतिम कथा छनि। ई ओहि चारि कथाक अंतिम कड़ी थिक जे ओ लिखबा मे अक्षम हेबाक कारण शिवशंकर श्रीनिवास के डिक्टेट करओने छलथिन्हे। एहि कथा मे ओ समाजक दलित आ समृद्ध व्यक्ति सभक बीच व्यवहारक बदलैत समीकरण दिस संकेत करैत छथि। कथा एक दिस आजुक परिवेश मे तथाकथित कुलीन परिवारक अहंकारी पुतोहु द्वारा नौड़ीक युवा पुतोहुक प्रति निरादरपूर्ण व्यवहार के वर्णित करइये। दोसर दिस प्रसन्नचित युवती रूपाक हाजिर जवाबी के, जे अपेक्षाकृत लिबरल परिस्थिति मे पोसायल अछि। ओना पोसायल त' अछि ओ गामे मे मुदा जेँ कि ओकर पिता कलकत्ता मे काज करैत छैक तैं ओकरा कोनो परिवार मे जा क' नौड़ीक काज करब आ संग-संग ओतुक्का लोक सभक दुर्व्यवहार सहबाक आदति नहि छैक।



तैं एक दिन भिनसर मे जखन मौसम खराब रहला पर ओहि कुलीन परिवारक पुतोहु द्वारा ओकर देरी सँ पहुँचबाक कारण 'बेड-टी मे विलंब हेबाक शिकायत होइत छैक त' ओ हँसिक' कहैत अछि जे, ''मेम साहेब'', सौंसे गाम मे एक्कहि रंग वेदर छलैए!'' आ ओहि अहंकारी स्त्री के निरुत्तर क' दैत छैक।

एहि कथा मे किरणजी द्वारा एखुनका मजदूर वर्गक लोक मे निर्भीकता एवं स्वाभिमानक भावक उत्पत्ति आ तथाकथित कुलीन परिवारक बहुतो लोक सभक आइयो सामन्तवादी अहंकार मे रहबाक वर्णन अछि।

एकर अतिरिक्त ''चनरा'', ''अभिनव उत्तरा'', ''प्रलाप'', ''समाजक चित्र'', ''एहि चारि खूनक खोज केनिहार के?'' ''काल केकरो छोड़त?'', ''एक चित्र'' ''कोन महल नाम रखबै एकर?'' ''धरती कतउ काक बंधा होथि?'' आ ''आँखि मुनने आँखि खोलने'' आदि कथा पर किरणजीक चिरपरिचित ट्रेड मार्क स्पष्ट रूपे अंकित बुझाइत छनि। एहि सब मे ओ व्यक्तिक निर्दयता, असंवेदनशीलता, अविवेक, ओकर निर्धनता एवं दुर्बलता इत्यादि पर विस्तृत रूपेँ चर्चा करैत छथि। कथाकारक रूप मे किरणजी कोनो चरित्र, परम्परा, वर्ग अथवा व्यवस्था पर अपन वक्तव्य नहि दैत छथि। ओ कोनो परिस्थितिक अथवा विभिन्न चरित्र सभक बीच वार्तालाप के तेना प्रस्तुत करैत छथि जे सभ किछु स्वतः स्पष्ट भ' जाइत छैक। हुनका कथुक पक्ष लेबाक अथवा ''जजमेन्ट'' देबाक काज नहि पड़ैत छनि।

कथाकार, उपन्यासकारक सभ सँ पैघ काज छैक पाठक के आनन्दित करब। मुदा तकर संग-संग ओकर एकटा दायित्व सेहो छैक। ओ दायित्व छैक समाजक मानवताक प्रति सरोकार। आ कतेको लब्धप्रतिष्ठ कथाकार के एहि बातक बोध नहि रहैत छनि जे हुनकर सभक कथा, हुनकर सभक प्रस्तुति समकालीन समाजक सकारात्मक प्रतिबिम्ब हेबाक चाही, विकृत चित्रण नहि। की अपने सभ हमरा सँ प्रतिवाद करबै जँ हम कही जे आब' बला पीढ़ी सभक लेल तत्कालीन साहित्य समकालीन समाजक सभ स' विश्वसनीय दस्तावेज होइत छैक? एहि दायित्वक निर्वाह करबामे किरणजी अपन कोनो समकालीन सँ पाछाँ नहि छथि। हिनकर समकालीन मे

मैथिलीक दूटा दिग्गज साहित्यकार प्रो० हरिमोहन झा आ पं० वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' सभ सँ महत्त्वपूर्ण छलखिन। ओहि मे सँ हरिमोहन बाबूक कथा सभ एकटा विशेष वर्गक सुख-दुख, रहन-सहन आ रीति-रेवाज पर केन्द्रित छनि। तखन बचलाह अप्रतिम यात्रीजी। त' यात्री जी आ किरणजी मे ई साम्य छनि जे ई दुनू गोटय अपन रचना संसार मे ओहि 'हैव नॉट' वर्ग के स्थान देलनि। जखन मैथिली साहित्य मे दलित-साहित्यक कोनो सुर-सार नहि छलैक। मुदा एहि दुनू साहित्यकारक शैली एकदम भिन्न छलनि। जत' यात्रीजीक रचना मे भाषा आ शिल्पक अद्वितीय समाहार दृष्टिगोचर होइये, ओत' पात्रोचित भाषाक प्रयोग करब किरणजीक रचनाक सभ सँ पैघ ताकति थिक (मोहन भारद्वाज)। दोसर गप्प ई जे एक दिस यात्रीजी जत' अपन बात कहबा मे कखनौ कठोरतम मुद्रा देखाब' सँ पाछाँ नहि हटलाह, किरणजीक शब्दकोश मे आक्रामकताक जेना नामे नहि होन्हि।

रचनाकारक रूप मे किरणजीक मैथिली साहित्य मे बहुमूल्य योगदान के स्वीकार करैत हुनक लेखनक किछु एहन तथ्य पर प्रकाश देब सेहो आवश्यक अछि जे कथाकार किरणक कमजोरी छनि।

ओ तत्कालीन समाजक कुप्रथा, दलन आ अत्याचार केँ उजागर करबा मे कतेक बेर ततेक लिप्त भ' जाइत छथि जे हुनक कथा सभक खिस्सा-तत्त्व समाप्त भ' जाइत अछि।

हुनक सामाजिक सरोकार कथाक संरचना आ शिल्प के क्षति पहुँचाब' सँ नहि रोकि पबैत छनि। अपन पवित्र एजेंडा के पाठक धरि पहुँचयबाक प्रयास मे ओ कथा आ संस्मरणक पातर रेखा कैक बेर टपि जाइत छथि। ओना श्री अशोकक किरणजी पर ई टिप्पणी उद्धत करब एत' समीचीन होएत जे ''किरणजी रचनाकारक रूप मे प्रसिद्ध छथि अपन वैचारिकताक लेल। शिल्प ओ भाषा हुनक आकर्षण-बिन्दु कहियो नहि रहल अछि।''

आ हमरा सभ के ई गप्प बिसरबाक नहि चाही जे कोनो साहित्यकारक आकलन ओकर सर्वश्रेष्ठ रचना सँ होइत छैक। तैं किरणजीक स्थान मैथिली साहित्यक श्रेष्ठ रचनाकार सभमे सुनिश्चित छनि।

■



# किरणजीक आलोचना-साहित्य

**पंकज पराशर**

''**बिनु** लाभ-लोभक अपन भाषा ओ साहित्यक सेवा जेना मैथिलीक कवि-लेखक कय रहल छथि, तेना प्रायः आन कोनो भाषाक कवि-लेखक केँ नहि करय पड़ल हेतनि। कवि-लेखकक त्याग ओ तपस्याक बल पर मैथिली लड़ैत बढ़ल जा रहल अछि। एहन स्थिति मे आलोचकगणक आघात करब उचित नहि थिक, मैथिलीक लेल हितकर नहि थिक। यदि ककरो काव्य मे दोष छैक, तँ बंधुक रूपेँ आँखि पर आनि देल जा सकैछ। हमर यैह मत अछि आलोचनाक संबंध मे।'' –वैदेही, दिसंबर, 1956

''आनक कुब्बर देखि अपना मे ओकर अभाव सँ श्रेष्ठत्व सिद्ध होइत अछि तँ प्रसन्न होइत छी, अप्रसन्नताक अभिव्यक्ति करैत छी हँसीक द्वारा। मुदा जँ ओ कुबड़ा अपन स्वजन रहैछ तँ हँसी नहि लगैछ, दुःख होइत अछि। अतएव जकरा हास्य रस कहैत छी–से वस्तुतः द्वेष रस थिक।''–संकलन (निबंध-संग्रह), मैथिली अकादमी, पटना।

''प्रयोग प्रगतिक मूल मात्र थिक, विकासक आधार थिक, जीवनक लक्षण थिक। परंपरा थिक अवरोध। मुदा ई अवरोध गति केँ नियंत्रित रखैक लेल आवश्यक अछि।'' – किरण-निबंधावली (पूर्व खंड) पृ.-50

''आलोचक लोकनि काव्यक गुण, रीति, अलंकार, ध्वनि ओ रस केँ कतबो महत्व

देथु, मुदा काव्यक विषय वस्तुक हृदय-ग्राहकता शक्ति केँ नहि घटा सकताह। तेँ युग रुचि केँ तृप्ति देनिहार काव्ये कालजयी भ' सकैत अछि।'' –उपरिवत्, पृ. 2

एखन जाहि तरहक आलोचना मैथिली मे भ' रहल अछि ताहि मे प्रायः अतिवादिता, एकांगिकता आ संतुलनहीनता सँ ग्रस्त वैचारिकताक निर्दशन होइत अछि। आलोचना की थिक, कोना कयल जयबाक चाही आ संतुलित आलोचनाक लेल की-की काम्य अछि–ताहि विमर्श मे प्रवेश कयने बिना हम डा० काञ्चीनाथ झा किरणजीक संपूर्ण आलोचना साहित्यक मूल्यांकन हुनकर इतिहास दृष्टि, युगबोध आ अति उच्च नैतिकता सँ संपन्न संवेदनशीलताक निकष पर करबाक धृष्टता क' रहल छी। 'किरण' जीक व्यक्तित्व केँ हुनकर कृतित्व सँ हम कथमपि अलगा नहि सकैत छी–बकौल टी.एस. इलियट' इन एस्केप फ्रॉम पर्सनेलिटी'क कथित उद्घोषित गवोक्तिक अछैतो।

किरणजीक साहित्य पर मैथिलीक वरेण्य आलोचना विशेषज्ञ विद्वान लोकनि अपन-अपन अध्ययन आ समझ के सीमा धरि लिखने छथि। हुनका लोकनिक मंतव्य/वक्तव्य केर निकष पर 'किरण'जीक अवदानी व्यक्तित्व/कृतित्व के जाहि तरहक छवि पाठकक मोन मे निर्मित होइत अछि ताहि आधार पर हमरा लोकनि (नव आँखि आ जीवन-दृष्टिवला लोक) संतुलित, साफ आ संपूर्ण छवि केँ नहि अखियासि पबैत छी। तखन प्रश्न उठैछ–एहना मे 'किरण'जीक साहित्य, विशेष क' आलोचना साहित्यक मूल्यांकन आ आजुक संदर्भ मे प्रासंगिकताक रेखांकन कोन बाटे संभव/प्रशस्त भ' सकैत अछि? किरणजीक युगबोध आ हुनकर जीवन-विवेक आइ हुनकर शताब्दी वर्ष मे हमरा सबहक लेल कोन तरहेँ उपयोगी, महत्वपूर्ण आ प्रासंगिक अछि, जाहि लेल हुनका पर विशद् आ महत्वाकांक्षी संगोष्ठी मे विमर्श हेतु सब गोटे एकत्र भेल छी। हमरा लोकनि एहू तथ्य केँ मोन राखि क' किरणजी पर वैचारिक विनिमय केर बाट पर आगू बढ़ी।

आलेख केर आरंभे मे किरणजीक आलोचना साहित्य सँ चारि गोट उद्धरण प्रस्तुत कयल गेल अछि, जे वस्तुतः एहि लेल जे हम व्यक्तिगत रूप सँ कोनो 'प्रोफेशनल क्रिटीक' के विवेचना पर अपन समझ के नेंओ



नहि रखबाक पक्षधर छी। पेटक हेतु हिन्दी आ ज्ञानात्मक भ्रमण सँ अवबोधक लेल अन्यान्य भाषाक आलोचनाक अवगाहन करैत काल हमरा लागल जे प्रत्येक पीढ़ीक अपन दृष्टि, युगबोध आ 'इंडिवीजुअल टैलेंट' फराक होइत अछि, ताहि दुआरे पूर्वक आलोचना अपन पूर्व आलोचना-पुरुषक जीवन आ साहित्य-विवेक केँ बुझबाक साधन मात्र भ' सकैत अछि। एहिठाम अपन समय केर तेजस्वी प्रतिभा वालटर बेंजामिनक कथन मोन पड़ैत अछि, ''हम ककरो जीवनक इस्तेमाल ओकर कृतिक व्याख्याक लेल नहि करैत छी, मुदा कृतिक इस्तेमाल ओकर जीवनक व्याख्या लेल तँ कइये सकैत छी।'' स्मरण केँ हम एकटा नैतिक कर्म बुझैत छी ताहि दुआरे अपन उद्देश्य केँ फड़िछायब आवश्यक बुझना गेल।

'किरण मैथिली-साहित्य शोध संस्थान' सँ किरणजीक निबंध-संकलन किरण निबंधावली (पूर्व खंड) छपल छनि जाहि मे मैथिल अस्मिताक प्रतीक पुरुष विद्यापति पर हुनकर पाँच टा निबंध छनि। (1) विद्यापति राधाकृष्णक तीन रूप किएक (2) विद्यापति राधाकृष्णक व्यक्तित्व निरूपण (3) राधाकृष्णक प्रचाराभावक कारण (4) गोविन्द दास श्रृंगारिक कवि, विद्यापति नहि आ (5) भू-परिक्रमणक रचयिता कवि कोकिल विद्यापति आदि। मैथिली साहित्य आ अस्मिताक लेल विद्यापति सँ एक्को क्षण लेल मुक्त/निरपेक्ष होयब हमरा सबहक लेल जेना असंभव जकाँ रहल अछि। किरणजी केँ सेहो अपन समय केर बौद्धिक व्याख्या सब सँ विद्यापतिक संदर्भ मे वाद-विवाद कर' पड़लनि। 'विद्यापति पर्व' केँ मैथिली अस्मिताक रूप मे ठाढ़ आ प्रचारित कयनिहार हुनका संवेदनात्मक ज्ञान-विहीन विद्यापतिक आलोचना केँ ओहिना पचा लेनाइ स्वीकार्य नहि भेलनि। बंगला आ हिन्दीक विद्वान लोकनिक व्याख्या सँ ओ काशी मे परिचित होइत रहलाह आ हुनका लगलनि कि कारयित्री आ भावयित्री प्रतिभाक सम्मिलनक पश्चाते विद्यापतिक साहित्य केँ बूझल जा सकैत अछि। अपना ओहिठाम सँ कने बहरा क' जँ आन भाषाक साहित्य धरि जाइ तँ चाहे फिराक गोरखपुरी, निराला, सूसन सौन्टैक, सिल्विया प्लाथ जे क्यो पैघ भेलाह ओ सब अपन पूर्वक महान प्रतिभा सँ सीख, प्रेरणा लैत बेर-बेर हुनके संगे ढाही सेहो लैत रहलाह।

विद्यापतिक व्याख्याक संदर्भ मे हमरा बेर-बेर एडवर्ड हैलेट कार मोन पड़ैत छथि जे कहने छलाह (अपन पोथी 'व्हाट इज हिस्ट्री मे) कि तथ्य सँ बेसी महत्वपूर्ण होइत अछि व्याख्या आ व्याख्याकार जे चाहैत छथि से तथ्य सँ कहबा लैत छथि। मैथिली आ मैथिली सँ इतर भाषाक विद्यापति प्रेमी विद्वज्जन अपन-अपन संस्थापनार्थ तत्क्षण उपलब्ध तथ्यक उपयोग कयलनि आ बौद्धिक जगत मे कथित नव तरहक शोधात्मक निष्पत्ति प्रस्तुत करैत गेलाह। ई कहब शायद अनावश्यक नहि होयत कि विद्यापतिक मादे जे किछु एखन धरि आलोचना भेल अछि तकरा आइयो अंतिम सत्य जकाँ मानि क' अंगीकार नहि कयल जा सकैत अछि। प्रत्येक युगक मेधावी विद्वान अपन फराक आँखि सँ, अपन फराक सामाजिक-राजनीतिक बोध आ फराक जीवन-विवेक सँ कोनो रचनाकारक मूल्यांकन करैत छथि। किरणजी सन मेधावी सेहो अपन फराक आँखि सँ कवि कोकिल केँ देखब आवश्यक बुझलनि।

एतहि कने बिलमि क' हुनक आलोचना आ इतिहास-दृष्टि पर विचार करबाक चाही। हुनका समय धरि विद्यापतिक जतेक व्याख्या आयल छलनि तकर गहन विवेचना प्रस्तुत करैत किरणजी अपन निबंध, ''विद्यापतिक राधा-कृष्णक तीन रूप किएक?' मे प्रारंभे एहि प्रश्न सँ करैत छथि ''बंगला, हिन्दी आ मैथिलीक विद्वान लोकनिक मान्यता मे भिन्नते विद्यापतिक राधा-कृष्ण केँ तीन रूप मे बाँटि देलक, मुदा से भिन्नताक आधार कोन?'' तकर बाद अनेक तथ्यक आधार पर प्रश्न ठाढ़ करैत किरणजी मैथिलीक आलोचकक मादे कहैत छथि-''मैथिलीक आलोचक तँ दोहरी गुलामीमे अभ्यस्त छलाह। एक मोगल-अँगरेज दोसर ओकर सभक एजेंट स्थानीय जमींदार। अँगरेजक विरुद्ध जे स्वाधीनता संग्राम चलल से स्पर्शो धरि नहि क' सकलनि। देश स्वाधीनो भ' गेल तथापि जमींदार केँ प्रभु मानैत रहलाहे। आत्मा कछमछयबो नहि कयलनि। से पहिल स्वाधीनताक उद्घोष कयनिहार विद्यापतिक राधाकृष्ण केँ लखिमा शिवसिंह मानथि सैह स्वाभाविक।'' किरणजीक एहि टिप्पणीक आलोक मे जँ समकालीन आलोचनाक समक्ष आ निष्पत्ति पर ध्यान दी तँ स्पष्ट भ' जायत जँ विद्यापतिक संदर्भ मे कयल एहि टिप्पणीक कतेक प्रासंगिकता एखनो बाँचल अछि।



किरणजीक आलोचना साहित्य केर संदर्भ मे एहू दिस ध्यानाकर्षित होइत अछि कि कोनो भाषाक 'प्रोफेशनल क्रिटीक' प्रायः रचनाक सत्य/मर्म केँ सैद्धांतिक व्याख्याक फ्रेम मे अनेरो ओझरा कऽ जीवन-विवेक सँ सर्वथा फराक व्याख्या प्रस्तुत करबाक अभ्यस्त होइत छथि, जखन कि तकरे सामानान्तर रचनाकार द्वारा कयल गेल आलोचना अकादमिक आलोचनाक प्रतिपक्ष मे ठाढ़ नीक व्याख्याक उदाहरण सोझाँ मे रखैत अछि। अँगरेजी मे टी.एस. इलियट, ई.एम. फॉस्टर, सूसन सौन्टैग, जर्मन मे स्टीफन ज्विग, फ्रेंच मे पॉल वेलरी, नाईजीरिया सँ केन सारो वीवा, अफ्रीकी देश सँ न्गुगी वा थ्योंगोक लिखल आलोचना एहि बातक सशक्त उदाहरण प्रस्तुत करैत अछि।

किरणजीक आलोचना हुनक मूलधर्म नहि छलनि। आलोचना हुनका लेल आपद् धर्म छलनि। जखन-जखन हस्तक्षेप करब अत्यन्त आवश्यक बुझना गेलनि, तखन-तखन ओ एहि महती दायित्वक निर्वहन गंभीरतापूर्वक कयलनि। विद्यापतिक संदर्भ मे पाँच गोट निबंध लिखि किरणजी ताहि भूमिकाक निर्वहन कयलनि। आलोचनाक जाहि तरहक दृष्टि सँ हुनकर प्रतिभा/वाग्मिता संचालित होइत रहल तकर आजुक संदर्भ सँ जँ बूझी तँ 'सबाल्टर्न थियरी' एहि मे मदति करैत अछि। प्रभु वर्गी बुद्धिजीवी सँ इतर किरणजीक नजरि मे मिथिलाक गरीब, निस्सहाय, विपन्न आ भोलानाथ सँ कखन दुखं हरब के प्रश्नाकुलता सँ जल ढारनिहार अधिसंख्य जनताक अनाम इतिहास छलनि। एकर प्रमाण अपन निबंध 'फकड़ा', 'मैथिली शब्द समाज', आ 'हस्तलिखित पत्रिका मे ओ प्रस्तुत कयने छथि।

अपन पोथी 'द स्ट्रक्चरल ट्रांसफॉरमेशन ऑफ पब्लिक स्फेयर' मे जुरगेन होबरमास कहैत छथि कि ''सबटा सामाजिक जीवन केर मूल आधार मुक्तिक कामना थिक।'' किरणजीक संदर्भ मे हेबरमासक एहि उक्ति केँ हम व्यवहृत करब आवश्यक बुझलहुँ, किएक तँ कविता, कथा आ आलोचनात्मक निबंध-सबमे हुनकर मूल स्वर मुक्तियेक कामना थिक। तकरा लेल पूर्ववर्ती, समकालीन आ परवर्ती सब रचनाकार सँ ओ सतर्क/तर्कसंगत बहस कयने छलाह। आचार्य रमानाथ झा सँ विद्यापतिक प्रसंग अपन असहमति व्यक्त करैत किरणजी लिखने छथि, ''प्रो० रमानाथ

झा एक डिग्री आरो बढ़ि गेलाह। विद्यापतिक राधा-कृष्ण केँ महारानी लखिमा आ महाराज शिवसिंह सिद्ध करबाक प्रयत्न कयलनि। अर्थात् हिन्दीक जगत मे हुनक गीत समस्त मनुष्यक श्रृंगार-खेल छल से रमानाथ बाबूक मतेँ रानी लखिमा ओ राजा शिवसिंहक खेल मे परिणत भ' गेल।'' तत्कालीन व्याख्या सबहक आलोक मे किरणजी केँ रमानाथ बाबूक स्थापना मे स्पष्ट 'खेल' देखा पड़लनि आ हम एहि पर जोर द' कए कह' चाहैत छी कि अभिजात दृष्टिवला क्यो रचनाकार एहि कथित 'खेल' सँ फराक नहि सोचि सकैत छलाह। जेँ कि किरणजीक इतिहास-दृष्टिक मूल उत्स मिथिलाक जन समाजक जीवन-विवेक सँ निर्मित भेल छल ताहि दुआरे सत्ता संपोषित इतिहास दृष्टि सँ हुनकर मत फराक छलनि। आजुक नव इतिहासकार इतिहास केँ बुझबा लेल जाहि तरहेँ साहित्य, आख्यान आदि केँ सेहो एकटा आधार मानैत 'निम्नवर्गीय प्रसंग' अर्थात् 'सबाल्टर्न' केँ एकटा सशक्त आधार मानि कए परिभाषित करैत छथि, से किरणजीक संपूर्ण निबंध साहित्यक विवेचना मे हमरा साफ-साफ देखा पड़ैत अछि।

जाहि हास्य रस केँ एखन धरि काव्यशास्त्रज्ञ सब रोचकता/लोकप्रियताक पर्याय के रूप मे ग्रहण करैत मैथिली साहित्य मे तकर प्रतिष्ठापनक हेतु अपस्याँती आलोचना लिखलनि तकरा किरणजीक आँखि शास्त्रक अवगाहन करितो सामाजिक जीवनक परिचालन मे देखि कए विवेचित कयलक। किरणजी प्रश्न करैत छथि, ''मैथिल-समाज मे हास्य रस एतेक जनप्रिय किएक अछि? हास्य रस की थिक, तकरे विश्लेषण हम करब। हास्य रसक आलंबन विभाव थिक- विकृत आकार, वाणी ओ चेष्टाक लोक। उद्दीपन विभाव ओकर चेष्टा जाहि सँ रूपवाणी ओ कार्य मे विकार बढ़ि जाइक। अनुभाव थिक आँखि मूनब वदनक विकास अर्थात् मुँह प्रफुल्लित होयब। व्यभिचार भाव मे अछि हर्ष आ स्थायी भाव हँसी।'' एहि शास्त्रीय विवचेनाक पश्चात् तुरत्ते किरणजी उदाहरण हेतु मिथिलाक सामाजिक धरातल सँ उदाहरण दैत छथि, ''ककरो हीनावस्था की हर्षक विषय थिक? आ, यदि अपन बाप वा बेटाक पीठ पर कुब्बर रहय? अपन बाप वा बेटा बकलेल रहय तँ हँसी लागत की दुःख होयत?'' हास्यपोषित रचनाधर्मिता आ उपहास मे अनेरो प्रमुदित होइत मैथिल वाग्मिता की कहियो आलोचनात्मक दृष्टि सँ एना आत्मालोचन कयलक अछि? 'भलमानुष'क जवाब मे



'वनमानुष' रचनिहार ज्ञानशिशु मैथिल रचनाकार लोकनि 'भलमानुष' केर रचना-संसारक स्त्री-समाज, पारो आ रतिनाथक काकी वा 'साँझक गाछ' के भौजीक दृष्टिकोण सँ अपना आप केँ, अपन स्त्रीक अस्मिता विरोधी समाज केँ तटस्थ भ' क' देखबाक चेष्टा कयलनि?

अत्यंत दुःखद प्रसंग ई अछि कि जाहि हरिमोहन बाबूकेँ मिथिलामे हिन्दीक प्रेमचंदवला लोकप्रियता आ साहित्यिक प्रशंसा भेटलनि, सेहो अपन रचना मे हास्ये केँ प्रमुख बनाकए सोझाँ अनलनि। किछु वर्ष पूर्व 'आरंभ' पत्रिका हरिमोहन झा पर विशेषांक बहार केने छल, मुदा ताहू मे क्यो हुनकर हास्य पूरित रचनाक एहि तरहें शल्य क्रिया नहि कयने छलाह जेना किरणजी। अपन समकालीन हरिमोहनबाबू पर लिखैत किरणजी कहैत छथिन, ''कन्यादानक झारखंडी दयाक पात्र थिक, नहि कि हँसीक। कनेक डूबि क' देखियौक; जे झारखंडी अपन बेटा-भाय रहैत तँ केहेन लगैत?'' तकरा बाद किरणजी आगू लिखैत छथिन, ''जेना भारतीय मनोभाव बदलि रहल छैक, अँगरेजी वा संस्कृत अथवा फारसी किछु पढ़ओ, मुदा अपन परंपरा भारतीय मान' लागल अछि, एहि भावनाक जतेक विकास होयत-संस्कृत साहित्यक संग आत्मीयता बढ़ल जायत आ अंत मे 'खट्टर काकाक तरंग पढ़ि ककरो हँसी नहि लागत। हरिमोहनबाबू हास्य सम्राट नहि रहि जयताह।'' विचारणीय अछि कि मुक्तहस्त वला भाव सँ साहित्यिक पदवी आ विशेषणक राय बहादुरी बाँटनिहार आलोचकक तखन केहेन स्थिति हेतनि जखन हरिमोहनबाबू 'हास्य सम्राट'क पदवी सँ च्युत भ' जेताह!

किरणजी कोन समाजक स्वप्नद्रष्टा आ पक्षधर छलाह से एहि सँ फड़िछाइत अछि। कोन वर्ग आ वर्ण हुनका नजरि मे प्रमुखताक अधिकारी छल से साफ होइत अछि। कहल जाइत अछि कि सब सँ कठिन काज होइत अछि अपन समकालीन पर लीखब। किरणजी अपन समकालीन रमानाथबाबू आ हरिमोहनबाबूक दृष्टिकोणक समीक्षाक पश्चात् आजुक मैथिली साहित्यक सत्ताधिपति श्री चंद्रनाथ मिश्र 'अमर'क पद, ''विष्टी ले दँतखिष्टी जकरा जोड़ा बड़द द्वार पर तकरा' पर टिप्पणी करैत लिखैत छथि, ''जे विष्ठीक हेतु दंतखिष्टी करैत छल से अपन द्वारि पर जोड़ा बड़द बान्हि लेलक-धन अन्याय सँ अर्जन कयलक तेँ ओकर प्रति द्वेष

अछि, संगहि अकर्मण्य छी तँ अपन द्वेष भावना केँ ओकर उपहास क'क' सांत्वना दैत छी। यदि कर्मठता रहैत, सामर्थ्य रहैत तँ क्रोध-क्षोभ होइत। आ ओहि अन्याय विरोध मे भिड़ि जयतहुँ।'' से श्री अमरजीक साहित्य मे वृत्ति आ प्रवृत्ति कोनो रूप मे नहि कहियो भेटल आ नहि कहियो भेटबाक आशा कयल जा सकैत अछि।

किरणजीक चिंता धारा मे अपन अतीतक महान गौरव आ विश्व गुरु हेबाक कथित दंशक रूप मे विद्यमान नहि छल। सांस्कृतिक राष्ट्रक हठवादी मस्तिष्क अपना ओतय सब आविष्कार आ सबटा महानताक विद्यमान हेबाक दावा तँ करिते अछि संगहि अपन अस्तित्वक रक्षार्थ कोनो-ने-कोनो शत्रुक खोज अवश्य करैत रहैत अछि। कहबी छैक पड़रू कुदकैत अछि खुट्टाक बलेँ। किरण जी एहि बात पर विचार करैत स्पष्ट कहैत छथि, ''जँ-जँ मैथिल समाजक चिंतन-धारा बदलत 'अपन' शब्दक परिधि पैघ होयत, तँ-तँ स्नेह ओ सहानुभूतिक क्षेत्रक विस्तार भेल जायत, संगहि लोक कर्मठ होइत, गुणक अर्जन करैत जायत तँ अपना मे हीनता नहि पाओत, तँ निंदा कुचेष्टा द्वारा आनक अपकर्ष-ज्ञापन करबाक प्रवृत्ति कम भेल जयतैक। फलतः कुचेष्टात्मक वर्णनक अपेक्षा सहानुभूत्यात्मक वर्णन लेखक करत आ समाजो तकरे पसिन्न करत।''

किरणजीक चिंतन आ संवेदनशीलताक परिचायक हुनकर पारदर्शी भाषा स्पष्ट रूप सँ अपन मंतव्य केँ फड़िछबैत अछि— 'सबार ऊपरे मानुष सत्य'। मानवताक प्रति द्वेष जा वृहत समाजक प्रति अपनत्वरहित दृष्टिकोण कोनो साहित्य उद्देश्य नहि हेबाक चाही। किरणजीक जीवन-विवेक 'अपन' शब्दक विस्तीर्णता केँ सांकर बना कए समाज केँ देखबाक दृष्टिक विरोध करैत अछि। हमरा लोकनि आइ जाहि संस्कृति मे रहि रहल छी आ जतए रेडिकल ढंगक निष्कपटता केँ अर्थहीन बनाओल जा रहल अछि जतय हमरा जनैत संस्कृति के मुख्यधारा बौद्धिक कर्म केँ नित्ठाह अप्रासंगिक मानि लेने अछि आ ओकरा शक्ति अथवा दमनक शस्त्र के रूप मे व्यवहृत क' रहल अछि। हमरा जनैत जाहि बौद्धिकता केँ बचा क' राखल जयबाक चाही से थिक आलोचनात्मक, द्वंद्वात्मक, संशयवादी बौद्धिकता। ओ बौद्धिकता जे रहस्य आ तिलिस्मक आवरण केँ हटबैत वस्तुस्थितिक



निदर्शन क' सकय। किरणजीक आलोचना 'प्रोफेशनल क्रिटिसिज्म' केँ विरोध मे लिखल ओहि आपद् धर्मक दायित्वपूर्ण निर्वहन लेल छल जे आइयो व्याख्याक 'पोलिमिक्स' मे बेशी अपस्याँत अछि। रचनाक सामाजिक जीवन आ काव्यत्व सँ बेशी सैद्धांतिक घटाटोप केँ चिन्ह' मे समय, प्रतिभा आ ऊर्जा जियान करैत अछि। तेँ आइयो मिथिला समाजक परिवर्त्तन क' सकबा मे समर्थ व्यक्ति भोग लिप्सा मे डूबल अछि। नेने सँ सूनल आशीर्वचन 'भगवान भोग देथुन' जाहि समाजक अभिजात वर्गक यथार्थ थिक ओहि समाजक लेल आइयो मेहनति-मजूरी कयनिहार श्रमिक वर्गक अस्मिता आ लोक-संस्कृतिक कोनो मोल नहि अछि। नहि तँ एना कोना संभव भेल कि विष्टी लए जे दँत खिष्टी करैत छल तकर जीवनक करुणा किरणजी केँ विगालित कयलकनि, मुदा अमरजी केँ ताहि मे हास्यक तत्व दृष्टिगोचर भेलनि।

किरणजीक आलोचना साहित्यक एकटा प्रमुख प्रवृत्ति अछि कोनो तरहक दासता अथवा गछाड़ के विरोध। अकादमिक आलोचना आचार्य लोकनिक मत केँ अंतिम सत्य अथवा दास्य भावक प्रकटीकरणक एकटा अवसर मानिक' चलैत आयल अछि। किरणजी एहि प्रवृत्तिक प्रतिरोधी रचनाकार छलाह, ताहि दुआरे आलोचनाक प्रसंग अपन पक्ष स्पष्ट करैत ओ लिखैत छथि, ''हमरा जखन आलोचना करबाक विचार भेल तँ हम बड़ असमंजस मे पड़ि गेलहुँ। कोन कविक काव्यक आलोचना करू? मैथिल समाज मे सीराभट्ठाक तेहन ने संस्कार बैंसल छै जे नमस्कार-पात, पयर धोयब सहित मे अपमान-मान मानल जाइत अछि से पुनि अद्भुते वस्तुक आधार पर। ने वयक विचार, ने विद्याक, ने चरित्रक।'' एहना मे आलोचना संज्ञाक अंतर्गत जाहि तरहक कर्म मैथिली मे भेल आ आइयो कथित वरेण्य लोकनिक द्वारा संभव भ' रहल अछि ताहि प्रसंग बाद मे विचार करब। एतय ध्यातव्य अछि कि किरणजी छिद्रान्वेषी आ निंदात्मक आलोचनाक पक्षधर नहि छलाह आ 'ने वयक विचार, ने विद्याक ने चरित्रक' आधार पर गदगदी आलोचनाक पक्षधर तँ एकदम्मे नहि छलाह। हम अपन एहि आलेख मे जे पहिल उद्धरण देने छी ताहि मे किरणजी अपन आलोचना कर्मक मादे बात फड़िछौलखिन अछि, मुदा तकरा बादो ओ कोनो तरहक गछाड़ मे पड़ि क' कमजोरी केँ देखि आँखि नहि मुनने

छथिन। एहू तथ्य सँ हुनकर दास्यविरोधी मानसिकताक परिचय भेटैत अछि। जाँक देरीदाक मत सँ सेहो किरणजीक एहि मनोभावक पुष्टि होइत अछि। अपन पोथी 'पॉलिटिक्स ऑफ फ्रेंडशिप' मे देरीदा लिखने छथि कि मित्रता कें निमाहबाक अर्थ थिक मित्र केर मानस मे शत्रु भ' जेबाक स्थितिक सम्मान करब। ई स्वतंत्रताक निशानी थिक। ईशनाथ झाक काव्य कृति 'माला'क प्रसंग आलोचना लिखैत किरणजीक एहू दुनू मनोभावक निदर्शन होइत अछि। एक्के पंक्ति मे जँ हुनक मनोभावक परिचय दी तँ ओ कहैत छथिन, ''हिनक 'कविता'क अध्ययन सँ हमर धारणा तँ यैह भेल अछि जे हिनका कविता रचब मे बड़ आयास करय पड़ैत छनि।''

आयासी काव्य सँ परिपूरित मैथिली कविता मे ओहने काव्यक प्रतिष्ठापना कयल जाइत रहल जकर काम्य 'बहुजन हिताय आ बहुजन सुखाय' के अपेक्षा 'मूसल सँ जे मानय से थिक मुसलमान' छल। कोनो युगद्रष्टा आ स्वप्नद्रष्टा रचनाकार एहि तरहक द्वेषपूर्ण आ 'दँतखिष्टी'क रचयिता कें कवि नहि मानि सकताह, मुदा सर्वाधिक समादृत आ वंदनीय एहने लोक अछि। एहि बात कें किरणजी जनैत छलाह। अपन 'प्रयोग तथा परंपरा' नामक निबंध मे ओ लिखैत छथि, ''परंपरावादी कें एकर सबहक कोनो भय नहि रहैत छनि। सभ दिन प्रयोगवादी थोड़ आ परंपरावादी अधिक रहैत अछि तञ कोनो प्रकारक भय एहि वर्ग कें नहि रहैत छै।'' ताहि दुआरे जाहि महाकाव्यात्मकताक युग आइयो ओहि ठाठ-बाटक संग जुटल अछि, जे पूर्व आधुनिक प्रवृत्ति छल, तकर कारण परंपरावादी आ अवसरवादीक संख्याबल अछि। हमरा विस्मय होइत अछि किरणजीक स्वप्नदर्शिता पर। आइ जखन आधुनिकता सँ उत्तर-आधुनिकता धरिक गप पुरान पड़ि गेल अछि तखनहु अपना ओहिठाम काव्यशास्त्रक निकष पर आठ सर्ग आ धीरोदात्र नायके टाकेँ साहित्य मे स्थान भेटि रहल अछि। हुनके दिल्ली दरबारक पुरस्कार देल जाइत अछि आ तकरा पक्ष मे भिन्न-भिन्न तरहक तर्क-वितर्क हास्यास्पद ढंग सँ प्रस्तुत कयल जाइत अछि।

किरणजीक साहित्य-विवेक हुनक विशुद्ध सामाजिक-विवेक सँ बनल छल, तेँ कथित मुख्यधारा सँ बाहर जे किछु ओ देखलनि तकरा गहिंकी



नजरि सँ देखबे टा नहि केलनि, ओहि पर गंभीर विमर्शक लेल विचार सेहो लिखलनि। चर्चा होइक आ ताहि सँ जे बाट खुजय से सर्वहाराक कल्याणार्थ होइ-यैह मनोभाव 'मैथिलीक शब्द समाज' नामक अपन निबंध मे किरणजी व्यक्त कयने छथि। हुनक स्पष्ट मत छनि जे, ''मैथिलीक दुर्भाग्य सँ हेबनि सँ आइ धरि मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थे टा मैथिली-साहित्यक निर्माण करैत छल, तञ मैथिल समाजोक रूप तदनुरूपे बनल रहल। जँ-जँ मिथिलाक आन-आन वर्गक लोक एहि क्षेत्र मे आओत, मैथिल समाजक रूप बदलल जायत।'' किरणजीक एहि उद्धरणक आलोक मे आजुक मिथिलाक यथार्थ कें देखी तँ गाम-घरक चौक-चौराहा, बाजार-हाट आ 'पब्लिक स्फेयर' मे प्रवासी मैथिल सबहक संग आयल पंजाबी आ हरियानबी शब्द सब दुटप्पीक बीच मे अहर्निश बहराइत कान मे जायत। प्रवासी बोनिहार सबहक धीया-पूताक व्यवहृत भाषा मे खाँटी उच्चारण आ गामक परंपरा कें ताकब आ से नहि देखि माथ धुनब व्यर्थ अछि। संपूर्ण सभ्यता प्रवासेक देन अछि आ प्रवासक कारण संपूर्ण देश मे ठाम-ठाम जाहि तरहक मिथिला बनि आ बसि रहल अछि तकर जीवनक यथार्थ मिथिलाक खाँटी ग्रामीण यथार्थ नहि भ' सकैत अछि। स्वप्नदर्शी किरणजीक स्थापनाक निदर्शन आजुक संक्रमणशील मैथिल समाजक भाषामे अक्षरशः सत्य देखा पड़ैत अछि।

शिष्ट साहित्य मे जे गीत पाओल जाइत अछि तकर क्यो-नहि-क्यो निश्चिते रचयिता होइत अछि, मुदा लोकगीत, लोक साहित्य, लोकवार्ता, लोक धुन आ खिस्सा-पिहानीक संगहि फकड़ा सबहक रचयिता अज्ञात होइत अछि। लोकगीत आदिक कोनो निर्धारित मानकीकृत स्वरूप नहि होइत अछि आ रूप (फॉर्म) मे परिवर्तन होइत रहैत अछि। एकर रचयिता कें कोनो तरहक यश लिप्सा नहि रहैत छैक। मुदा आश्चर्यक विषय ई अछि कि आलोचनाक प्रभु वर्गक ध्यान एहि दिस कहियो नहि गेल कि एकर सबहक अज्ञात रचयिता लोकनि यश लिप्सा सँ मुक्त रहि जे रचना समाज कें देलखिन से समाज कें कोन-कोन रूप मे प्रभावित कयलक? मैथिल समाजक बीध-व्यवहार आ पावनि-तिहार मे स्त्रीगण सब जे गीत गबैत अछि तकर रचयिता सबहक ना ने क्यो जनैत अछि आ ने जानल जा सकैत अछि। मुदा कोनो-ने-कोनो श्रम करबाक काल मे अनायासे

लगनी, कजरी, बारहमासा, चैतावर, समदाओन, बहगमनी, सोहर, गोसाउनिक गीतक रूप मे निकसैत मोनक भाव संस्कृतिक एक गोट अभिन्न अंगक रूप मे रूपांतरित भेल जाइत अछि। की एहि सबहक बिना हमरा लोकनि मिथिलाक संस्कृतिक कल्पना क' सकैत छी?

किरणजीक आलोचना-दृष्टि एहि प्रश्न सँ बहुत अनुरागपूर्वक संवाद करबाक चेष्टा करैत अछि। अपन गहन विश्लेषणपरक निबंध 'फकड़ा' मे ओ मैथिल समाजक व्यापकता केर मूल्यांकन करैत बहुत तर्कसंगत ढ़ंगे सांस्कृतिक आलोचना प्रस्तुत कयने छथि। एहि आधार पर हुनका निधोख जन-बौद्धिक अथवा 'पब्लिक इंटेलेक्चुअल' कहल जा सकैत अछि। एलेन लाइटमैन अपन लेख 'द रोल ऑफ पब्लिक इंटेलेक्चुअल' मे एकर माने फरिछबैत कहैत छथि, ''एक आदमी जे अपन खास विषय मे प्रशिक्षित होइत अछि, जेना जीवन-विज्ञान (लाइफ साइंस), भाषा विज्ञान, अर्थशास्त्र, साहित्यिक आलोचना वा जे ओ अपन कॉलेज/विश्वविद्यालय मे पढ़बैत अछि। मुदा एहि विषय सब मे सँ कोनो एकटा मे प्रशिक्षित कोनो विद्वान जखन ई तय करैत अछि जे ओ आम जनताक हितेक टाक निमित्त लिखताह, काज करताह आ कतहु व्याख्यान देताह, तँ ओ 'पब्लिक इंटेलेक्चुअल' भ' जाइत छथि।'' एहि मानदंडक आधार पर देखी तँ 'फकड़ा' पर शोधपरक तरीका सँ लिखब समाजशास्त्री अथवा समाजशास्त्रीय ढंग सँ साहित्यिक आलोचना कयनिहार मैथिलीक पेशेवर आलोचक लोकनिक ई काज छल। किरणजी 'फकड़ा' निबंध लिखि क' समाजशास्त्री, 'मैथिली शब्द समाज' निबंध लिखि कए भाषाशास्त्री, 'भू-परिक्रमणक प्रसंग विद्यापतिक रचनाक अनुसंधानपरक समीक्षा क' साहित्यिक इतिहासकार, कविता लिखि कए कवि, मैथिलीक उत्थानक लेल विद्यापति पर्व मनाकए गामे-गामे घुमनिहार प्रचारक आ आंदोलनकर्ता, आदि-आदिक भूमिकाक निर्वहन एक संग कयलनि। आ, से सफल आ परिनिष्ठित ढंग सँ। ताहि आधार पर हुनका मैथिलीक पहिल 'पब्लिक इंटेलेक्चुअल' कहि क' हम कोनो अतिशयोक्ति नहि क' रहल छी।

■



# किरणजी आ हुनक प्रगतिशील चेतना

**अविनाश**

**किरणजी** हमरा लेल अनचिन्हार छलाह। नाम आ ओहि नाम मे निहित मर्म केँ बूझब, दुनू फराक बात थिक। किरणजी एक टा आंदोलनकारी छलाह अथवा यैह जे जाहि विद्यापति समारोहक मादे हमरासभक सर्वश्रेष्ठ स्मृति अछि, ओकर नींव किरणेजी रखने रहथि-आदि वस्तुनिष्ठ जानकारी सभ। किरणजीक महत्त्व एहू सँ बेसी भ' सकैछ अथवा ओ जाहि तरहक भाषा आ समाजक कल्पना कयलनि, ओकरा बुझबाक चेष्टा संगे हम कहियो सक्रिय नहि रहलहुँ। ई ओहि युवकक स्वीकारोक्ति अछि, जे अपन भाखा आ ओकर रचनाकार सभकेँ ओतबो नहि जनैत अछि, जतबा ओकरा अपना केँ समृद्ध करबा लेल आ भाखाक प्रति अपन अनुराग, अपन ललक केँ विश्वसनीय बनेबा लेल जनबाक चाही। यैह स्थिति लगभग ओहि सभ युवा रचनाकार सभक थिक, जे एक टा हल्ला गुल्ला आ प्रलापक संगे साहित्य मे सक्रिय छथि। हुनका सभ केँ एहि सँ कोनो मतलब नहि जे हुनक विरासत की छनि! विरासत केँ चीन्हब अहू दुआरे जरूरी अछि, जे एहि सँ बुझबा मे अबैछ जे पुरान समाजक व्याख्या कोन-कोन तरहेँ भेल अछि। मैथिली मे हमर सभक पीढ़ीक आरंभ जाहि तरहेँ भेल अछि, ओ विरासत सँ विलगावक संग भेल आरंभ अछि। एकर एकटा खास कारण थिक। हमरसभक पूरा दौर महत्त्वाकांक्षाक दौर थिक। अर्थशास्त्र एकरे बजारक काल कहैत छै। बजारे

हमरासभक महत्त्वाकांक्षा केँ कम श्रम सँ अर्जित सफलता सँ जोड़ैत अछि। आ विरासत केँ चिन्हब तँ श्रमसाध्य कार्यव्यापार थिक! एकरे सँ बचबा लेल हमरासभ अपन-अपन एकपेरिया ताकने घुरैत छी आ एक टा संकीर्ण, कंजूस आ अर्थहीन रचनाकार मे बदलि जाइत छी।

इतिहासक हजार-हजार खाम्ह होइत अछि। सभ टा खाम्ह तँ हमरा सभक विरासत नहि भ' सकैछ! हमरा सभक बहुत रास रचनाकार अपन साहित्यक माध्यमे मनोरंजन, पांडित्य, आत्मश्लाघाक प्रचारक संगहि विशिष्टक वंदना करैत रहलाह अछि, ओ हमर विरासत किन्हु नहि भ' सकैत छथि। मुदा बहुत रास नवागंतुकक लेल भइयो सकैत छथि! तेँ हमसभ अपन-अपन विरासत चुनैत छी।

मोहन भारद्वाजजी आ अशोकजी हमरा किरणजीक साहित्य उपलब्ध करौलनि। नव लोकक लेल मैथिलीक दुर्गम दुर्लभ साहित्य केँ ताकब-हेरब सेहो तँ एकटा दुर्गम-दुर्लभ कार्य थिक! अस्तु, हम किरणजी केँ मनोयोगपूर्वक पढ़लहुँ आ पढ़बा काल एहि बात पर चकित होइत रहलहुँ जे किरणजी सचेत रूप सँ एहने पात्र सभक कथा लिखलनि, जिनकर जगह हमरा सभक सवर्ण समाजक मोनक सीमान सँ बाहर अछि। हम ओहि सोलकन्ह समाजक गप कहि रहल छी, जे आइ-काल्हि भारतीय साहित्य आ राजनीतिक केन्द्र मे अछि। मुदा महत्त्वपूर्ण ई जे किरणजीक साहित्य मे सोलकन्ह समाजक उपस्थिति ठीक तखने अछि, जखन आन-आन भारतीय भाषा साहित्य मे सेहो दलित साहित्यक जोर अछि। तेँ ई नहि कहल जा सकैछ जे ओ आयातित संदर्भक संगे दलित जीवनक साहित्य रचलनि।

आजादीक बाद...सत्तरि आ नब्बेक दू दशकक भारतीय साहित्य मे सोलकन्ह समाजक वकालति देखबामे अबैत अछि। खास क'क' मराठी साहित्य मे। मराठी मे एक सँ एक दलित साहित्य रचल गेल। चाहे ओ अछूत हो, जूठन हो, छोरा कोल्हाटी का हो, वा अक्करमाशी हो। मुदा महाराष्ट्रक स्थिति भिन्न छल। मैथिली साहित्य आ समाज मे जखन हम अपन नजरि गाड़ैत छी, तँ देखबा मे अबैछ जे सोलकन्ह समाजक जुटान... सोलकन्ह समाजक स्वर (विद्रोह नहि) बहुत क्षीण अवस्था मे कतहु-कतहु अछि। ने कोनो पैघ आ हिंसक दमन आ ने कोनो कारगर प्रतिकार।



विधानसभा आ संसद सभा मे ओहि थोड़-बहुत आबादी वला सवर्ण समाज सँ समग्र मिथिलाक प्रतिनिधि बनैत रहलाह, जे छोटका लोक केँ अपना भाखा समाजक हिस्सा कहियो नहि बन' देलखिन। व्याकरणक एकटा सीमारेखा, डरीर पाड़ि देलखिन आ भाखा केँ ओकरा भीतर धकेल क' लोक सभ सँ दूर क' देलखिन। किरणजीक साहित्य यैह व्याकरण आ सीमा रेखाक निषेधक साहित्य थिक।

एतबे नहि... सामाजिक ताना-बाना मे अंतिम आदमीक पहिल कथा कह'बला रचनाकार किरणजी भेलाह। ओना हमरा शिवशंकर श्रीनिवास एहि सूचना सँ समृद्ध कयलनि जे कुमार गंगानंद सिंह अपन एकांकी 'जीवन संघर्ष' आ कथा 'बिहाड़ि' मे दलित पक्षक विरल कथा कहने छथि। किरणजी दलित पक्षक सामाजिक रचनाकार तँ छलाहे, दलित मोनक विवरण सेहो एतेक संवेदनाक संग प्रस्तुत करैत छलाह जे हुनक संपूर्ण कथा साहित्य मे सोलकन्हक उपस्थिति बरजोरी नहि लगैछ। सोलकन्ह केँ सेहो मोन होइ छै, ओकरो मोन केँ ठेस लगै छै, ओकरो मोन नेह रखैत छै आ ओकरो मोन मे संबंधक संवेदना अपन उत्कर्षक संगे उपस्थित रहै छै. ..जे मेहनतिक चक्का मे हरदम फँसल रहैत छै आ जकरा बहार निकालबाक अवसरे नहि भेटै छै। सोचबाक, चिंता करबाक समय जकरा लग मे रहतै, वैह ने सोचि-सोचि क' कानत, प्रतिक्रिया देत आ मोन केँ पढ़ि सकत। हमरासभक अभिजात समाज केँ समये-समय छनि, किएक तँ हुनकर रोटी सोलकन्ह समाजक मेहनति सँ बनैत अछि! अभिजातक मैथिलीमे किरणजी छोटका लोकक लेल जगह बनौलनि आ हुनका समय मे ई एकटा बेस दुरूह काज छल।

किरणजीक सभ सँ चर्चित कथा छनि 'मधुरमनि'। विकलांग पतिक जिनगीक गाड़ी खींचैत कामगार पत्नीक मोनक कथा। पति मोचन पूछैत अछि, 'भानस भेलै?' आ मधुरमनि तामस सँ माहुर भ' जाइत अछि, 'हँ! भनसे टा? नौ टा तीमन सचार लागल राखलए! काज ने धंधा, तीन रोटी बंधा! दरबज्जा पर बैसल बैसल बात गढ़ैत रहता... भानस भेलै? भानस भेलै? मुदा जखन आन ओकरा उकसाब' चाहै छै, तँ मधुरमनिक मोन मोचनक प्रति बेस मुलायम भ' जाइत छै, 'से किए कहै छथिन ई! ओ भीख माँगत तँ हम हाथी सनक देह राखिक' की करब! ओ हमरा कमा

क' खुअबैत से बड़ बढ़ियाँ आ ओकर हाथ पयर भगवान हरि लेलखिन तँ भीख माँगत? ओकरा सन लूरि ककरा छै? पटिया उहे बीनैए! डाली, पथिया, ढाढ़ ककरा होइ छै ओकरा सनक? अपने कमाइ खाइए ने तँ आनक कमाइ? पिट्ठा पहलमान ल'क' हम की करब, जे भरि दिन डेंगबिते रहत। हमरा तँ एकटा कथो ने कहियो कहइए। उहे अछि तेँ हमरा सन मुँहजोरिक बास भ' सकल।'

ई कथा एकटा एहन पात्रक कथा थिक, जे दलितो अछि, अपना जीवनक आधार सेहो अपने अछि आ ओ पुरान पारंपरिक समाजक ओहि चलन केँ सेहो कोसै अछि, जे स्त्री सभ केँ पुरुखक बादक पाँती मे राखैए। मुदा ई सभटा विमर्श कथा मे सहज रूप सँ आयल अछि। कतहु सँ नई लागत जे पहिने किरणजी कथाक एजेंडा तैयार केने होथि आ तखन कथा लिखने होथि। खास बात ई जे हुनक पात्रक बोली बानी मे लोक-मोहाबराक चाशनी घोरल रहै अछि। जेना मधुरमनिक तमसाइत ई कहब जे काज ने धंधा, तीन रोटी बंधा! एहि सँ ई सिद्ध होइत अछि जे किरणजी अपन समाज, अपना भाखाक सरोकार सँ कते प्रवाहमय ढंग सँ संपृक्त छलाह।

मिथिला मे सवर्ण सोलकन्ह संघर्ष ओतेक तिक्त नहि रहलै। दुनू एक दोसर पर आश्रित अछि। सोलकन्ह समाज सवर्ण लोकनिक अन्न पानि पर आश्रित, तँ सवर्ण अपन संस्कार अनुष्ठान मे सोलकन्ह समाज पर आश्रित। तेँ मैथिली कथा मे जत' कतहु सोलकन्ह समाज आ पात्रक विवरण आयल अछि, एहि संबंध आश्रयक सीमा मे आयल अछि। किरणजीक कोनो पात्रक प्रतिरोध कहियो हिंसक रूपसँ मुखर नहि भेल। हिंसा तँ एकतरफ रहै। इक्का दुक्का कोनो-कोनो गाम मे छोट-छीन झंझटि पर ब्राह्मण कैथ-सोलकन्हक संगे जूतम पैजार करय, मुदा ओकर सांस्कृतिक विवरण भे एकर पूर्ण ध्यान राखल गेल जे ई पूरा समाजक यथार्थक रूप मे नहि सामने हो। मुदा मिथिलामे शांतिपर्वूक दमनक प्रतिरोध मे जनमल हिंसा सोलकन्ह मोनक एकटा यथार्थ अवस्स रहल हैत, तकर अनुमान लगाओल जा सकैछ।

जेना एकटा कथा अछि 'चनरा'। एकटा पढ़ल लिखल अभिजात युवक केँ ओ अपन जीवन संदर्भ सँ अर्जित विचार वैभवक आगाँ बौना



बना दैत अछि। 'अभिनव उत्तरा' सेहो एक टा सोलकन्ह स्त्रीक कथा अछि, जकरा लग (किरणजीक मुताबिक) गलती सँ सवर्ण समाज सन दपदपाइत गोराइ आबि जाइत छै। जखन ओ पहिल बेर सासुर अबैत अछि, तँ ककरो उत्साह नहि, प्रसन्नता नहि जे एकटा सुन्नर स्त्री घर मे आयल अछि। एकर उनटा ग्लानि होइत छै जे एकटा सुन्नर स्त्रीक जीवन एहि घर मे व्यर्थ चलि जेतै। मुदा जेँ ओ सुन्नर स्त्री सेहो श्रम आ प्रतिबद्धताक पृष्ठभूमि सँ अबैत अछि, तेँ ओ अपना भीतरक सुंदरता केँ सेहो अपन सासुर मे सिद्ध करैत अछि।

एहन कतेक रास कथाक संग किरणजी अपन भाखा साहित्य मे उपस्थित छथि। सोलकन्ह समाज आ स्त्री मोनक हुनक कथाक व्याख्या मैथिली आलोचना मे कोन तरहेँ भेल अछि, हमरा नहि बूझल, मुदा अखन आलोचनाक एकटा पोथी कर्मधारय मे हुनका हुनका तरहेँ बुझबाक जरूरी चेष्टा भेल अछि।

कतेको बेर हमरा ताज्जुब होइत अछि जे मैथिली साहित्य मे दलित पक्षक विपुल विवरण किएक नहि अछि। एकाध टा प्रसंग छोड़ि दिअ' तँ किए एकटा किरणजी हमरा सभकेँ भेटैत छथि... जखन कि मिथिला मे दलित एकजुटता आ समाजक मुख्यधारा मे अयबाक चेष्टाक विवरण हमरासभ केँ ऐतिहासिक दस्तावेज मे भेटैत अछि? मिथिला क्षेत्रक विद्वान प्रसन्न कुमार चौधरी आ पत्रकार श्रीकांतक पोथी **स्वर्ग पर धावाक** पन्ना उनटबैत हम देखलहुँ जे हिंदू महासभाक एकटा अपील पर 1928 के लगचिआएल सीतामढ़ी मे हिंदू सभक एक टा छोट जमात किछु अछूत केँ मंदिर मे प्रवेश करौलक। 1936 मे तिरहुत प्रमंडल मे मुसहर समुदायक किछु लोक सभ कतेको उन्नयन सभा आयोजित कयलनि। दरभंगा जिलाक समस्तीपुर अनुमंडल मे हरसिंहपुर नील फैक्टरीक मुसहर मजदूर सभ मजदूरी मे वृद्धिक माँग केलनि। मिलक मालिक ओकरा सभक माँग मानियो लेलक। मुदा किरणजी आ कुमार गंगानंद सिंह (शिवशंकर श्री निवासजी हमरा सूचना देलनि जे कुमार गंगानंद सिंह एहि घटनाक उपयोग अपन एकटा एकांकी मे केने छथि) केँ अपवाद छोड़ि दी, तँ ओहि कालक मैथिली भाखा मे छोटका लोकक ई माँग मानबा सँ इनकार क'

देलनि। ई इनकार अखनो जारी अछि। एहि सँ साफ होइत अछि जे मैथिली साहित्यकार लोकनिक लोकतंत्र कतेक संकीर्ण अछि।

किरणजीक मात्र कथे टा मे समाजक बहुसंख्यक विपक्षक आवाज अथवा रचना प्रक्रिया मे जनतांत्रिक आग्रह नहि भेटैत अछि, किरणजीक कवितो सभ परंपरा आ पुरान समाजक प्रति प्रश्नाकुलता सँ भरल अछि। कथा मे हमसभ काल्पनिक पात्र सभक माध्यमे अपन पक्ष राखि सकैत छी, मुदा कविता मे यैह पक्ष रखबाक लेल ऐतिहासिक पौराणिक सामाजिक तथ्य सभक मुखर प्रयोगक बेस गुंजाइश रहैछ। किरणजी एकरा नीक जकाँ साधलनि। मोहन भारद्वाजजी हमरा किरणजीक एकटा कविता सुनौने रहथि। कविता युवक लोकनि केँ संबोधित अछि। किछु पाँती अछि...

**विश्व के थर्रा रहल अछि, एक जर्मनकेर सिपाही**
**हस्तगत अछि एक व्यक्तिक, आइ रोमक बादशाही**
**कर्म्मबल सँ एक कुल्ली, ब्रिटिस केर साम्राज्य साजल**
**ताही ब्रिटिसक दास नृपतिक हम रहै छी पाछु लागल**

ई कविता 1939 मे लिखल गेल। तखन हमसभ गुलाम रही। अंगरेज सभक खिलाफ आंदोलन अपन अंतिम चरण मे रहय। द्वितीय विश्वयुद्धक आशंका फरिच्छ रहितो आजादी एक टा सपने रहय। छोट रैय्यत आ हुनका आगू पाछू लागल रह'बला प्रशस्ति गायक लोकनिक लहलहाइत फसील केँ ई कतहु सँ नहि लगैत छल जे आजादी भेटत। ओ मानि क' चलि रहल छलाह जे अंगरेज सभक राज रहत आ हमरा सभक आजादी लेल चलि रहल आंदोलनक आगि मे अपन-अपन घी तँ किन्हु नहि खसेबाक अछि। एही स्थिति केँ किरणजी अपन एहि कविता मे धिक्कारने छथि। जर्मनी प्रसंग दुआरे ई कविता इतिहास दृष्टिक मामिला मे कमजोर रहितो जातीय अस्मिताक कारणे अति महत्वपूर्ण भ' गेल अछि।

पौराणिक कथा सभमे सामंती ईश्वरक सत्ता केँ सेहो किरणजी अपन कविता सभ मे चुनौती देने छथि। 1955 मे लिखल सतयुग कविता मे ओ कहै छथि-

**सहि ने सकै छल आनक जे उत्कर्ष**
**मनुज तपस्या नाशि मनबै छल जे हर्ष**



**अपन देश मे**
**अपनो योग**
**अन्नो टा उपजा न सकै छल**
**घी मधु पान मखान हेतुएँ**
**जीभ न जकर सिहाइत रहै छल**
**कामी अकरी पर शोषणरत**
**से कहबै छल देब**
**विश्वक भाग्य विधाता!**

पाचांली प्रसंग सँ ल'क' कुरुक्षेत्र मे अर्जुनक कृत्यक मानवीय व्याख्या आ माटिक महादेवक प्रतिएँ व्यंग्योक्ति किरणजीक रचना मे काव्यमय गरिमाक संगे आयल अछि। पौराणिकताक प्रतिएँ एहि तरहक आलोचकीय दृष्टि किरणजीक खासियत रहनि। एतबे नहि, ओ मिथिलाक बसंत पर सेहो कविता लिखलनि आ प्रकृतिगामी कवि लोकनि केँ अपन ठेठ प्रगतिकामी अंदाज मे चुनौती सेहो देलनि।

**कहलनि जे, जखन,**
**प्रकृति सुंदरिक अंग अंग केर सुषमा वैभव अछि सूखल**
**तखन,**
**के बताह कवि भाँग पीबि स्वागत बसंत अछि गाबि रहल?**

'की गाउ' मे किरणजी कहैत छथि,

**पाखंडपनी ओ रूढ़िवाद कुल वैभव केर मिथ्याभिमान / जरि हैत जखन ई बसुंधरा सबतरि वासोचित समान / गैब तखन हम मेघराग घधरा सँ झहरत सलिल धार / कोइला बनि जायत शस्य श्याम संतप्त धरा सुंदर बिहार /**

**समयक प्रतिनिधि समायनुकूल मधुभाषी कोकिल तखन बनब मंजुल मातृमही मिथिला मे घर घर तिरहुत गान करब**

हमरा जतेक बुझबा मे अबैत अछि, ओहि सीमा मे किरणजीक साहित्य हमरा मिथिलाक एकटा पैघ सांस्कृतिक भूगोलक साहित्य लगै अछि। आ कोनो भाखा साहित्य केँ यैह आग्रह आगू ल' जा सकैत अछि।

■

# किरण आ मैथिली साहित्य

अशोक

काञ्चीनाथ झा 'किरण' अपन निबन्ध 'फकड़ा' मे मैथिली समाजक युवकलोकनि केँ सम्बोधित करैत एकटा फकड़ा कहलनि अछि,

**ने रूपे नीक ने रंगे नीक**
**जे हित करय सेहे नीक**
**सुन्नर महकारीक जंगलवास**
**काठ सन कुसियारक घर-घर चास॥**

**ने बयसेँ जेठ ने देहे जेठ**
**जकरा ज्ञान रहै सेहे जेठ**
**ललका महकारी केँ पैरक ठेस।**
**कारी जामुन बनय सनेस॥**

**कुल की? बाप की? गुनक करू मान**
**सितुआक पुत मोतीक के हयत समान?**
**मोतिक माय सितुआ कमलक माय थाल।**
**व्यासक माय गोढ़नी गुनक इहे हाल॥**

तहिना मैथिलीक साहित्यकारक लेल फकड़ा के आर अधिक उपादेय कहलनि अछि। ओ कहैत छथि जे कविता-कहानीक विलक्षण प्लाट अछि ओहि मे,

**बूढ़ बिआहय गामक सुख लेल।**
**उचगर हाट मे बारह बाट॥**
**आत्मा जानय पाप, माय जानय बाप।**
**गरिब गारि सन दोसर नहि गारि॥**
**दाइ ले लगै छनि टाट**
**दाइ तकै छथि टाटक फाट॥**
**बहय बड़द से भुस्सा खाय।**
**बकरी खाय बदाम॥**



**भीतर घिनाइ छनि चिनबार।**
**तनिकर चानन बड़ जगजियार॥**
**मने-मन चरित्र देखैत जाउ आ**
**कविता-कहानी लिखैत जाउ॥**

साहित्यक सम्बन्ध मे किरणक धारणा एकदम स्पष्ट छलनि। ओ साहित्यक प्रयोजन समाजक जागरण लेल मानैत छला। समाजक असली चित्र लेल ठेठ शब्द, स्पष्ट अर्थ, सोझ विलक्षण छन्द केँ ओ आवश्यक माानलनि अछि। ओ कहैत छथि जे मनुष्यक जीवन प्रणाली मे जँ जँ प्रदर्शन-आडम्बरक भाव अबैत गेल तँ तँ छन्दो झमटगर होइत गेल। रहबाक लेल चारिटा घर, आदर्श भेखक लेल धोती-तौनी, मिरजै पाग, भोजन मे दालि-भात छौ नौ तरकारीक नियम बनल तँ ताहि समाजक साहित्य मे आडम्बरपूर्ण नियमबद्धता आयल।

समाजक जागरण लेल किरण एहन साहित्य चाहैत छला जाहि मे पुरौनाक नाम पर शब्द-पाँतिक ढेर नहि भेटय। व्यर्थ पाँती वा शब्द नहि भेटय। ओ कहैत छथि जे, 'जेहेन काँच-कोचिल, उसिनल-पकौल भोजन तेहने भाषा-पद। मुदा पोषकता तँ उसिनल-पकौल सन तरल छौंकल मे नहि रहैत छै। वर तरल दुःखद भय जाइछ। तहिना कहि सकैत छी जे पण्डितक बहुत काव्य तरल तरकारीक समान गुणहीने नहि अस्वास्थ्यकर भय गेल छनि।' स्पष्ट अछि जे समाज लेल ओ एहन साहित्य चाहैत रहथि जे पोषकता सँ परिपूर्ण ओ स्वास्थ्यकर हो। किरणक साहित्यक सम्बन्ध मे ई धारणा साहित्यक पारम्परिक अवधारणा सँ फराक छल। ओहि अवधारणा सँ फराक छल जे साहित्यक अभिजात्य परम्परा ओ सौन्दर्य बोध पर आधारित रहल अछि। ओ एहि अभिजात्यक कटु आलोचक बनि हमरा लोकनिक समक्ष अबैत छथि।

**नैना मे लहुक लेश ने छै उपमान हेतैक सरोज कोना?**
**जागल छै छातीक हाड़ हाड़ चकबा बनतैक उरोज कोना?**
**पेट पीठ सटि एक भेल सोपान मनोजक हैत कोना**
**बच्चा बिलखै छै दूध बिना बनतै कहु सोमक घैल कोना**
**बतरी बंका झाउक बन मे हैत कोना मधुश्रीक विकास**
**अन्न न पेट न दम तन मे के गाओत मलार मनोहर रास॥**

किरणक आँखि मे मिथिलाक जनसामान्यक चित्र बसल छल। एहेन जनसामान्य जे अदौकाल सँ दरिद्रताक पराभव भोगि रहल छल। जेकरा लेल दूनू साँझक भोजन सपने बनल रहैक। जकर घरक चार नीचू नहि रहैक। रौद-गरमी, जाड़, बरसात मे जकर पराभव बढ़ि जाइक। जकरा लेल बसंतक कोनो महत्व नहि छल। महत्व छल त' अगहनक। ओहि अगहनक जाहि मे 'धुम-धुम मुस्सर 'डिकिर-डिक ढेकी' घर-घर मे तान दैत छै। जखन एहन मिथिलाक चित्र ओ विद्यापतियोक गीत मे नहि पबैत छथि त' कहि उठैत छथि, 'विद्यापति एक तँ बहुत गीत भगवतीक, गङ्गा, राधाकृष्ण तथा महादेबहिक लिखलनि। ओहि गीत सभ मे मिथिलाक चित्र नहि पाबि सकैत छी। जाहि गीत मे राधाकृष्णक नाम नहि अछि से बड़ साँकड़ भूमिक चित्र दैत अछि। ओ प्रगतिशील विचारक छला। राधाकृष्णक प्रेमक वर्णन बड़ दूरदर्शिता सँ कयलनि मुदा दृढ़मूल संस्कार के हँटा नहि सकलाह।' ओ कहैत छथि जे विद्यापतिक गीतक अनुसार मिथिला मे एकोटा कारी कन्या नहि छल। सभ गोरि छल। अत्तत्तह गोरि। गोरिएटा नहि। धनकानिओ खूब छथिन हुनक नायिका। सोन-मणि-मुक्ताक गहना छनि। चानन कस्तूरी लेपले रहै छनि। मस्तो तेहेन छथिन जेहेन धनी घरक खायल-पीयल देह वा कल्पना संसारक हुअय। ई नायिका सभ पढ़लि-लिखलि कामशास्त्रके जननिहारि छथि। गमैक लोक केँ ओ घृणाक दृष्टि सँ देखैत छथि। किरणजी पुछैत छथि जे, 'एहनि सोन सनि गोरि हीरा-मोतीक हार पहिरने पढ़लि-लिखलि ह्रष्टपुष्ट कयटा माउगि छलि हयति मिथिला मे? विषयो एकेटा। स्त्री ओ पुरुषक आकर्षण सम्बन्धी! स्त्रीक भिन्न-भिन्न बयसक वर्णन, अंग-प्रत्यंगक वर्णन, श्रृंगारक वर्णन, रति, विपरीत रति, कोबर-गमन, विरह, परपुरुष प्रेम, व्यभिचारक गोपन, अभिसार, सभठाम पंचसरक खेल! जेना हुनका समय मे पराधीनता, अत्याचार, अभाव आदि सब छले नहि।' 'किरणजी एहि सभ सँ अकच्छ भ' शंका प्रकट करैत छथि, 'विद्यापतिक समय मे पाठान आक्रमण बारम्बार भय रहल छल। देश अत्याचार ओ आतंक सँ ग्रस्त छल हयत। कखनहुँ तँ हमरा सन्देह होइछ जे विद्यापति पदावलीक बहुत गीत देशभक्त वीर शिवसिंहक महामंत्री दूरदर्शी कवि विद्यापतिक थिके नहि।' किरणजी मानैत छथि जे मिथिलाक जीवनक पूर्ण परिचय पयबाक लेल ब्राह्मण-क्षत्रिय सँ ल'क' डोम-दुसाध



धरिक जीवनक्रमक अध्ययन आवश्यक अछि। तहिना ओ मिथिलाक पूर्णचित्र देखबाक लेल पण्डितक काव्यक संग-संग लोक साहित्यक अध्ययन आवश्यक मानैत छथि। ओ कहैत छथि जे पण्डितक काव्य पाँच प्रतिशत लोकक चित्र अछि त' लोक-साहित्य पंचानबे प्रतिशत लोकक। एहिठाम ई मोन पाड़ि लेब आवश्यक जे उपनिवेशकाल मे 'लोक' शब्द केँ गमारक अर्थ मे संकीर्ण क' देल गेल जे एहि शब्दक व्यापकता के बहुत क्षति केलक। मिथिला मे वेद सँ पहिने लोक केँ रखबाक परम्परा विद्यमान रहल अछि। एहि दुनूक बीच आबाजाही सोंसे चलैत रहल अछि। 'लोक' जनसामान्यक अर्थमे प्रयुक्त होइत रहल अछि। एहिठाम पंचानबे प्रतिशत लोकक साहित्य कहब ध्यातव्य थिक।

ई बात स्पष्ट अछि जे देसिल बयना केँ सब जन मिट्ठा कहनिहार आ बनौनिहार जन-जनक कंठहार विद्यापतिक सौन्दर्य-चेतना अभिजात्यक सीमा के तोड़बा मे बहुधा सफल नहि भ' सकल अछि। मुदा सुपुरुष अथवा सत्यपुरुष केँ उत्कर्ष देनिहार विद्यापति लोकपुरुष के अवश्य चिन्हलनि। रमानाथ झाक कहब छनि जे ई विद्यापतिक उर्वर दिमागे छल जे अपन लग-पासक जीवन केँ देखलक आ ओहि जीवनक चित्र केँ चुम्बकीय सामर्थ्यक संग अपन गीत मे अभिव्यक्त केलक। हुनकर राधाकृष्णक गीत सम्पूर्ण पूर्वोत्तर मे पसरि गेल। मुदा अपन मिथिले मे नहि पसरि सकल। किरणजी एकर कारण राधाकृष्ण गीतक प्रचार नहि होयब के मानैत छथि। एहि लेल ओ यथास्थितिवादी पण्डितलोकनि केँ उत्तरदायी मानलनि अछि। ओ कहैत छथि जे, 'पण्डितलोकनि जाहि गीत केँ समाज मे जाय देलनि तकरे प्रचार भेल। गोसाउनिक गीत, उचिती आदि व्यावहारिक गीत मे कोनो विचार तारतम्यक अवसरे नहि छलैक। महेशवाणी-नचारी अपन रुचिक अनुकूल छलनि तेँ ओकर प्रचार होबय देलथिन आ राधाकृष्णक गीत केँ पोथी सँ बाहर नहि होबय देलनि।' एहि दूनू सन्दर्भ मे सामंती समाजक विद्वान राजपुरुष विद्यापतिक सामर्थ्य ओ सीमा केँ बूझल जा सकैत अछि। ई बूझल जा सकैत अछि जे आजुक नजरि सँ विद्यापति केँ देखब समीचीन नहि होयत। मुदा एहि मे एकटा पेंच एखनो फँसले अछि।

विद्यापति ओ हुनक समय मिथिला, मैथिल ओ मैथिलीक स्वत्वनिर्धारणक प्रस्थान-विन्दु थिक। कोनो रूप ओ विधा मे हो, ओ एखन धरि विमर्शक विन्दु बनले अछि। विद्यापति ओ विद्यापति पर्वक अध्ययन एखनो धरि चलिए रहल अछि। नारा आ मिथ बनि जेबाक बीच विद्यापतिक यथार्थ स्वरूप ओ अवदान केँ आँकब आइ मैथिली साहित्य आ समाज लेल जरूरी काज भ' गेल अछि। खास क' तखन जखन ओ मैथिल राष्ट्रीयताक प्रतीक बनि गेल होथि। से अहू कारणे जरूरी जे अजुको मैथिली साहित्य मे पण्डिताउ आ संकीर्ण समाजक चित्र उपस्थित करब रचनाकारलोकनिक दृष्टि-सीमा बनले अछि। हरिमोहन झा, ललित, राजकमलक आधुनिक चेतना, यात्रीक प्रगतिवादी चेतना आ किरणक प्रगतिशील लोकवादी चेतनाक बावजूद मैथिली समाजक चित्र मैथिली साहित्य मे तीस प्रतिशत सँ आगू नहि बढ़ल अछि। मिथिलाक सत्तरि प्रतिशत लोकक प्रवेश एखनहु धरि मैथिली साहित्य मे नहि भेलैक अछि। एखनहु मैथिली मे सामंतीकालक महाकाव्य धुरझार लिखल जाइत अछि आ साहित्य अकादेमी ओकरा पुरस्कृतो करैत अछि।

किरणजीक फकड़ा आ लोकसाहित्य दिस ध्यान आकृष्ट करायब हुनक लोकचेतनाक द्योतक थिक। ओ अपन 'आधुनिकताक आरम्भ' नामक निबन्ध मे मैथिली मे आधुनिकताक आरम्भ लेल फतूरी कविक अकाली कविता केँ देखबाक आग्रह मैथिली आलोचक लोकनि सँ करैत छथि। किरणजीक आशय स्पष्ट अछि, ओ कविवर चन्दा झा सँ आधुनिकताक आरम्भे मानबाक मैथिली आलोचक लोकनिक मान्यता पर ई कहि प्रश्न चिन्ह लगबैत छथि जे चन्दा झा मैथिली भाषाक प्रति एकनिष्ठ नहि छला। किरणजीक लेल मैथिली भाषा जन भाषा थिक। आलोचक रमानाथ झा सेहो एकरा जनभाषा कहलनि अछि। दुनू गोटे एकर आरम्भ ब्राह्मणेत्तर वर्ग द्वारा रचल साहित्य सँ मानैत छथि। रमानाथ झाक कहब छनि जे, 'अवहट्ठक रूप मे एहि भाषाक जे कोनो रचना उपलब्ध अछि से सब मुख्यत: पण्डितक रचना नहि, ब्राह्मणक रचना नहि, साधारण जनसमाजक साहित्य थिक। यथार्थ अर्थ मे लोक साहित्य थिक जकर रचना प्राय: डाक गोआर अथवा भुसुक राउत सदृश ब्राह्मणेत्तर जातिक कएल थिक।' किरणजी



अपन वर्णरत्नाकरक काव्यशास्त्रीय अध्ययन मे ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकर केँ सलहेसक गीत जातिक वस्तु मानैत छथि। हुनकर कहब छनि जे ज्योतिरीश्वरक आगू अनपढ़-निरक्षर समाज छल। ओकर रुचि, ओकर क्षमता केँ देखि रचना करय बैसल छला।

मैथिली मे लोकपुरुषक रूप मे नैका बनिजारा, सलहेस, लोरिक, दुलरादयाल, दीना-भद्री आदि लोककंठ मे लोकगाथाक रूपमे विद्यमान रहल छथि। भगैत मिथिलाक एक अद्भुत धार्मिक ग्राम्य-गायन-शैली थिक। एहि मे ओहेन महापुरुष लोकनिक गाथा गाओल जाइत अछि जे अपन जीवनकाल मे अद्भुत क्रियाकलापक माध्यम सँ अपन महत्ता कायम केलनि आ अपन जन्म केँ सार्थकतापूर्वक अलौकिक बना देलनि। एहि मे धर्मराज, ज्योति, कारु महराज, बेनी, बिसहैर, खिरहैर, कालीबन्दी, बरहम, हरियाडोम, गहील, अन्दू बाबा, मीरा साहेब आदि लोकपुरुषक जीवनगाथा भगैतक गायन के मुख्य आधार थिक। ई सभ लोकपुरुष वा मनुखदेवाक गाथा शौर्य, हिम्मति, पराक्रम आ जनकल्याण लेल जीवन अर्पित करबाक गाथा थिक। एहि सभ गाथा पर किछु काज भेल अछि। मुदा ने सभक संग्रह भेल अछि ने अध्ययनक व्यवस्थित प्रयास। जत' विद्यापतियोक सभ गीतक एक संग्रह पाठ शुद्धिक संग नहि आयल हो ओत' लोकगाथा आ लोकगीतक वैज्ञानिक रूप सँ संग्रहक कल्पना करब कोना सम्भव थिक। एहि लेल जे परिश्रम, दृष्टि आ धनक प्रयोजन अछि से एखन धरि सम्भव नहि भ' सकल छैक। ओना डा० ब्रजकिशोर वर्मा एहि लोक गाथा सभ केँ औपन्यासिक रूप देलनि। डा० प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन' आ डा० विश्वेश्वर मिश्र लोकगाथाक अध्ययनक क्षेत्र मे विशेष ख्याति अर्जित केने छथि। मैथिली रंगमंच पर कुसुमा-सलहेस केँ कुणाल आधुनिक रंग-शिल्पक संग प्रस्तुत क' चुकल छथि। नाटककार महेन्द्र मलंगिया लोकगाथा लोकनाट्य सभ पर एम्हर गम्भीरता सँ काज प्रारम्भ केलनि अछि। डा० महेन्द्र नारायण रामक एक स्वतंत्र पोथी कारिख पजियार पर आयल अछि। डा० अणिमा सिंहक लोक गीत संग्रह एक प्रसिद्ध पोथी अछि। मैथिली लोकगीत सभ मे स्त्री दुर्दशाक बहुत मार्मिक वर्णन भेल अछि। स्वयं स्त्री, स्त्रीक रूपमे जन्म लेबा सँ डराइत अछि—

धियाक जनम नहि दिअह विधाता
धिया डुबैत बीच धार
जाहे दिन आगे बेटी तोहरो जनम भेल
घरे-घरे ठोकल केबाड़ हे।

कोनो कन्याक जन्म सँ उल्लास नहि होइत अछि। मांय-बाप पर्यन्त ओकर स्वागत नहि करैत अछि। बेटाक जन्म सँ मायक सम्मान बढ़ैत अछि। आइयो एहि स्थिति मे कतेक परिवर्त्तन भेल अछि से विचारबाक विषय थिक। एहि क्रममे ई बात निश्चित जे बहुतो लोकगीत जाहि मे स्त्री दुर्दशाक मार्मिक वर्णन अछि, पुरुष द्वारा लिखल गेल। एहि गीत सभ मे भाग, करम के दोष दैतो दुःस्थिति सँ त्राण पयबाक, अपन स्थिति मे परिवर्त्तनक आकांक्षा लुप्तप्राय रहल।

स्त्रीक मामिला मे आधुनिक लिखित साहित्य आरम्भे सँ सजग ओ सतर्क रहल अछि। बुच्ची दाइ, पारो, कला, बिजली, हीरा, सकीना मैथिली उपन्यासक मोन रह' बला चरित्र थिक। तहिना कथा मे मीनाक्षी, मधुरमनि, केतकी, फुलिया, अजनास आदि स्त्री-चरित्र कें बिसरब कठिन छैक। मैथिली साहित्यक स्त्री-विमर्श सीताराम झाक विद्यापति पर लिखल कविता सँ ल'क' आइ धरिक कविता मे लगातार चलैत रहल अछि। तखन आइयो मैथिली मे स्त्री-पुरुषक प्रेमकथा लिखब चुनौतीपूर्ण काज बनले अछि। एहि प्रसंग कथाकार राजमोहन झाक कथन एखनो प्रासंगिक अछि जे, 'मैथिलीक नायक-नायिका कें प्रेमक अभिव्यक्ति लेल हिन्दिए आ अंग्रेजीक आश्रय लेब' पड़ैत छै। 'आइ लव यू' कें मैथिली मे कहनाइ मुश्किल।'

किरणक साहित्य ओ हुनक रचनाकार व्यक्तित्वक सम्बन्ध मे आलोचक लोकनिक विचार फरिछा क' स्पष्ट रूप सँ सोंझा नहि आयल अछि। एकर बहुतो कारण अछि। प्रमुख कारण मे हुनक समस्त साहित्य प्रकाशित भ' उपलब्ध नहि होयब थिक। 1986 सँ पूर्व किरणक मात्र 'चन्द्रग्रहण' उपन्यास, वीर प्रसून (सम्पादित बाल कथा), जय जन्म भूमि एकांकी, विजेता विद्यापति नाटक पोथीक रूप मे उपलब्ध होइत अछि। 1986क बाद सँ किरण कवितावली, कथा-किरण, पराशर, कतेक दिनक बाद (कविता) किरण निबन्धावली ओ वर्णरत्नाकरक काव्य शास्त्रीय अध्ययन



प्रकाशित भेल अछि। किरणक देहावसान 1989 मे भेल। साहित्य अकादमी पुरस्कारो हुनका मरणोपरान्त 'पराशर' पर भेटलनि। हुनक साहित्य अप्रकाशितो बहुत छनि। से जखन सभटा प्रकाश मे आबि उपलब्ध होयत त' किरणक रचनाकार व्यक्तित्व पूरा-पूरी फड़िच्छ भ' सकत।

आलोचक कुलानन्द मिश्रक विनिबन्ध किरण कें बुझबा लेल सर्वाधिक व्यवस्थित प्रयास थिक। कुलानन्द मिश्रक कहब अछि जे 'किरण प्रगतिशील चेतनाक कवि होइतो ओहि राजनीतिक दर्शन मे प्रकट आस्था नहि रखैत रहथि जे एहि चेतनाक पाछाँ कार्यरत् मानल जाइछ। हिनक प्रगतिशीलता, जे मिथिलाक सामाजिक विषमताक आग्रहहीन व्याख्या मे प्रतिबिम्बित भेल अछि, वस्तुतः भक्त कविलोकनिक मानवतावाद तथा सामान्य रूप सँ प्रबुद्ध मनुक्खक आदर्शवाद तथा गैर मार्क्सवादी समाजवादक समस्त विशिष्टता सँ अनुप्राणित थिक, यद्यपि ठाम-ठाम 'किरण' आदर्शवादक प्रकट विरोध मे ठाढ़ नजरि अबैत छथि।'

आधुनिक समय मे मनुक्खक सत्ता आ मनुक्खक गरिमाक प्रश्न प्रगतिवादी आ लोकवादी धाराक महत्वपूर्ण प्रश्न बनल अछि। किरणजीक प्रगतिशील चेतना हुनक लोकवादी चिन्तन पर आधारित वा ओहि सँ अनुप्राणित छल। किरणजीक लोकवादी चिन्तन आर्थिक विषमता कें मूल कारण मानियो क' सामाजिक विषमता कें मिथिलाक परिप्रेक्ष्य मे प्रमुखता देलक अछि। किरणजी कर्पूरीजी (स्व० कर्पूरी ठाकुर, पूर्व मुख्यमंत्री) संग सोसलिस्ट पार्टी मे रहथि। मुदा भाषाधार प्रान्तक निर्माणकाल मे हुनका सोसलिस्ट पार्टी सँ विकर्षण भेलनि। मिथिला मे गैरमार्क्सवादी समाजवादक राजनीतिक लाइन लोहिया-कर्पूरी-रामनन्दन मिश्र-सूरज नारायण सिंहक राजनीतिक लाइन थिक। यैह राजनीतिक लाइन मिथिला प्रान्त आन्दोलन कें वैचारिक आधार देनिहार डा. लक्ष्मण झाक सेहो रहनि। मुदा हुनको मिथिला राज्य आन्दोलनक क्रममे सोसलिस्ट पार्टी सँ मतभेद भ' गेलनि। मिथिला मे वर्गभेद, जाति ओ वर्ण भेद एक संग मीलि सामान्य लोकक पराभव कें लगातार बढ़बैत रहल अछि। तैं राजनीतिक विचारधाराक रूप मे शोषितक संग दलितक पक्षधरता अपन जगह सुनिश्चित क' लेलक अछि। दलितक संघर्ष-मनुक्खक गरिमाक संघर्ष-इज्जतिक संघर्षक रूप मे मैथिली साहित्य मे अभिव्यक्त होइत रहल अछि। इज्जतिए पर आक्रमण सँ ओ प्रतिरोधक

सामूहिक संघर्ष वर्ग-संघर्ष दिस बढ़ैत अछि। एहि प्रगतिशीलताक स्पष्ट चित्र यात्रीक उपन्यास 'बलचनमा' मे देखबा मे अबैत छैक।

मैथिलीक प्रथम आलोचक रमानाथ झा जखन मैथिली साहित्य केँ आधुनिक चेतनाक संग व्यवस्थित रूप देबा मे संलग्न भेला त' हुनका मैथिली साहित्य केँ जातीय (राष्ट्रीय) रूप देबाक खगता अनुभव भेलनि। ओ एहि खगता केँ विद्यापति आ विद्यापतिकालीन मिथिलाक स्वतंत्रताक अभीप्सा सँ जोड़लनि। विद्यापति मैथिल राष्ट्रीयताक प्रतीक बनि गेला। रमानाथ झा विद्यापतिक संग शिवसिंह केँ सेहो मिथिलाक स्वातंत्र्य चेतना सँ लैश राजपुरुषक रूप मे प्रतिष्ठित केलनि। ओ राष्ट्र-राज्यक जे स्वरूप निर्मित केलनि से राष्ट्रवादी चेतना सँ सम्पन्न अभिजात्यक सांस्कृतिक गौरव बोध पर आधारित छल। मुदा विद्यापति आ शिवसिंहक स्वातंत्र्य चेतनाक ऐतिहासिक रूप सँ जे स्वरूप बनल से वर्त्तमान मे मिथिलाक आर्थिक ओ सांस्कृतिक विकास सँ जुड़ि गेल अछि। एहि मे अभिजात्यक गौरव-बोध अर्थात् ओ पुरान तिरहुत राज्यक पुर्नस्थापनाक बात एकदम अप्रासंगिक भ' गेल अछि। मुदा किछु लोकक पुनरुत्थानवादी सोच केँ सेहो ई दुलरबैत रहल अछि अवश्य। एहन लोकक सोच अत्याधुनिक परिवेश मे अन्धराष्ट्रवाद सँ जुड़ि क' मैथिली समाजक ओ साहित्य लेल खतरनाक साबित भ' रहल अछि। ई वस्तुतः विद्यापति आ शिवसिंहक मिथिलाक राष्ट्रीय चेतनाक विरुद्ध सेहो थिक। एहना मे विद्यानन्द झाक ई चेतौनी बहुत सामयिक अछि जे कारगिल, चीन, काश्मीर, काश्मिीरी पण्डित-बेसीकाल मैथिली कविता एकटा केन्द्रीकृत अन्धराष्ट्रवाद दिस अग्रसर राष्ट्र-राज्यक समर्थन मे ठाढ़ भेटैत अछि। ई हमर मैथिल परिचिति केँ कोना प्रभावित करैत अछि- एकर हमरा सभ केँ जाँच करक चाही।

मिथिलाक स्वातंत्र्य चेतना सँ जुड़ियो क' किरणजीक जे राष्ट्र-राज्यक परिकल्पना अछि से लोक स्वराज्य अथवा जन सामान्यक अपन राज्य पर आधारित अछि। तैं साहित्यक प्रसंग हुनकर सौन्दर्य-चेतना सेहो जनसामान्यक सौन्दर्य-बोध सँ सामान्य जनताक रुचि केँ आधार बनबैत सामाजिक-आर्थिक स्थिति सँ त्राण पयबाक चेतना सँ जुड़ि गेल अछि। मुदा एहि क्रम मे किरणजीक संग एक विडम्बना अछि जे ओ राष्ट्रीयताक परिकल्पना मे हिन्दू नामक जातिक अस्तित्व के अस्वीकार करितो कखनहुँ केँ अपन



रचना मे ओहि सँ ओझराइत देखल जाइत छथि। कखनहुँ के हुनकर सोच बकौल कुलानन्द मिश्र आपत्तिजनक भ' जाइत अछि। कुलानन्द मिश्र किरणजीक उपन्यास चन्द्रग्रहण तथा कविता ताजमहलक प्रसंग एहि आपत्तिक बात केने छथि। मुदा ध्यान देला पर लगैत अछि जे, जेना चन्द्रग्रहण उपन्यास मे धार्मिक कट्टरताक नियमन ओ सामाजिक चेतनाक विकास सँ कर' चाहैत छथि तहिना ताजमहल मे प्रेमक उदात्त चेतनाक विकास हुनक लक्ष्य थिक।

वस्तुतः किरणजीक प्रगतिशीलताक आधार मातृभाषा प्रेम आ लोक चेतना सँ लैस मनुखता थिक। आइ जखन भूमण्डलीकरण अथवा बाजारवादक हड़बिड़ो मचल अछि त' ओकर प्रतिकार लेल सामूहिक परिचिति एवं मनुखता केँ बचेबाक-बढ़ेबाक खगताक अनुभव हरेक विचारवान लोक क' रहल छथि। एही संग एहि बातक खगताक अनुभव सेहो कयल जा रहल अछि जे गति ओ परिवर्त्तन केँ अभीष्ट दिशा देबाक तागति विचारधारा सँ उत्पन्न होइत छैक। एहना मे सामाजिक परिवर्तनक अभीष्ट दिस अग्रसर हेबा मे किरणजीक मैथिली भाषा प्रेम ओ मनुखताक पक्षधरता विचारधाराक निर्माण मे बहुत दूर धरि सहायक भ' सकैत अछि। जन-सामान्यक लेल परिवर्त्तनक चेतना सँ लैस साहित्यक निर्माण जनभाषे मे सम्भव छैक। ओहि जनभाषा मे जकर अभीष्ट रूप दिस किरणजी संकेत करैत देखाइत छथि। अपन रचना सभ मे ओहि दिस अभिमुखो भेल छथि। एहि अर्थ मे किरणक महत्व ओ प्रासंगिकता के स्वीकारल जेबाक चाही।

■

# कत' ल' जेताह किरणजी हमरा सबकेँ

विद्यानन्द झा

**एहि** आलेखक विषय वस्तुमे जेबा सँ पहिने हम किरणजीक जन्म शताब्दी वर्ष मे एहि मिथिला विभूतिक अभिनन्दन कर' चाहब।

एहि आलेख मे किरणजीक कृतित्व पर, ओकर आजुक समय आ आब'वला समयक मिथिला मे उपादेयता पर चर्चा करब। ई भ' सकैत अछि जे ओ चर्चा एकछाहा मूर्त्ति प्रतिष्ठार्थ प्रशंसा नहि हो। ईहो संभव अछि जे हमर चर्चाक क्रम मे हुनकर कृत्तित्वक किछु बिन्दु पर हम प्रश्न सेहो ठाढ़ कर' चाहब। हिन्दीक गजलगो दुष्यंत सँ सिखैत : हम ई मात्र 'हंगामा' ठाढ़ कर'क लेल नहि करब। 'सूरत' परिवर्तन होइ से हमरा काम्य। आ तही दुआरे हम 'अभिव्यक्तिक' ई 'खतरा' उठेबा लेल प्रस्तुत भेल छी। ई जनितो जे जन्मशती समारोह उत्सवक प्रसंग सेहो होइत छै। एहनो समय मे जे गप सब हम कहब से पूर्ण आदर संग किरणजीक कृतित्वक उद्देश्य केँ आर फड़ीछ करक लेल, हुनका उद्देश्यक साफल्य दिस एकटा, छोट-छिन, भनहि, डेग उठेबा लेल। किरणजी अपन निबंध 'प्रयोग तथा परंपरा' मे लिखैत छथि, ''बनौल साँच मे माटि धोपिक' मूर्त्ति बनौनिहार श्रष्टा नहि थिक। जे साँच बनबैत अछि, श्रष्टा थिक से।'' ई आलेख एहि श्रष्टाक धर्मनिर्वाहक दिशा मे छोट-छिन प्रयाण थिक।

ई मैथिली भाषाक दुर्भाग्ये जे एखन धरि किरणो सन शिखर पुरुषक सबटा कृतित्व प्रामाणिक पाठ मे उपलब्ध नहि



अछि। ई आलेख किरणजीक उपन्यास नामे ख्यात पोथी चन्द्रग्रहण, कविता संग्रह कतेक दिनक बाद, निबंध संग्रह किरण निबंधावली, नाटक विजेता विद्यापति आ शोध निबंध वर्ण रत्नाकरक काव्य शास्त्रीय अध्ययनक आधार पर लिखल गेल अछि। संगहि, कुलानन्द मिश्र रचित विनिबंध, मोहन भारद्वाज आ शिवशंकर श्रीनिवासक लेख सब सँ सेहो हमरा मदति भेटल अछि।

हमर आलेख छओ भाग मे विभक्त अछि। पहिल भाग थिक, 'जनधर्मी किरण'। दोसरक नाम थिक, 'नव सौन्दर्य शास्त्रक प्रणेता'। तेसर थिक, ''भारतीय राष्ट्र-राज्य मे मैथिल राष्ट्रीयताक गुप्त जीवन।' चारिम थिक, ''परम्पराक उपयोगक लेल आग्रही किरण।'' पाँचम थिक, 'प्रश्नचिन्ह'। आ छठम, ''कत' ल' जेबनि हम सब किरणजी केँ, कत' ल' जेताह किरणजी हमरा सब केँ।''

### जनधर्मी किरण

एहि सुधी श्रोता (एत' पाठक) मंडलीक लेल मिथिलाक किरणक रचनाकाल मे सामाजिक, राजनीतिक आ आर्थिक दशाक विवरण देब हम आवश्यक नहि बुझैत छी। अपन लेखन मे, खास क' कविता आ कथा मे, किरणजी निछच्छ रूपेँ सामंती शोषणक विरुद्ध ठाढ़ छथि। हुनकर कथा 'धर्मरत्नाकर' एकर सब सँ नीक उदाहरण अछि। संगहि ओहि समयक प्रभुवर्ग केँ देखार करैत, ओकर सामाजिक संरचना, ओकर आदंक, ओकर अत्याचार केँ देखार करैत कैक टा कथा ओ लिखलनि। एहि संदर्भ मे हुनकर 'रूपा' कथाक चर्च कर' चाहब। ई कथा एहि गप केँ रेखाकित करैत अछि जे नव प्रभुवर्ग के थिक आ ओकर सामान्यजनक प्रति की धारणा छै। मैथिल सामान्यजन सेहो जखन गाम सँ बहरा गेल तँ ओकरा मे साहेबी आबि जाइत छै आ ओ गाम मे रहनिहार लोकनि केँ उपेक्षा भावेँ देख' लगैत अछि। स्वाधीनतापूर्व आ स्वाधीनतापरान्तोक सरकारी तंत्र ककरा संग ठाढ़ अछि, सेहो बुझना जाइछ हुनकर रचना सब सँ।

सार रूप मे ई जे किरण, समाज मे पसरल सामाजिक, जातिगत, पाँजिगत असमानता आ आर्थिक असमानता केँ चिन्हित केलनि। आ संगहि, शोषित-उपेक्षित जीवनक हुनक अपन दृष्टिभंगी सँ, अपन भाषा मे बखान केलनि। ओ असमानताक विभिन्न आयाम आ ओकर बदलैत स्वरूपोक चर्च केलनि।

## नव सौन्दर्य शास्त्रक प्रणेता

एहि खंड मे हम किरणक रचना संसारक एकटा अति महत्त्वपूर्ण आयामक चर्चा कर' चाहब। किरण नव सौन्दर्य शास्त्रक प्रणेता (वा एहि सँ विरोध रहला पर पहिल प्रणेता सबमे सँ) छला। ई सौन्दर्य शास्त्र छल खगल लोकक, खसल लोकक, उपेक्षित लोकक, तिरस्कृत लोकक। ई सौन्दर्यशास्त्र छल मिथिलाक नीज माटिपानि सँ जुड़ल, वायवीय तँ कथमपि नहि। तेँ 'मिथिलाक वसन्त' आकि 'फागुनक पूणिमा' मे ओ अदौ सँ भेटल प्रभुवादी सौन्दर्यशास्त्रक मिथिलाक माटिपानि सँ निकलल तर्क द्वारा खण्डन करैत छथि। आ ओकरा स्थान पर उपस्थापित करैत छथि आषाढ़ केँ; जीवनदायी आषाढ़, बरखा अननिहार आषाढ, कालिदासक आषाढ़ नहि। आ तेँ उपस्थापित करैत छथि 'गामक मधुमास' आ 'तपस्विनी' सनक कविता सबमे सामान्यजन, हुनक क्रियाकलाप, हुनकर आह्लाद, मनोरथ केँ। कविकर्म हुनका नजरि मे पथ प्रदर्शक, शिक्षकक कर्म छल, गायक-नर्त्तकक नहि। परनिन्दाक प्रवृत्तिक प्रचार सेहो हुनका कविकर्म मे ग्राह्य नहि छलनि। 'की गाऊ' आ 'हमर कामना' सदृश कविता सब हुनकर दृष्टिबोध केँ आर फड़िच्छ करैत अछि जत' ओ शोषण पर प्रतिष्ठित रामगिरिक कथा लिखबा सँ मना क' दैत छथि। संगहि, कथा सबमे जेना, 'अभिनव उत्तरा', 'कोन महल नाम रखबै एकर', आ 'धरती कतहु काक बंझा होथि' एहि सब कथा मे ओ समाजक सामान्य जन केँ आदर्श रूप मे प्रतिष्ठित करैत छथि।

तेँ सार रूप मे, किरण पुरान मरौसी मे देल गेल प्रभुवादी सौन्दर्यशास्त्रक अस्वीकार कयल। सामान्यजनकेँ प्रचलित लोक मान्यता मे पसरल आदर्श सभक दृष्टिएँ प्रतिष्ठित कयल आ संगहि शोषित सौन्दर्य शास्त्रक रचना सेहो कएलनि।

'मधुमास' कविताक एकटा पाँती एत' उद्धृत करबाक लोभ हम नहि संवरण क' सकब :

**धरतीक धिया**
**भोरे ल' पथिया**
**गाछक अङ्ना साफ करइ।**
**मधुमास एलइ ! मधुमास एलइ !**



## भारतीय राष्ट्रराज्य मे मैथिल राष्ट्रीयताक गुप्त जीवन

प्रख्यात दार्शनिक जाक देरिदा एक टा नव पद्धतिक प्रणेता भेलाह। ई पद्धति अछि कोनो रचनाक नव-नव पाठ करक पद्धति। ई नव पाठ सब ओहि रचना मे की समाहित अछि आ की त्यागल गेल अछि, एहि पर आधारित अछि।

एहि खंड मे हम ई उपस्थापित करब जे किरणक रचना संसारक एक टा आर पाठ थिक भारतीय राष्ट्रराज्य मे मैथिल राष्ट्रीयताक गुप्त जीवनक। आ, किरणक रचना संसार थिक एहि पाठक प्रणेताक रचना संसार।

एहिठाम हम ई रेखांकित कर' चाहब जे अपन आन समकालीन लोकक तुलना मे किरणक रचना-संसारक मनोभूमि बेसी ग्रामीण, बेसी मैथिल छलनि। हुनकर जतेक रचना हम देखल ताहि मे भारत, निछच्छ, एकछाहा, एकात्मवादी भारत वा ओकर राष्ट्रराज्यक प्रतीक चिन्ह गांधी, नेहरू, तिरंगा, भारतमाता इत्यादिक प्रति हुनकर रचना नहिएक बरोबरि छनि।

ओ तँ एहि राष्ट्रराज्य मे होइत मिथिला, मैथिली आ मैथिलक सदति उपेक्षा दिस ध्यान ल' जाइत छथि। तेँ 'कतेक दिन बाद' कविता मे ओ कहैत छथि 'मिथिलाक मिहिर'क प्रतिएँ :

**अथवा धएले छलहुँ की राजनीतिक कोनो पार्टी**
**जाहि सँ पदलोभ रोगग्रस्त**
**छलहुँ की भ' गेल?**
**ओ तँ छल भेल बाँतर**
**मिथिलाक संग सम्बन्ध?**

आगू ओहि कविता मे कहैत छथि :

**मसुआयले छै मैथिल केर अभिमान**
**चोन्हरायले छै आँखि।**

स्वतंत्रतापरांतक नव राजनीतिक व्यवस्था आ नव राजनीतिक कर्त्ताधर्त्ता सभक मिथिला राष्ट्रक प्रति दृष्टि एहि सँ फड़िच्छ होइत अछि। संगहि, 'उद्बोधन' कविता मे ओ मैथिल लोकक आह्वान करैत छथि :

तोहरो थिकौक देश तहूँ स्वतंत्र भेल छेँ।
सोच ने! टूगर जकाँ तोँ किए दबेल छैँ
जकर मायक रहै न मान बाप केर धाम मे।
तकर कदापि हो न मान घ'र मे कि गाम मे।
मातृभूमि तीरभुक्ति हिन्द केर वक्ष पर।
पाबि जाय समान मान सैह एक लक्ष्य कर।

तेँ ई कह' चाहब जे किरण भारतीय राष्ट्र राज्यक स्थान पर बेसी मिथिलाक चर्चा केलनि। ई एक तरहेँ मार्क्सवादी दार्शनिक ग्राम्शीक शब्द मे भारतीय राष्ट्रराज्यक एकाधिपत्यक (Hegemony) विरोध छलै।

तेँ भारतक स्थान पर किरणजी 'विजेता विद्यापति'क बहन्ने मिथिलाक दुर्दशाक वर्णन करैत छथि। 'जय जन्मभूमि' मे मिथिलाक चर्च करैत छथि, भारतक नहि। संगहि जखन 'युवक'सँ आह्वान करैत छथि तँ सकल विश्वक चर्च करितो गप ब्रिटिशे धरि नहि छोड़ि दैत छथि, ओकरा स्थानीयकृत करैत छथि, 'ब्रिटिश दासक नृपति' धरि। संगहि कामना' आ 'जय जन्मभूमि' हुनकर मिथिला भूमिक प्रति आग्रह केँ रेखांकित करैत अछि। ई ध्यातव्य जे ओना आन ठाम निबंध ओ शोध प्रबंध मे ओ मिथिला भूमिक सामाजिक, धार्मिक, वैचारिक अवधारणाक रूप मे भारतक अंग हेबाक गप स्वीकार करैत छथि, मुदा संगहि राजनीतिक स्तर पर समय-समय पर मिथिलाक स्वातंत्र्यक चर्चा सेहो करैत छथि।

एही भावभूमि मे ओ औनाइत छथि एहन प्रतीक सभक संधान मे जे मिथिला भाषा आ मैथिल संस्कृति, मैथिल अस्मिताक रक्षा क' सकय। ओ एक तरहेँ त्रिकाल द्रष्टा भ'क' सोझाँ अबैत छथि। औपनिवेशिक काल मे (मुसलमान आ ब्रिटिश दुनू) मिथिलाक दुर्गति (उदाहरणस्वरूप चन्द्रग्रहण मे गामक दुर्दशा) भारतीय राष्ट्रराज्य मे होइत ओकर दुर्गति आ भविष्य मे ओहि पर आब'वला बेसी पैघ संकट-विश्वायित भ' जेबाक, भारतीय भ' जेबाक संकट केँ ओ चिन्हलनि। एत' हम ई देखार कर' चाहब जे हमरा सभक विश्वायन पछिला शताब्दीक प्रारंभ मे शुरु भ' गेल। भारतीय राष्ट्रराज्यक अंतर्गत एहि मे तेजी आयल आ आब जत' जा रहल अछि ओ



से तँ देखले अछि। एत' ईहो कहब जे ई हम प्रसन्न भ' नहि, अपितु दुःखे मे कहि रहल छी। किरणजी सँ उधार ली तँ 'काल ककरो छोड़त?' क तर्ज़ पर ई कह' चाहब जे, जे गति मोरी, से गति तोरी। जँ हम सब विश्वायित हैब तँ ओकर परिणति, तार्किक परिणति, हिन्दीकृत हैब नहि, आंगलीकृत हैब हैत। एहि बीच मे हम थाईलैण्ड मे चारि मास बितओलहुँ। ओत' देखल जे नारीगण आब थाई लोक सँ नहि, गोर चामक विदेशी 'फलांग' लोक सँ विवाह कर' चाहैत छथि। आ हमरा लगैत अछि जे वैश्वीकृत समाजक तर्कक अनुसार ई सहियो अछि।

तेँ जेना कहैत छलहुँ, एहि विश्वायन केँ किरणजी चिन्हलनि आ एकरा सँ मैथिल अस्मिताक रक्षार्थ विद्यापति पर्वक प्रणेता भेला। एकटा प्रतीक (Icon)क निर्माण केलनि आ ओकर आधार पर मैथिल समाज केँ संगठित करक प्रयास केलनि।

एत' ईहो देखब उचित जे किरणजी बेसी हिन्दी मे रचना नहि केलनि। हमरा जनैत एकर एकटा राजनीतिक महत्त्व अछि। ई कहबा मे कोनो धाख नहि हेबाक चाही जे, जे मात्र मैथिलीए टा मे मूल लेखन करैत छथि, ओ हिन्दीक एकाधिपत्य (hegemony) केँ कतहु ने कतहु चुनौती दैत छथि। ई हिन्दी भाषाक विरोध कथमपि नहि। ई भारतीय राष्ट्रराज्यक एकाधिपत्य केँ, ओकर वर्चस्व केँ स्थापित कर'क पैघ औजार हिन्दी, राजभाषा हिन्दीक विरोध अछि।

तेँ किरण मैथिली राष्ट्रक लोकक बीच जाति, धर्म, वर्गक शोषण आ असमानता केँ तोड़ि एकताक प्रयास केलनि। आ तेँ मध्यकाल मे मैथिल संघर्ष सभक नायकक रूप मे विजेता विद्यापति केँ देखलनि। ओहि समय धरि गेला जखन मिथिलाक स्वतंत्र अस्तित्व छल आ ओहि समयक विजयक महिमागाथा केँ रेखांकित केलनि।

सार रूपेँ, किरणक रचना संसार, मैथिल राष्ट्रराज्यक लेल कयल गेल संघर्षक दिस प्रवृत्त कर'क लेल मैथिल राष्ट्रीयता केँ प्रतिष्ठित करबाक भूमि सेहो थिक।

## परम्पराक अस्वीकार आ नवोपयोगक बीच किरण

किरणजीक रचनाकर्म केँ सम्यक रूपेँ बुझबाक लेल, ओहि मे सोझ-सोझ देखाइत अन्तर्विरोध सभक माने-मतलब निकालबाक लेल हमरा आवश्यक बुझा पड़ैत अछि हुनकर परम्पराक संग व्यवहारक जाँच केनाइ। ई जाँच कएक टा उपर सँ देखाइत अन्तर्विरोध केँ बुझबा मे मदति करत, एहन हमर मान्यता अछि।

उदाहरणस्वरूप प्रस्तुत करब दू टा कविता 'माटिक महादेव' आ 'जय महादेव'। दुनू कविता एकहि बर्ख 1956 मे रचित। जत' 'माटिक महादेव' मे कवि महादेव केँ, माटिक बनल महादेव केँ, पदे प्रतिष्ठित महादेव केँ अपन असल औकाति देखबा मे मदति करैत छथिन, ओतहि, "जय महादेव" मे ओ हुनकर अभिनन्दन 'जन-एकता साकार ईश'क रूप मे करैत छथि।

ई द्वैध हमरा जनैत किरणक रचना संसारक एकटा स्थाइ भाव जकाँ रहलनि अछि। पहिल कोटिक रचना सबमे जत' ओ परम्परा केँ देखार करैत छथि, ओहि मे उदाहरण स्वरूप 'कृष्ण', 'अर्जुन', 'पौरुष', 'सतयुग', 'ताजमहल' सब सन कविता केँ लेल जा सकैत अछि। एतुक्का किरण हमरा प्रसिद्ध बांग्ला कवि सुकान्त भट्टाचार्यक अनायासे स्मरण करबैत छथि। 'फकड़ा' मे वर्णित विद्यापतिक प्रेम रचना सभक विवेचनो एही कोटि मे अबैत अछि।

दोसर दिस 'पांचाली', 'सत्यवती' आ 'पराशर' आदि रचना सब मे ओ परम्पराक पुनर्व्याख्या करैत ओकर नव उपयोग करबाक आग्रही देखाइत छथि। यैह आग्रह छियनि, जे हुनका विद्यापतिक राधाकृष्ण केँ शास्त्रोक्त राधाकृष्ण मानबाक दिस पठबैत छनि, सामान्य नर-नारी वा लखिमा-शिवसिंह नहि। एहि सब तर्क मे हुनकर तार्किकता सँ बेसी हुनकर आग्रह झलकैत छनि।

तेँ ओ ई सिद्ध कर' चाहलनि जे विद्यापति Decadenceक कवि नहि, हिन्दीक आलोचक सभक द्वारा घोषित सामान्यजनक कवि नहि,



अपितु राष्ट्रीय एकताक परिचायकक/प्रतीकक रूप मे सोझाँ आबथि। आनो लेख सब मे ओ विद्यापति केँ गोविन्ददासक समान श्रृंगारिक कविक खाढ़ी सँ उबारि आर बेसी व्यापक, आर बेसी लोकमान्य बनेबाक प्रयास केलनि। 'पराशर'क पुनर्पाठ सेहो पराशर केँ लोकचिन्ता सँ अभिभूत देखेबाक एकटा प्रयास थिक, खाहे ओ बेसी घुरियाएले किएक ने हो।

एहिना वर्ण रत्नाकर केँ ओ 'भारतीय भावधारा केँ साकार बनाय अनपढ़, अज्ञ समाजक मानस मे स्थापित करबाक प्रयास मानलनि। स्थापित मान्यताक विरुद्ध वर्णरत्नाकर केँ गद्य नहि मानि महराइ जातिक पद्य काव्य मानलनि।

सार रूपेँ, किरणक रचना संसार मे परम्पराक अस्वीकार सेहो अछि आ संगहि अछि पारम्परिक Icon सभ पर अपन दाबी करब, बहुजन हिताय ओकर पुनर्व्याख्या करब। कौखन ई तार्किक भेल अछि, कौखन ओतेक तार्किक नहि।

## प्रश्नचिन्ह

एहि खण्ड मे हम किछु एहन बिन्दु सभक चर्चा कर' चाहब जे हमरा हिसाबेँ किरणजीक प्रगतिशील चेतना पर प्रश्न चिन्ह लगबैत छनि। पहिल अछि धर्म सम्बन्धी हुनक विचार, खासक' मुसलमान धर्मक सम्बन्ध मे। दोसर अछि हुनकर स्त्री-विमर्श आ तेसर हुनकर नैतिक-दृष्टि सँ सम्बन्धित।

किरणजी पहिल बेर (समय क्रमेँ) मुसलमान आ हिन्दू सभक चर्च करैत छथि, वर्ण रत्नाकरक समय मे आ विजेता विद्यापति नाटकक समय मे। वर्ण रत्नाकरक समय मे आ ज्योतिरीश्वरक समयक विषय मे लिखैत छथि: "मिथिला छल स्वाधीन-एक क्षत्रिय राजाक सम्प्रभुता मे। महामन्त्री, सन्धिविग्रहिक, स्थानान्तरिक, मुद्राहस्तक आदि सभ महान पद पर आसीन छलाह मिथिलाक मूर्धन्य पण्डित वीरेश्वर, गणेश्वर लोकनि। केहन आनन्दमय समय छल होयत? परंच पश्चिम मे इन्द्रप्रस्थ, कुरु पांचाल, अवध, ब्रज, मथुरा, काशी, कान्यकुब्जक वक्षस्थलकेँ पददलित कयने ठाढ़ छल विधर्मी

विदेशी यवनराज आओर दक्षिण पूर्व मे मगध अंग-बंगक वक्ष कैँ समेटने दोसर यवन राज ठाढ़ छल। ओ सभ केवल राजनैतिक प्रभुत्व सँ तुष्ट नहि छल। भारतक सामाजिक आ धार्मिको रूप कैँ नष्ट क' अपने सन बना लेबाक लेल प्रयत्नशील रहय।

अवध, मगध, मिथिला आदि भारतक अंग थिक। राजनैतिक स्वतंत्रताक समय मे ई सभ भने भारत सँ सम्बन्ध तोड़ि केवल अपनहुँ धरि स्वतंत्र रहबाक प्रयत्न करओ, मुदा धार्मिक स्वतंत्रताक बेर मे भारत सँ विच्छिन्न भ' कतेक काल बाँचि सकैत? तेँ भारतक विद्वान लोकनि हिन्दू धर्म कैँ सम्पूर्ण भारतक भूमिक संग सम्बद्ध करबाक प्रयत्न केलनि।''

अहिना विद्यापति संबंधी एकटा निबन्ध मे लिखैत छथि जे ''विद्यापति वैष्णव काव्यक रचना यवनाक्रान्त मिथिलाक हिन्दू स्वरूप कैँ बचेबा लेल केलनि।''

संगहि चन्द्रग्रहण पोथीक प्रसंग मे ओ एकटा साक्षात्कार मे रामानन्द झा 'रमण' कैँ कहलथिन (कुलाबाबूक विनिबन्ध सँ उद्धृत) :

''ओहि समय तक ब्रिटिश सरकारक 'डिवाइड एण्ड रूल' नीति बेश सफल भ' गेल छलै। मुस्लिम सम्प्रदाय कैँ खूब सनका देने छल। जेना-तेना अपन संख्या बढ़ायब ओ सब लक्ष्य बना लेने छल। अपहरण क' धर्म परिवर्तन करबैत छल। स्त्रीगणक अपहरण बेसी होइत छलै। एहि सँ जनसंख्या तँ बढ़िते छलै, वासनाक तृप्तिओ होइत छलै। मेला अथवा भीड़ आदि सँ अपहरण बेसी सुविधगर छलै। ई समस्या ततेक सामान्य आ दारुण छलै जे हमरा आकर्षित कयलक। तेँ समस्या सँ परिचित आ प्रतिकार लेल चन्द्रग्रहणक रचना हम मैथिली सुधाकर हेतु कयल।''

एहि सभक एक पाठ ई भ' सकैत अछि जे मैथिल राष्ट्रीयताक स्वरूप निर्धारण मे, ओकर अपन आ आन तकबा मे ओ विदेशी आक्रान्ता सभक विरोधी छला, चाहे ओ मुसलमान छल होथिन वा ब्रिटिश। एहि धारणाक समर्थन मे हुनकर कविता 'जय जन्मभूम'क पाँती ''गावि मसिर्या दाहा मे हिन्दुओ धरय जंगीक बेश''क चर्चा कयल जा सकैत अछि। संगहि



''अंतर्ध्वनि'' मे कहैत छथि जे 'हिन्दू, सनातन, आर्य ओ इसलाम, सभ थिक एक समान।' एहि सब मे इस्लाम धर्म आ ओकर अनुयायी सभक प्रति कोनो द्वेष नहि देखाइत अछि।

मुदा चन्द्रग्रहण उपन्यासक खलनायकक नामकरण संगहि हिन्दू राष्ट्रक रूप मे भारतक हुनक वर्णन एहि लेल साकांक्ष करैत अछि जे हुनकर सकल रचनाक पुनर्पाठ आवश्यक अछि, एहि विषय पर कोनो ठोस धारणा बनेबाक लेल।

हुनक स्त्री-विमर्श सेहो हमरा समस्याग्रस्त देखाइत अछि। सत्यवतीक गाङो सँ सत्यवती मे परिवर्तित हेबा मे हुनकर अपन मति कखनहु नहि झलकैछ। जखन पराशर हुनका पर कामासक्त भेलखिन तखन सत्यवती की चाहैत छलीह? जखन शतरंजक मोहरा जकाँ ओ शान्तनुक समक्ष धैल गेली, तखन हुनकर मन की कहै छलनि? ई सब हम सब नहि बुझि पबै छी। हमरा पराशर नहि पढ़ल अछि, तेँ यदि केओ एहि पर हमर धारणाक सुधार करथि, तँ हम आभारी हेबनि। एहिना पाञ्चालीक सबटा दुःख तकलीफ बुझितहुँ हुनका कोनो सतमार्ग देखेबाक स्थान पर किरणजी हुनका कुन्तीक लेल त्याग करैत देखबैत छथिन।

'करुणा', हुनकर आन एक टा नायिका, वैधव्यक स्थिति मे पड़ाइत नहि छथि, उढ़रैत नहि छथि, तेजाब ढारि लैत छथि, मुँह पर। ककरा लेल? ई ककर चिन्ता छनि हुनका, ककर सौन्दर्य, ककर सतीत्वक रक्षाक चिन्ता? संगहि 'अञ्जनी अहिल्याकेर सतीत्व आ कुन्तीक कौमारक नष्ट हेबा मे हुनका दुःख होइत छनि, क्षोभ होइत छनि। ओकर आर अर्थ, नव अर्थ ताकबाक इच्छा नहि।

एहिना चन्द्रग्रहणक पाठ ईहो देखा सकैत अछि जे लेखक कोन तरहक स्त्री कैँ आदर्श मानैत छथि। अपन इच्छा पर चल'बाली (स्वेच्छारिणी?) वा आनक गप मान'वाली तथाकथित 'पतिव्रता' कैँ। मूल रूपे ई गप कह' चाहब जे किरणजीक स्त्री-विमर्श कैक टा समस्या सँ ग्रस्त छनि। स्त्रीक इयत्ता, अपन स्वतन्त्र इच्छा-भावना 'मधुरमनि' छोड़ि आर कतहु देखबा मे

नहि अबैत अछि। हुनका लग स्त्री लेल करुणा छनि, मुदा ओकरा पुरुष समाजक मर्यादा भंग कर' देबाक कल्पना नहि।

तेसर प्रश्नचिन्ह हमरा हुनकर नैतिकताक अवधारणा पर लागल बुझाइछ। जीवनमूल्य, सामाजिक चलन पर लागल बुझाइछ। हमरा लगैत अछि जे अपन मूल्यबोधक स्तर पर किरणजी शुचितावादी (Puritamal) छलाह। अपने समयक कैक टा आन रचनाकार जकाँ। मध्यवर्गीय नैतिकता/विक्टोरियन मूल्यबोधक आग्रही। तेँ मेला देखब निषिद्धो छै। मेला मे नवयुवक नवयुवतीक अभिसारक ओरियाओन गलती छै। विद्यापतिक विपरीत रतिक वर्णन गड़बड़ छै। 'लखिमा आ विद्यापतिक बीच वासनात्मक प्रेमक सन्देह गड़बड़ छै। 'अभिनव उत्तरा'क परिणति पतिव्रता भ' रहबा मे छै। हमरा जनैत एहि मूल्यबोधक स्तर पर किरणजी मे आर प्रगतिशीलताक आवश्यकता छलनि। संगहि ओहि लीलाक सेहो (Play Fulness) जे 'मधुरमनि' मे देखाय पड़ैत अछि। घोर रागानुभूति। दू बर्ख पहिने सांतियागो मे इस्ला नेग्रा नामक भवन मे, जे नेरुदाक निवास स्थान छलनि, हमरा नेरुदाक समग्र रचनाक स्पैनिश संचयनक संपादक सँ भेट भेल। ओ हमरा नेरुदा सँ सीख' कहलनि–नेरुदा एकहि संग प्रेम आ समानता दुनू चाहैत छल। किएक कम्यूनिस्ट कवि केँ नीरस हेबाक चाही? किएक ने प्रेम सँ अभिभूत?

सार रूपेँ किरणजीक मूल्यबोध हुनका प्रेम सँ बेसीकाल दूरे ल' जाइत रहलनि।

**कत' ल' जेबनि हमसब किरणजी केँ, कत' ल' जेताह किरणजी हमरासब केँ?**

अंतत: निष्कर्ष रूपेँ ई कहब–

किरणजीक रचना जनधर्मी अछि। ओ नव सौन्दर्य शास्त्र–खगल, खसल लोकक सौन्दर्यशास्त्रक रचनाक प्रयास थिक। ओ भारतीय राष्ट्रराज्य मे मैथिल राष्ट्रीयताक गुप्त जीवनक बखान सेहो थिक। ओ पारम्परिक Icon सभक प्रगतिकामी उद्देश्य लेल उपयोगक प्रयास आख्यान सेहो थिक। ओ किरणजीक निस्सन होइत जेबाक प्रक्रियाक गवाह अछि। ओ हुनकर



पूरेपूर सारिल नहि भ' पयबाक परिणतिक सेहो गवाह अछि। ई तँ भेल हमर एखनुक पाठक किरणजीक उर्फ कर्त' ल' जेबनि हम सब किरणजी केँ?

आब यदि ई देखी जे कत' ल' जेताह किरणजी हमरा सब केँ, तँ देखाय पड़त जे मैथिल अस्मिता केँ बचेबाक लेल, एक टा हारलो लड़ाइ लड़ैत रह'क अछि हमरा सब केँ एहि वैश्वीकृत, भारतीय कृत समय मे। जहिया हम सब मैथिल नहि रहि जायब, तहिया एहि माटि, पानि, एतक लोकक प्रति हमरा सभक प्रेम, निष्ठा सबटा ओरा जायत। संगहि जाति, वर्ण, वर्ग आ लिंग भेदक आधार पर होइत असमानताक विरुद्ध संघर्ष–सचेतन, प्रगतिशील मूल्यबोधक संग संघर्ष–सेहो हमरा सब केँ काम्य हो। ओतहि ल' जाय चाहैत छथि किरणजी हमरा सब केँ।

■

# सूखल नयन नदी हियमे मरुभूमिक घोर बिहाड़ि

(किरणजीक . प्रगतिशीलता)

प्रफुल्ल कोलख्यान

## प्रगतिशीलता : किछु सामान्य प्रसंग

### 1. सभ्यताक मूल्यबोध

(i) सभ्यता मानव जीवनक निरंतर विकसनशील आधारशिला होइ छै। सभ्यताक विकास सामाजिक विकासक रूप मे प्रकट होइ छै। सामाजिक विकासक क्रममे संबंध तंतु बदलैत रहै छै। समाजक संघटन मे अनुस्यूत संबंध-तंतु मे भ' रहल बदलाव के संभव करबा मे सांस्कृतिक आ दार्शनिक मूल्यक रूप मे प्रगतिशीलताक अपन महत्त्व छै। सामान्य रूप सँ कहल जा सकैत अछि जे कोनो समाज मे प्रगतिकामी एवं प्रतिगामी, दुनू प्रवृत्ति सक्रिय रहै छै। सभ्यताक इतिहास एहि बातक साक्षी अछि जे सभ्यता विकासक प्रत्येक चरण मे प्रगतिशील शक्ति के, पूर्ण विजय त' नहि, मुदा सक्षम बढ़त अवश्ये हासिल होइत रहल छै। मानि लेबा मे कोनो आपैत नहि जे पारंपरिक रूप सँ ई दुनू प्रवृत्ति अपन सक्रियताक अधिकांश मे सचेतन नहि होइ छै। सामाजिक सचेतनताक सही दिशा मे संप्रसारक लेल प्रगतिशील प्रवृत्तिक लोक सक्रिय रहैत छैथ। जत' सँ एहि मे सचेतनताक प्रवेश होइ छै आ जाहि मात्रा मे होइ छै, ओतहि सँ आ ओहि अनुपात मे द्वंद्व सामाजिक चिंतनक फरीक बनै छै। एहि द्वंद्वक तीव्रताक अनुपाते प्रगतिशीलताक तत्त्व एवं अंतर्वस्तु मे गुणात्मक बदलाव लक्षित हुअ लगै छै। ई बदलाव सामाजिक बदलावक रूप मे चिन्हार होइ छै।



(ii) चेतन आ अचेतनक आनुपातिक क्रम चाहे जे होइ, समाजक बदलावक प्रक्रिया हरदम जारी रहै छै। समाजक बदलावक एहि प्रक्रिया मे राजनीति प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूप सँ निश्चिते सक्रिय रहै छै। सामाजिक बदलावक रूप के चिन्हक लेल ओकरा आकांक्षित रूप आ गति देनाइ मुख्यतः राजनीतिक प्रक्रिया होइ छै। तात्रि, सामाजिक बदलाव अर्थात् मानवीय संबंध आ सरोकार मे सकारात्मक बदलावक मूल्य समुच्चयक रूप मे प्रगतिशीलताक राजनीतिक रूप के बुझनाइ जरूरी भ' जाइ छै। राजनीति निरपेक्ष सांस्कृतिक स्वायत्तताक सवाल उदात्त एवं अपन भावना प्रधान उच्चाशय एवं तेजस्विताक संग बेर-बेर उपस्थित होइ छै। रोजी-रोटी समेत जीवनक समस्त आधारभूत प्रसंग मे स्वायत्तताक दर्शन केँ स्थगित एवं राजनीतिक परिप्रेक्ष्य सँ नियमित होइत देखि सांस्कृतिक स्वायत्तताक सवाल आ तर्क स्वतः निस्तेज भ' जाइ छै। स्वभावतः प्रगतिशीलताक राजनीतिक आयामकेँ अस्वीकारक धूर्त्तताकेँ एक दोसर तरहक राजनीतिक प्रसंगक रूप मे बूझल जा सकैन अछि। तात्पर्य ई जे वास्तव मे सांस्कृतिक प्रवाह, सामाजिक यथार्थ, संघर्ष आ स्वप्नक संश्लेष सँ राजनीति के सावधानीपूर्वक जोड़िक' प्रगतिशीलताकेँ बुझनाइ जरूरी। संक्षेपे मे सही मुदा, ई साफ करैक दरकार बुझना जाइत अछि जे प्रगतिशीलता समाजक अन्य उद्यमशीलता एवं वास्तविकता के अन-अन्य एवं अविच्छेद्य रूपमे स्वीकार करै छै आ एकरा बीच मे अंतःसक्रिय अंतनिर्भरताक आधार एवं तत्त्व के पोसैत छै। समाज विकासक मूलाधारक नवोन्मेष के मुख्य रूप सँ सचेत राजनीति पुनर्संयोजित करैत अछि आ सचेत साहित्य एहि पुनर्संयोजनक सामाजिक स्वीकृति लेल समाजक मन मे नव जगह बनबैत अछि। प्रगतिशीलताक मूल आशयकेँ देशकालक राजनीति एवं संस्कृति सँ निरपेक्ष स्वायत्तता मे नहि, वरन राजनीति आ संस्कृतिक सापेक्ष अंतनिर्भरता के स्वीकार कइएक' हासिल कएल जा सकै छै।

### 2. समाज, स्वप्न, संघर्ष आ संघात

(1.) प्रत्येक समाजक विकास भिन्न ऐतिहासिक परिस्थिति मे होइ छै। ऐतिहासिक परिस्थितिक भिन्नता प्रथमतः समाजक बाह्य यथार्थ के आ अंततः किछु दूर तक ओकर आंतरिक चरित्रकेँ भिन्न-भिन्न स्वरूप प्रदान

क' दै छै। बाह्य यथार्थ आ आंतरिक चरित्रक भिन्नता कइएक बेर समाजक्र अपन वैशिष्ट्यक रूप मे स्वीकृति पबै छै। एहि वैशिष्ट्य मे समाजक अस्मिताक आधार बनबाक तीव्र प्रवणता होइ छै। अस्मिताक आधारक रूप मे स्वीकृति पाबिक' ई वैशिष्ट्य कइएक बेर सामाजिक स्वप्नक हिस्सा बनि जाइ छै। एहि स्वप्न मे समाजक सब अवयवक लेल समुचित स्थानक अभाव सँ सामाजिक संघर्ष आ संघात तकक वातावरण बनि जाइ छै। अंतर्विभंजित समाज मे सामाजिक संघर्ष आ संघातक वातावरण अपेक्षाकृत अधिक आसानी सँ बनि जाइ छै। सभ्यता संघर्ष आ संघातक ई प्रक्रिया समाजक बाह्य-भूमिक निषेध त' करिते छै सामाजिक अंतःकरणमे एहेन अनिवार्य दुर्घर्ष संकोचन उत्पन्न करैत छै जे अंततः 'सामाजिक ब्लैक' होल के रूप मे प्रकट होइ छै। समाजक प्रगतिशील चेतना आ मूल्यबोधक अधिकांश एहि 'सामाजिक ब्लैक होल' मे समाहित भ' निरर्थक भ' जाइ छै। तञि, प्रगतिशील चेतना आ मूल्यबोध सभ्यताक आधारशिलाक संघाती रेखा (Fault Line) आ सामाजिक ब्लैक होलक खतरा के नीक जकाँ चिन्हैक कोशिश करै छै। अंतःकरण केँ रणभूमि मे बदलि गेनाइ सँ पैघ दोसर कोनो दुर्घटना सामाजिक जीवन मे नहि भ' सकै छै! स्वभावतः प्रगतिशील मूल्यबोध अपन संघात-समंजन (Conflict Management) क आंतरिक शक्तिक आधार पर स्वप्न, संघर्ष आ संघातमे सामंजस्यक संधान करै छै। एहि संधानक क्रममे प्रगतिशीलता समाजक बाह्य-भूमि सँ निषेधक संबंधकेँ बदलि सहकारक संबंध विकसित करैत सामाजिक अंतःकरणकेँ अंतर्बाधित रणभूमि सँ बदलि वास्तविक रूपेँ निर्बाध जनभूमि (Public Sphere) मे बदलबाक चेष्टा करै छै। रणभूमिकेँ जनभूमि मे बदलनाइ प्रगतिशीलताक प्राथमिक दायित्व होइ छै। ई गप्प दोसर जे शोषण पर आधारित समाज मे रणभूमिकेँ जनभूमि मे बदलबाक प्रक्रिया कइएक बेर दुर्निवार रणप्रक्रियाक अनिवार्य रूप मे प्रकट होइ छै।

(ii.) ध्यान देबाक कथा ई जे प्रत्येक समाजमे सामाजिक यथार्थ आ मूल्यबोधक भिन्नताक आधार पर प्रगतिशीलताक अंतर्वस्तुमे सेहो गुणात्मक अंतर होइ छै। हम ई विशेष रूप सँ ध्यान मे लाब' चाहै छी जे व्यवहारतः मैथिल समाजक, आ तञि मैथिली साहित्योक, प्रगतिशीलताक गुणात्मकता कोनो अन्य समाज आ साहित्यक प्रगतिशीलताक गुणात्मकता सँ तुलनीय



त' निश्चिते भ' सकै छै, मुदा कोनो हालत मे अन्य समाज आ साहित्यक प्रगतिशीलताक गुणात्मकता एकरा लेल अनिवार्य निकष नहिं भ' सकै छै। दोहराक' आ फरिछाक' कह' चाहै छी जे, अन्य समाज आ साहित्यक प्रगतिशीलताक गुणात्मकता मैथिल समाज आ मैथिली साहित्यक प्रगतिशीलताक गुणात्मकताक मान निर्धारणक निकष नहि भ' सकै छै। प्रगतिशील चिंता आ चेतना सँ संपन्न विद्वान लोकनि द्वारा अतीत मे एहि तरहक कएल आर बेर-बेर दोहराओल गेल गलती के बुझबाक आ ओहि सँ साग्रह बचबाक रास्ता तकबाक चाही। प्रगतिशीलताक मैथिल संस्करणक संधान एक तरहक सांस्कृतिक दायित्व अछि। ध्यानमे इहो रखनाइ जरूरी जे प्रगतिशीलतामे वैज्ञानिकताक तत्त्व सक्रिय रहै छै। ई वैज्ञानिक युग थिक। एहि बात के हम अधिक साफ-साफ बुझि सकै छी जे साहित्यमे वैज्ञानिकता आ वैज्ञानिक सिद्धांत निर्धारणक प्रक्रिया भौतिक विज्ञान सँ मौलिक रूपेँ भिन्न होइत छैक। हमरा ई कहबाक जोखिम उठाब' दिअ जे आइ जीवन विज्ञान सँ खाली समृद्ध नहि अछि अपितु वैज्ञानिक समृद्धि सँ शतशः आक्रांत सेहो अछि। हमरा मन मे बेर-बेर ई प्रश्न उठैत अछि जे सामाजिक जीवनक प्रत्येक क्षेत्र मे विज्ञानक संपूर्ण दखल किए हेबाक चाही! शेष सृष्टि आ समतामूलक सामाजिकता सँ मानव संबंधक मधुरता एवं दृढ़ताक विकास मे जते दूर तक सहायक ओते दूर तक वैज्ञानिकता निश्चिते स्वीकार्य। मुदा जीवनक आनंद सब समय वैज्ञानिक मनोभाव सँ उपलब्ध नहियो भ' सकै छै। ई बुझबा आ मानबा मे आइ कोनो भाँगठ नहि होएबाक चाही जे वैज्ञानिक दृष्टि सँ कमला-बलान आन छैथ, साहित्यिक आ संस्कृतिक दृष्टि सँ आन!

iii. साहित्यक अपन एकटा भिन्न विज्ञान होइत छैक। एहि वक्तव्यकेँ अहाँ सभक समक्ष रखैत हम नीक जकाँ बूझि रहल छी जे एहि संदर्भ मे बहुत रास एहनो प्रश्न उठि सकै छै जकर त्वरित समाधान एहि सभामे संभव नहि। हमरा विश्वास अछि जे कोनो सभाक सार्थकता प्रश्नक समाधान हासिल होएबा पर त' निर्भर करिते छै, नव समाधानक माँग करैत हासिल होब'वाला अनुत्तरित सन रहि गेल प्रश्न पर सेहो कनेमने निर्भर करै छै। एहि संदर्भ मे एतबा आँकि रखनाइ जरूरी जे विज्ञानक सत्य अपना आपमे ब्रह्मांडीय (General आ Universal) होइत छैक। साहित्यिक सत्य

पींडीय (Individual आ Unique) होइत छैक। विज्ञानक मौलिक प्रक्रिया वि-अवयवीकरणक (Exclusionक) होइ छै जखन कि साहित्यक मौलिक प्रक्रिया अवयवीकरणक (Inclusionक) होइ छै। सोचबाक गप्प जे, भूखक, शोषणक अर्थ, हत्या, अन्यायक जे अर्थ विज्ञानमे होइ छै उएह आर ओतबे अर्थ की साहित्यो मे होइ छै? जाबे तक प्रगतिशील मूल्यबोध अपन संघात-समंजन (Conflict Management)क आंतरिक शक्तिक आधार पर स्वप्न, संघर्ष आ संघातमे सामंजस्यक संधान आ संस्थापन नहि क' लैत अछि ताबे तक प्रगतिशीलताक ऊपर वैज्ञानिकताक जानमारा लदनी करैत चलि गेनाइ कतेक उचित से अवश्ये विचारणीय। एत' एकटा भयंकर दुश्चक्र छै। दुश्चक्र ई जे वैज्ञानिकताक बिना संघात-समंजन संभव नहिं आ संघात-समंजन भेने बिना प्रगतिशीलतामे वैज्ञानिकताक आत्मिक विकासक समायोजन संभव नहि। एहि दुश्चक्र के शुभचक्र मे बदलल जा सकै छै। कोना? एहि पर विचार आवश्यक; अखन नहि त' कखनो। अनुभवमे हेबे करत जे जाबे नीक विचार अपन डाँड़ सोझ करै छै, ताबे अधलाह विचार भरि गाम बुलि बैन द' अबै छै।

### 3. मूल्य, बासन आ वस्तु

(i.) प्रगतिशीलताक अंतर्वस्तु समाज विकासक विभिन्न चरण मे भिन्न-भिन्न बासन मे हासिल होइ छै। विद्यापतिक साहित्यकेँ प्रगतिशील अंतर्वस्तुक लेल जे बासन उपलब्ध छलै उएह बासन डा. काञ्चीनाथ झा 'किरणजी'क साहित्यक लेल उपयुक्त नहि भ' सकै छलै। स्वभावतः प्रगतिशीलताक जे बासन किरणजीक लेल उपयुक्त छलनि ओही बासनकेँ हुनक समकालीन वा परवर्त्ती साहित्यकार सभक लेल उपयुक्त नहियो भ' सकबाक गुंजाइश सदिखन बाँचल रहि जाइत अछि। प्रश्न उठि सकै छै जे प्रगतिशीलता वैयक्तिक मूल्य होइ छै आकि सामाजिक? संक्षेप मे कह' चाहै छी जे शास्त्रीय रूप सँ प्रगतिशीलता सामाजिक आ सामान्य मूल्य होइ छै, मुदा जीवन मे ओकर प्रतिफल वैयक्तिक होइ छै। समाज सँ व्यक्ति तकक यात्रा करैत प्रगतिशीलता मे सामाजिकक संगहि वैयक्तिकताक प्रवेश होइ छै। साहित्य सँ जुड़ल लोककेँ ई बुझ' पड़तै जे साहित्य विचार संचालित होइतो मुख्यतः भाव प्रेरित होइत छै। हिन्दी कवि मुक्तिबोधक



संदर्भ लैत कह' चाहै छी जे साहित्यकार केँ 'विचारधाराक' संगहि 'भावधाराक' सम्मान करबाके चाही। मध्यकालमे भावनाक अनुरूपेँ भगवानक मूरुत देखैक अवसर छलै। प्रगतिशील विचारकेँ भावनाक लेल एतेक जगह सुरक्षित रखबाके चाही। बासनक भिन्नता सँ वस्तु नहि बदलि जाइ छै, मुदा ई सभक अनुभव मे अछि जे भावना मे अंतर वस्तुक ग्रहणीयता मे अंतर आनि दैत छै। एकटा आरो तथ्यक ध्यान रखनाइ आवश्यक जे प्रगतिशीलताक पाट बड़ चौड़ा आ चंचल होइ छै। जेना कमला अपन पाट आ बाट बदलैत एलीहे तहिना प्रगतिशीलताक पाट आ बाट सेहो बदलैत रहल छै। तञि, प्रगतिशीलताक कोनो एकहि संस्करण के प्रामाणिक मानिक' साहित्यक मूल्यांकन वा प्रगतिशील मूल्यक अन्वेषण ठीक नहि। ई ठीक जे क्रांति किस्त मे नहि होइ छै, मुदा सर्वोच्च सामाजिक मूल्यक रूपमे प्रारंभे मे प्रगतिशीलताक साहित्य मे उपलब्धि कठिन आ कखनो समाज मे अंतर्घातक सेहो भ' जाइ छै। समाज घोड़ा सँ बेसी ताँगाक कुदनाइ केँ कखनो नीक दृष्टि सँ नहि देखैत छैक—व्यंग्य करैत छैक जे घोड़ा नञि कूदे, कूदे ताँगा। सामाजिक उपलब्धि सँ बहुत बेसी मात्रा आ गुणात्मकता मे प्रगतिशीलताक साहित्य मे उपलब्धि साहित्यक सामाजिक स्वीकार्यता के अंततः बाधिते करैत छै।

(ii.) किरणजीक साहित्यमे प्रगतिशीलताक संधानमे ई ध्यानमे रखनाइ जरूरी जे विद्यापति साहित्यकेँ किरणजी उचिते मूल्यवान मानैत छलाह। परंपरा सँ संवाद करबाक किरणजीक कौशल सँ हुनकर प्रगतिशीलताक किछु आयाम अवश्ये स्पष्ट होइत अछि। किरणजी परंपराक पानि मे 'पसरल माए पाय तुअ पानि'क सावधानी आ क्षमायाची मुद्राक संग उतरैत छथि। विद्यापतिक संबंध मे बेसी किछु कहबाक ई अवसर नहि तैयो कहबाक अनुमति चाहब जे विद्यापति नवजागरणक पहिल उत्तर-भारतीय स्वर छलाह। भारतीय नवजागरणकेँ अंग्रेजक शासन आ प्रभाव सँ जोड़िक' देखल जाइ छै। तखन विद्यापति मे नवजागरणक तत्त्व के तकनाइ की अगिया बेतालक काज? औपनिवेशिक मानसिकता सँ मुक्त भ' नवजागरणक धाराक उत्सकेँ, चाहे ओ अपना गोमुख पर कतबो क्षीण वा अस्पष्ट किएक नहि होइ, फेर सँ तकबाक चाही। ई ताकुत एहि दुआरे जरूरी जे विद्यापति सँ नवजागरणक जे आकांक्षा फूटल छलै ओकर विस्तार आ विस्फोटकेँ

1857क सामुदायिक एकता आ सक्रियता सँ जोड़िक' देखल जा सकै छै। 857क बाद नवजागरणक ओहि आकांक्षा पर औपनिवेशिक शक्ति अपन क़ब्जा जमा लेलक। एहि कब्जाक बाद, सुनियोजित ढंग सँ एकटा एहन नवजागरणकेँ प्रोत्साहित कएल गेलै जाहि मे पुनर्जागरणक तत्त्व अधिक प्रमुखता सँ विकसित भेलै। नतीजाकेँ देश-विभाजनक रूप मे देखल जा सकै छै। देखल जा सकै छै जे जहिना असली राष्ट्रवादकेँ स्थानापन्न, अर्थात् कुत्सित, राष्ट्रवाद सँ बदलि देल गेलै, तहिना असली नवजागरणकेँ स्थानापन्न, अर्थात् कुत्सित, नवजागरण सँ बदलि देल गेलै। औपनिवेशिकता सँ अभिप्रेरित स्थानापन्न राष्ट्रवादक लेल ई स्थानापन्न नवजागरण बहुत सहायक भेलै। प्रसंगवश, अखन तक आलोचना भक्तिकेँ धर्मक परिसरक भीतर घटना मानैत एबाक गलतीकेँ दोहरबैत आयल अछि। धर्मकेँ रहितौं जँ भक्तिक सामाजिक आवश्यकता उपस्थित भेलै त' निश्चिते रूप सँ भक्ति धर्मक परिसर सँ बाहरक एवं बाहर होइत जेबाक घटना थीक। (कबीर पर विचार करैत एहि संबंध मे हम किंचित विस्तार सँ लिखने छी।) एत' विद्यापतिक संदर्भ मे ई कहनाइ जरूरी जे ओ अपन इष्ट के पति (कबीर), सख्य (सूरदास), दैन्य (तुलसीदास) भाव सँ नहि, वरन सेवक (उगना) भाव सँ सुमिरैत छथि। उग्रनाथक उग्रता के सैंतक उगना मे तत्त्वांतरण ओहि युगक एक क्रांतिकारी दुस्साहस के रूप मे चिन्हल जा सकैत अछि। बूझल जा सकैत अछि जे भक्तिक बासन मे विद्यापतिक वस्तु कोन रूपे प्रगतिशील छल। भक्ति साहित्य मूलतः सामंतवाद आ तान्त्रि पुरोहितवाद सँ टकराक' प्रस्फुटित भेल छल, मुदा आगाँ चलिक' सामंतवाद आ ओकर पुरोहितवाद भक्तिकेँ अपन कब्जा मे ल' लेलक। एहि सांस्कृतिक संघर्ष आ वर्चस्वकेँ बुझ' पड़त। मिथकक विनियोग मे विद्यापतिक काव्य-भंगिमा किरणजीक सामाजिक दृष्टिकेँ आकार दैत अछि।

(iii.) किरणजीक साहित्य आ समाजक दृष्टि मूलतः नवजागरणक अंतर्वस्तु सँ बनल छैन। सामाजिक संबंध मे बदलावक लेल समाजक संरचनागत मूल्यबोधक पुनर्निर्माण नवजागरणक मौलिक माँग के रूप मे चिन्हल जा सकै छ। प्रगतिशीलताक एक संस्करण समाजक संरचनागत मूल्यबोधक पुनर्निर्माण मे नहि, संपूर्ण बदलाव मे विश्वास करै छै। ध्यान



देब' जोगरक बात ई जे 'पुनर्निर्माणकेँ' अपनेआप मे 'बदलाव'क दिशा मे उठाओल गेल महत्त्वपूर्ण डेगक रूपमे स्वीकार कयल जा सकै छै। ओना, एहि स्वीकारमे प्रगतिशीलताक आधिकारिक संस्करण सदैव संकोची रहल अछि। असल मे, सामाजिक संरचनागत मूल्यबोधक 'पुनर्निर्माण' आ 'बदलाव' मे गंभीर आ सातत्यमूलक संबंध होइ छै। 'पुनर्निर्माण' आ 'बदलाव' मे कोनो अनिवार्य तत्त्वगत अंतर्विरोध नहि होइ छै, कम-सँ कम प्रारंभिक अवस्था मे नहि होइ छै। किरणजीक प्रगतिशील चेतना के बरोबरि पुनर्निर्माणक आंतरिक दबाव सँ गुजर' पड़लै। एहि दबावक कारणे किरणजीके परंपराक प्रामाणिक पाठ तैयार करबा मे अपन अनुसंधित्सु वृत्ति के सदिखन जोतने रह' पड़लैन। प्रगतिशील चिंतनधारा सँ प्रतिबद्ध लोककेँ आइ एहि निश्छल आत्मस्वीकारक आवश्यकता महसूस हेबाक चाही जे प्रगतिशील चिंतनधाराक मुख्य ऊर्जाक अधिकांशकेँ 'पुनर्निर्माण' आ 'बदलाव'क तत्त्वगत संबंध संस्थापन मे नहि खरचि, संबंध-विच्छेद मे खरचबाक गलती दोहराएल गेल छै। सहजेँ लक्षित कएल जा सकै छै जे, जाहि समाज मे नवजागरणक अंतर्वस्तुक संस्थापन जते दूर तक भेनाइ संभव भेलै ओहि समाज मे प्रगतिशीलताक लेल ओहि अनुपात मे स्थान बनलै। किरणजी वस्तुतः विद्यापतिक साहित्य मे उठल नवजागरणक प्रश्न के अपना समय मे फेर सँ संबोधित छलाह। ई बात जरूर जे विद्यापतिक समय मे एहि प्रश्नक जे जटिलता छलै ताहि सँ बहुत बेसी जटिलता किरणजीक समय मे आबि गेल छलै। जाहि समाजक मूल प्रश्नक सुनवाइकेँ बहुत दिन तक स्थगन मे रह' पड़ै छै ओहि समाजक प्रश्न-ग्रंथि त' ओहिना चोटायल भ' जाइ छै। किरणजीकेँ मैथिल समाजक चोटायल प्रश्न-ग्रंथिक रूप मे चिन्हल जा सकै छैन्ह। कबीर साहित्य के 'फोकट का माल' वा 'घेलुआ' कहि हजारी प्रसाद द्विवेदी जे गलती कयलनि हम ओहि तरहक गलती करैत ई त' नहि कहि सकै छी जे किरणजीक साहित्य हुनकर क्षमता वा अवदानक लावादुआ अछि। तहन, ई जरूर कह' चाहैत छी जे किरणजीक साहित्यक महत्त्व हुनकर सामाजिक-सांस्कृतिक पुनर्निर्माणक उद्यमक भाव-साक्ष्य हेबा मे छै। सामाजिक-सांस्कृतिक पुनर्निर्माणक उद्यम हुनकर मुख्य अवदान अछि। एहि उद्यमक भाव-साक्ष्य साहित्यक दृष्टि-निर्माणक एक महत्त्वपूर्ण मैथिल आधार भ' सकै छै।

## 4. साहित्य मे शिव

(i.) मिथ जातीय स्वप्न आ चेतनाक संपुट होयबाक दृष्टि सँ महत्वपूर्ण होइ छै। सांस्कृतिक यथार्थ के अभिव्यक्त करबा लेल मिथ बहुत उपयोगी होइ छै। एहि उपयोग मे जोखिमो कम नहि होइ छै। महादेव मैथिल चेतनाक अभिव्यक्तिक महत्त्वपूर्ण आलंबन छथि। भक्ति आ पूजाक अंतर के ध्यान मे रखबाक आग्रह करैत कह' चाहब जे भक्तिकालं मे पाथर पूजन के बेर-बेर प्रश्न-बिद्ध कयल गेल छै। जाबे तक पाथर पूजनक पद्धति जारी रहतै ताबे तक ओ नाना प्रकार सँ प्रश्न-बिद्ध होइत रहत। किरणजी सेहो पुछनाइ नहिं बिसरैत छथि जे 'बनैत छै, भोज्य पदार्थ/तँ लोढ़ी सिलौटकेँ ओंघड़ाय/मंदिर मे पड़ल निरर्थक/ पाषाण पिंडकेँ क्यो की करैत प्रणाम'1। एक स्तर पर ई प्रश्न अछि त' दोसर स्तर पर ओ महादेवक मिथकीय रूप केँ मानवीयकरण एवं जन-एकताक साक्षात रूप मे सेहो स्थापित करै छथि, 'हे नकुल! कुल मूलक अहंकारकेँ तोड़निहार/ छी अहाँ जन-एकता साकार।'[2]

(ii.) कलियुगक संताप सँ त्रस्त एवं सतयुगक गुणगान मे लागल मैथिल समाज मे किरणजी कलियुगक समर्थन करैत छथि। ककरा कहल जाइ छै कलियुग, की छै कलियुगक लक्षण! डॉ. रामशरण शर्मा कहै छथि जे 'इसाक बाद तेसर शताब्दीक अंतिम चतुर्थांश सँ चारिम शताब्दीक प्रथम चतुर्थांशक पौराणिक पाठ्यांश सब सँ पता चलै छै जे आंतरिक संकटक कारण वर्णव्यवस्था मे टूट होम' लागल छलै। एहि अवस्थाकेँ कलियुगक संज्ञा देल गेलै। कलि सँ लोकक उद्धार केनाइ राजाक पुनीत कर्त्तव्य बनि गेलै। ईसाक बादक 4 सँ 6 शताब्दीक अभिलेख सबमे स्पष्ट रूप सँ आर बादक पुरा लेख सबमे पारंपरिक रूप सँ राजाके वर्णधर्मक पोषक मानल गेल छै। पल्लव राजा सिंहवर्मनकेँ 'कलियुग दोषावसन्न-धर्मोद्धारेण सन्नद्ध' (कलियुगक दोख सँ अवसन्न धर्मक उद्धारक वास्ते सन्नद्ध) विशेषणक प्रयोग कएल गेल छै।'[3] 'वर्णधर्मक पोषक' यदि राजा छलाह त' ई निश्चते जे 'वर्णधर्मक पोषण' राजनीतिक काज छल। किरणजी एहि राजनीतिक कार्यकेँ बुझैत कलियुगक समर्थन करै छथि। 'कलि'क अर्थ 'वर्णधर्म'



मुक्त जन लेबाक चाही आ तञि 'कलियुग'क अर्थ 'जनयुग' लेबक चाही। एहेन जनयुग जाहि मे, 'सभकेँ भेटत विकासक अवसर/हेतै असली गुणक समादर/क्यो नहि बनतै भूदेव न डोम / केवल मानव / अप्पन भाग्य विधाता मानव / जै युग मे से मानव युग / असली सतयुग आबि रहल अछि / ई मानव कवि अपन धर्म बुझि / ओकर स्वागत गाबि रहल अछि।'[4] एहि तरहेँ किरणजी असली सतयुग के जनयुगक रूपमे चिन्है छथि। ध्यान सँ देखला सँ नवजागरणक पीड़ा एहि मानव धर्मक जन्मक प्रसव पीड़ा सं उपमित बुझायत। अपना समय मे चंडीदास, रवीन्द्रनाथ समेत नवजागरणक बुद्धि पर्व एहि मानव धर्मक मर्म के बुझने रहए। किरणजी सेहो अपना समय मे एहि मानव धर्मक जन्मक सोहर गबैत छथि। जाञि 'वर्णधर्मक पोषण' राजनीतिक काज छल, ताञि मानव धर्मक जन्म सेहो राजनीतिके कार्य भ' सकैत छल।

(iii.) परंपराक समझ आ प्रगतिशील तत्त्वक नवोन्मेषणक उद्यम प्रमुख सांस्कृतिक दायित्व होइत छैक। संस्कृति मे पुनर्नवीकरणक आत्म-प्रक्रिया सतत जारी रहैत छैक। अपना समय मे विद्यापति नवताक आकांक्षा व्यक्त करैत पुनर्नवा संस्कृति के नित-नित नूतन होयबाक प्रक्रिया के चिन्हने रहैथ। किरणजीक साहित्यमे एहि नवताक प्रसार समाजमे होयबाक आकांक्षा अंतस्सलिला के रूपमे सर्वत्र भेटि सकैत अछि। परंपराक जटायल सूत्र के सोझरबैत ओ प्रगतिकारी सामाजिक संरचनाक महत्त्व के बूझि सकैत छलाह।

## 5. खंडित समाज मे स्वतंत्रता-समानता-सहोदरता-प्रगतिशीलता

(i.) किरणजीक जन्म 1906 मे भेल छलैन। ई बात रेखांकित भेल अछि जे 1930 अर्थात् 24 बरखक वयस मे बनारस प्रवासक दौरान हुनकर व्यक्तित्व मे एकटा पैघ परिवर्तन भेलैन। इएह परिवर्तन किरणजीक व्यक्तित्वक स्थाई आ मूल्यवान रूपके गठित केलकैन। 1930तक भारतीय राजनीतिक स्वाधीनता आंदोलन जनआंदोलन मे बदलि चुकल छल। प्रगतिशील आंदोलनक सुगठित वा संगठित रूप प्रकट नहि भेल छल। मुदा, परंपरा आ आधुनिकता मे संवाद आ कखनो-कखनो संघात सेहो उपस्थित भेनाइ प्रारंभ भ' चुकल छल। हिन्दी मे जयशंकर प्रसादक 'कामायनी' आ

प्रेमचंदक 'गोदान'क लेखन नहि भेल छल। प्रगतिशील लेखक संघ बा डीडब्लूएक गठन नहि भेल छल। स्वाधीनता आंदोलनक ऊपरी चरित्र गांधीवादी विचार-दर्शन सँ संघटित छल। गांधी दर्शनक औजार-पाती मध्यकालक मूल्यबोध सँ बनल छलैक। मध्यकालक मूल्यबोध सेहो अपना समयक मरंपरा सँ टकराक' विकसित भेल छल आ गांधीजीक समयमे अपने परंपरा बनि गेल छल। मुदा ई ध्यान मे रखनाइ आवश्यक जे स्वाधीनता आंदोलनक ऊपरी चरित्रक अंतःकरण मे विकसित भेल मूल्यबोध अपन बनावट मे बहुत अधिक संश्लिष्ट छलैक। एहि संश्लेषक एक रूपकेँ नेहरूक उपस्थितिक आलोक मे पढ़ल जा सकैत अछि। रूपक मे अपन बात कहबा मे किछु सुविधा होइत छै त' किछु जोखिम सेहो रहै छै। जोखिम उठाक' सुविधा लैत कह' चाहै छी जे गाधीजी भारतीय स्वाधीनता आंदोलनक परंपरा पक्ष छलाह त' नेहरूजी ओकर प्रगति पक्ष। 1930 तक पाकिस्तानक माँग उठि चुकल छल, दलित एवं पिछड़ल समाज आजाद होइत भारत मे अपन स्थितिक विषय मे चिंतित छल। गांधीजीक हरिजन प्रेम अखन पूर्ण रूप सँ सामने नहि आयल छल। आजाद भारत मे देसी राज-रजवाड़क होब'वला स्थिति बहुत साफ नहि भेल छलै। औपनिवेशिकताक अंत आ जनतंत्रक आविर्भावक क्षीण संभावना इतिहासक सतह पर उभरि रहल छलै। किरणजीक लेल आजादीक अर्थ एक स्तरीय नहि बहुस्तरीय रहैन। ओ ब्रिटिश शासन सँ आजादीक संगे मिथिलाक राजतंत्र सँ मुक्तितकक मर्म के सेहो बुझैत छलाह, 'विश्व के थर्रा रहल अछि, एक जर्मनकेर सिपाही/हस्तगत अछि एक व्यक्तिक, आइ रोमक बादशाही / कर्म्मबलसँ एक कुल्ली, ब्रिटिसकेर साम्राज्य साजल / तही ब्रिटिसक दास नृपतिक हम रहै छी पाछु लागल / धिक्धिगत्ति ओहि बुद्धिकेँ जे लोककेँ कायर बनाबै / त्यागि उद्यम, पेट हेतुक, भीख खुस-आमद सिखाबै / उठू मैथिल युवक, युगमे कर्मयोगक शंख बाजल / विश्वविजयी संगठन बल पाबि जनता सैन्य साजल / रहि सकल नहि जारसाही मूल सह सुलतान गेला / जनमतक प्रतिकूल चलि इंगलैंडपति पेरिस पड़ैला/नवयुगोदय भेल अछि, नरनाथ छथि नर-नाथ लागल / एहू जनतातंत्र युगमे ''किरण'' की रहबे अभागल।'[5]

(ii.) विद्यापतिक भूमिक भौतिक, राजनीतिक विपन्नता त' अपना जगह सांस्कृतिक धरोहर आ बौद्धिक प्रखरताक निस्तेज भ' गेनाइ किरणजीकेँ



मर्माहत करैत छैन। जे संतति अपन वर्तमान के नहि बचा सकैत अछि ओ अपन प्रांजल अतीतो सँ प्रेरणा नहि लय सकैत अछि, किरणजी एहि सत्य के नीक जकाँ बुझैत छलाह। मुदा एतबा बुझनाइ पर्याप्त नहि, किरणजी एहि बात के सेहो बुझैत छलाह। से जँ नहि बुझितैथ तँ ओहो इतिहासेक गली मे बौआइत रहितैथ। ओहि युग मे अतीतक पुनर्गठन एकटा सामान्य प्रवृति छल। बहुत रास लोक एहि अतीतक खोज मे अति प्राचीनकाल तकक यात्रा पर निकलला जाहि मे सँ बहुतोक वर्तमान मे वापसी संभव नहि भेलनि। किरणजी अपन चेतनाक संग विद्यापति तक पहुँचि अपन वर्तमान आ भविष्य तक निरंतर यात्रा करैत छथि। अतीत, वर्तमान आ भविष्यक ई त्वरित आवाजाहीक क्षमता किरणजीक प्रगतिशीलताक पुष्ट प्रमाण अछि। ओ विद्यापति तक पहुँचै छैथ मुदा ओत' बस' लेल नहि। वरन, विद्यापतिकेँ अपना देशकाल मे अयबाक नोत देबाक वास्ते ओ विद्यापति तक पहुँचै छैथ। विद्यापति के अपना एहि ठाम बजेबा मे हुनका मर्मांतक संकोच होइत छैन। एहि संकोचक मर्मकेँ उपलब्ध केनाइ मैथिल समाजक लेल आइयो कठिनाह अछि–'अछि सूखल नयन नदी हियमे मरुभूमिक घोर बिहाड़ि बहय/ मधु-कानन के सुकुमार सखा कविकोकिल, हाय, बजाउ कतय? / .... / मिथिला-मृदु-भाषा-कानननमे, अपने जे रोपल काव्लता / छल टूटि पड़ल बंगीय भ्रमर, जनि देखि मनोहर मंजुलता / अछि सूखि रहलि से भूमि खसलि, आसार बिना आधार बिना। / नव कोरक हाय, फलैत कोना? जननी तनमे रसधार बिना?'[6]

iii. सामाजिक परिवर्त्तनक स्वाभाविक प्रक्रियाक अंतर्गत नव परिस्थिति मे संवेदनात्मक आकांक्षाक संधान आ नव स्वप्नक सामाजिक संस्थापन किरणजीक साहित्यकेँ महत्वपूर्ण बनबैत छैन। किरणजीक साहित्य मे तत्कालीन भारत मे चलि रहल राजनीतिक संघर्षक सामाजिक प्रतिफलनक स्वप्न केँ सामाजिक संवेदना सँ जोड़बाक कौशल छैन। महत्त्वपूर्ण ई जे संगहि मैथिल अस्मिताक स्वायत्तताक प्रति संवेदनप्रवण सजगता सेहो छैन–'कतेक दिनक बाद / उगल छी हे मिहिर मिथिलाकेर / छलहुँ कतय नुकैल ?/ .... अथवा धयल छलहुं की राजनैतिक कोनो पार्टी / जाहिसँ पदलोभ रोगग्रस्त / छलहुँ की भय गेल ? आ तात्रि छल भेल बाँतर / मिथिलाक सङ सम्बन्ध ? / हम व्याकुलमना औनाइत / नोरायल नयने

छलहुँ बाट तकैत चारूकात । / अछि अनेको सूर्य्य जगमे / बड़का टटा, बड़ तेज / मुदा हमर गोसाउनिक सीर लग घेंसिऐल / हृदयक ग्रहमे सन्हिऐल / जे अन्हार अछि तकरा / कय नहि सकैत दूर आन 'प्रकाश' / व्यर्थ भय रहलैन, जीवन-यत्न / 'योगी' महात्माकेर। / अहाँ छी अप्पन सहोदर।/एक जीवन स्रोत / एक लक्ष्य पुनीत / केहनो रहत तन / पुष्ट वा दुबरैल / मैल वा माजल सजावल / हमर शोणित-स्नेह / अहाँकेर पाथेय बनैक निमित्त / अछि सतत तैयार।[7] एहि भाव-सघन आ विचारपुष्ट काव्यांश के बेर-बेर ध्यान सँ पढ़नाइ आवश्यक अछि। राजनीतिक लोकक प्रति किरणजीक ई सोचनाइ जे 'अथवा धयले छलहुँ की राजनैतिक कोनो पार्टी / जाहि सँ पदलोभ रोगग्रस्त / छलहुँ की भय गेल ? आ तत्र छल भेल बाँतर / मिथिलाक सङ सम्बन्ध?' पुनर्विचारक अपेक्षा रखैत अछि। ई अपेक्षा आर गंभीर बुझना जाएत यदि एकरे संग इहो ध्यान मे राखि सकी जे, 'अछि अनेको सूर्य्य जगमे / बड़का टटा, बड़ तेज / मुदा हमर गोसाउनिक सीर लग घेंसिऐल / हृदयक ग्रहमे सन्हिऐल / जे अन्हार अछि तकरा / कय नहि सकैत दूर आन 'प्रकाश'। एहि 'आन प्रकाश' के चिन्ह' पड़त। 'आन प्रकाश'क अर्थकेँ 'व्यर्थ भय रहलैन, जीवन-यत्न / 'योगी' महात्माकेर।' के बुझने बिना खोलल, अर्थात डिकोड नहि कएल जा सकैत अछि। 'मिहिर मिथिलाकेर' के छलाह वा छैथ सेहो ठीक केनाइ जरूरी। वर्ग विभाजित समाज मे नहि त' प्रगतिशीलता आ स्वतंत्रता अखंडित रहि सकैत अछि आ नञि समता आ सहोदरताक भावे अखंडित रहि सकैत अछि। किरणजी मैथिल समाजक पुनर्गठनक लेल स्वप्नशील छलाह। मैथिल समाज जाति-पाँति, सोति-भलमानुष-जबार, ऊँच-नीच, धनी-निर्धन, धर्म-संप्रदाय सँ घनघोर आत्म-विखंडनक अवस्था मे छल। आत्म-विखंडनक ई स्थिति सामाजिक पुनर्गठन मे पैघ बाधक छलै। आ तञि किरणजी जाति-पाँतिक, सोति-भलमानुष-जबारक, ऊँच-नीचक, धनी-निर्धनक, धर्म-संप्रदायक विरुद्ध छलाह। किरणजीक सामाजिक समयक सीमाकेँ ध्यान मे नहि रखनाइ अन्याय होएत। हम आइ सर्वत्र हुनका सँ अनिवार्यतः सहमते होइ, से आवश्यक नहि। कतौ-कतौ कोनो तात्कालिक दबाव हुनका इतिहासक गलत व्याख्या तक सेहो ल' गेल छैन, ओना एहेन अपवादे स्वरूप भेल छै, मुदा भेल छै, जेना-1956 मे रचित आ कविता संग्रह



'कतेक दिन बाद' मे संकलित कविता 'ताजमहल'। तात्कालिकताक कोनो दुर्वह दबाव मे इतिहासक गलत समझ पर लिखल कविताक अपवादात्मक उदाहरण बुझना जाइत अछि।

iv. किरणजीक व्यक्तित्वक नाभिकीय बिंदु हुनकर आंदोलन-धर्मिता मे छैन। किरणजी सन आंदोलनधर्मी रचनाकारक प्रगतिशीलता साहित्यक गुणक रूप मे बाद मे पठनीय होइत छैक, पहिने पठनीय होइत छैक आंदोलन कर्म मे। आंदोलन आ रचनाक संबंध दू कोण सँ बूझल जा सकैत अछि। अधिसंख्य रचनाकारक प्रगतिशीलताकेँ रचना मे पढ़ल जा सकै छै। बहुत कम रचनाकारक प्रगतिशीलताकेँ आंदोलन कर्मक धधकैत आलोक मे पढ़ल जा सकै छै। किरणजीक प्रगतिशीलताकेँ धधकैत आलोके मे पढ़ल जा सकै छै। किरणजीक आंदोलन कर्म के बुझबा लेल हुनकर काव्य सँ पर्याप्त प्रकाश भेटनाइ संभव नहि। वस्तुतः, किरणजीक आंदोलनधर्मिता हुनक साहित्य के बुझबाक हुनर द' सकैत अछि। एहि लेल किरणजीक प्रामाणिक जीवनी के तैयार केनाइ जरूरी। एहि सँ हुनकर अवदानक त' पता चलबे करत, संगहि बीसम सदी मे मिथिलांचल मे चलल सामाजिक आंदोलन आ मैथिल नवजागरण आंदोलनक किछु सूत्र केँ सेहो पकड़ल जा सकैत अछि। 'अछि सूखल नयन नदी हियमे मरुभूमिक घोर बिहाड़ि बहय' मैथिल जीवनक संगहि किरणजीक व्यक्तिगतो जीवनक व्यथाक कथा कहैत अछि। एहेन व्यथाग्रस्त जीवनमे प्रगतिशीलताक रक्षा, प्राणरक्षे टा सँ समतुल्य भ' संभव भ' सकैत अछि।

v. बीसम सदी मे प्रगतिशीलताक रक्षा मे सक्रिय संगठन आ विचारधाराक द्वंद्व के बुझबा मे सेहो किरणजीक संघर्ष सँ मददि भेटि सकैत अछि आ एक्कैसम सदी मे एहि दिशा मे होम'वाला संभावित प्रयासकेँ सेहो मददि भेटि सकैत अछि। ध्यान मे अछि जे प्रगतिशील विचारधारा मे स्वभावतः वैज्ञानिकताक आग्रह रहै छै। धर्म आ विज्ञान मे एकटा अंतर ई कहल जाइत छैक जे धर्म मे पूर्व प्रमाण होइत छैक जखन कि विज्ञान मे उत्तर प्रमाण । प्रगतिशीलतोक संदर्भ मे पूर्व नहि उत्तर प्रमाण होइ छै। किरणजीक प्रगतिशीलता के बूझब आ बचायब आ ताहू सँ बेसी आगू बढ़ायब आइ एक महत्त्वपूर्ण दायित्व अछि। किरणजीक प्रगतिशीलता केँ अजुका मैथिल समाजक आ टटका मैथिली साहित्यक प्रगतिशील अवस्थाक

आलोक मे पढ़नाइ अधिक जरूरी अछि। किछु शुभ छै, त' किछु अशुभ छै, मुदा ई सत्य जे उदारीकरण-निजीकरण-भूमंडलीकरणक समय मे जखन राजनीतिक राष्ट्र प्रत्याहार-सन्निपात (Withdrawal Syndrome) सँ ग्रस्त भ' रहल अछि, दुनियाक सामाजिकता सबमे अपन पुनर्गठनक ललक फेर जोर पकड़ि रहल छै। मैथिल समाज मे अपन पुनर्गठनक कतेक ज्ञान, इच्छा आ क्रिया सक्रिय भ' सकतैक से अवश्ये चिंता आ चिंतनक विषय। स्वतंत्रता-समानता-सहोदरता-प्रगतिशीलता अखंडित आ अविभाज्य मूल्य होइ छै। खंडित समाज मे त' एकर सपनो अखंडित नहि रहि पबैत छै। ताञि, आइ नहि, काल्हि मैथिल समाजकेँ खत्तो उपछ' पड़तै आ माछो मार' पड़तै। विश्वास अछि जे जहिया कहियो मैथिल समाज नवोन्मेषक आंतरिक प्रक्रिया सँ गुजरबाक वास्ते अपनाकेँ राजनीतिक रूप सँ पुनगठित करबा लेल डाँड़ कसत ओकरा किरणजीक सांस्कृतिक प्रगतिशीलता एक महत्त्वपूर्ण मार्गदर्शक के रूप मे प्रतीक्षा करैत अवश्ये भेटतै। किरणजीक सांस्कृतिक प्रगतिशीलता महत्त्वपूर्ण मार्गदर्शक के रूप मे, सभा मे जँ नहियो भेटै त' मार्ग मे अवश्ये भेटतै।

1. डॉ० काञ्चीनाथ झा 'किरण' : कतेक दिनक बाद : माटिक महादेव (रचनाकाल 1956)
2. डॉ० काञ्चीनाथ झा 'किरण' : कतेक दिनक बाद : जय महादेव (रचनाकाल 1956)
3. रामशरण शर्मा : प्राचीन भारत मे राजनीतिक विचार एवं संस्थाएँ : परिशिष्ट 2 गोपति से भूपति : राजकमल प्रकाशन, पाँचवीं आवृत्ति 2001
4. डॉ० काञ्चीनाथ झा 'किरण' : कतेक दिनक बाद : सतयुग (रचनाकाल 1955)
5. डॉ० काञ्चीनाथ झा 'किरण' : कतेक दिनक बाद : युवक सँ (रचनाकाल 1939)
6. डॉ काञ्चीनाथ झा 'किरण' : कतेक दिनक बाद : विद्यापति (रचनाकाल 1940)
7. डॉ काञ्चीनाथ झा 'किरण' : कतेक दिनक बाद : कतेक दिनक बाद (रचनाकाल अनुल्लिखित)



# परिशिष्ट

## समाचार

## मैथिली में फूटा पहला जनस्वर किरण का था

पटना : दीप नारायण सिंह सभागार मे मैथिली कवि कांचीनाथ झा किरण की दो दिवसीय जन्मशती समारोह मनायी जा रही है। आज उक्त कार्यक्रम की शुरुआत हुई। कार्यक्रम दो सत्रों में चला। प्रथम सत्र में मैथिली समीक्षक अशोक व पत्रकार महेन्द्र झा अग्निपुष्प ने आलेख पाठ किया। दूसरे सत्र में मुजफ्फरपुर से निकलने वाले एक दैनिक अखबार के संपादक सुकांत सोम और डॉ शिवशंकर श्रीनिवास ने अपना-अपना आलेख पढ़ा। पहले सत्र की अध्यक्षता वरिष्ठ कथाकार राजमोहन झा ने की और संचालन कथाकार-समीक्षक मोहन भारद्वाज ने किया, तो दूसरे सत्र की अध्यक्षता बटुक भाइ के नाम से प्रसिद्ध छत्रानंद सिंह ने किया व संचालन अशोक ने किया। इसके बाद इन आलेखों पर बातचीत हुई। इसमें हिस्सा लेने वालों में मुख्यत: युवा कवि अविनाश, प्रफुल्ल कोलाख्यान, पंकज पराशर, वीरेन्द्र मल्लिक, रामलोचन ठाकुर, नरेन्द्र झा आदि ने भाग लिया। इन आलेखों से जो बातें छन कर आयीं उससे पता चलता है कि यात्री के जमाने से भी पहले मैथिली में जो पहला जनस्वर फूटा वह स्वर था कांचीनाथ झा किरण का। उनका जन्म 1 दिसंबर 1906 को हुआ था। वह जाति से ब्राह्मण थे, तथापि वह उन्हीं परंपराओं के खिलाफ खड़े थे, जिनका सर्वाधिक लाभ

उच्च वर्ग उठाता था। उनके इस मुखर तेवर के कारण ब्राह्मण समाज ने उन्हें अपनी जाति से बहिष्कृत भी कर दिया था, लेकिन वह सतत परंपराओं के खिलाफ अपनी लेखनी की धार को पैनी किये रहे। तमाम विरोधों और बाधाओं के बाद भी उन्होंने जनस्वर को नहीं छोड़ा। वक्ता एक राय से इस बात पर सहमत दिखे कि किरण ने जो आज से 40 साल पहले लिखा, उसकी न तो आज प्रासंगिकता खत्म हुई है और न ही महत्ता। आज उनके व्यक्तित्व व कृतित्व पर जोरदार बहस होना चाहिए। उक्त अवसर पर सद्यः प्रकाशित एक किताब का भी लोकार्पण समाजशास्त्री महेन्द्र नारायण कर्ण ने किया। कल भी यह कार्यक्रम जारी रहेगा, जिसमे कांचीनाथ झा किरण के व्यक्तित्व व कृतित्व पर बहस होगी। कल भी कार्यक्रम की शुरुआत आलेख पाठ से होगी। आलेख पाठ करने वालों में कल होंगे अविनाश, प्रफुल्ल कोलख्यान, पंकज पराशर और हरेकृष्ण झा।

**नव विहार, 26/11/06**

## काञ्चीनाथ झा की जन्मशती पर संगोष्ठी आयोजित

पटना (सं.सू.)। मैथिली के मूर्धन्य साहित्यकार काञ्चीनाथ झा 'किरण' की जन्मशती के अवसर पर शनिवार को प्रतिमान, पटना की ओर से दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन दीप नारायण सिंह क्षेत्रीय सहकारी प्रबंध संस्थान के ज्योतिरीश्वर नगर में किया गया। राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन समाज विज्ञानी और ए. एन. सिन्हा समाज अध्ययन संस्थान के पूर्व निदेशक डा. महेन्द्र नारायण कर्ण ने किया। अपने उद्घाटन भाषण मे डा. कर्ण ने मिथिला के सामाजिक परिवेश और मैथिली भाषा के संदर्भ मे डा. काञ्चीनाथ झा 'किरण' के मैथिली मे अवदान की चर्चा करते हुए कहा कि डा. किरण ने मिथिला की सामाजिक पृष्ठभूमि को ध्यान में रखकर साहित्य की रचना की थी। उनकी रचनाओं को इसी संदर्भ मे देखने की जरूरत है। उद्घाटन समारोह मे मैथिली भाषियों की उपस्थिति थोड़ी कम जरूर थी। मगर राष्ट्रीय संगोष्ठी मे दरभंगा के डा. शंकर कुमार झा, रत्नेश्वर मिश्र, पटना विश्वविद्यालय के प्रो. वीरेन्द्र झा और बिहार सरकार के सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग के पूर्व निदेशक जगदानंद झा के साथ-साथ कोलकाता और दिल्ली से आये मैथिली साहित्यकारों ने भाग लेकर संगोष्ठी को मैथिली के लिए असरदार बना दिया।

**हिन्दुस्तान 26/11/06**

## मूर्धन्य रचनाकार थे कांचीनाथ झा

संवाद सूत्र, पटना : मैथिली साहित्य के आकाश में अपनी परम्परा-भजंक रचनाओं से महत्वपूर्ण स्थान बनाने वाले कालजयी रचनाकार कांचीनाथ झा 'किरण' की जन्मशताब्दी के अवसर पर प्रतिमान संस्था के तत्वावधान में शनिवार से प्रारंभ हुए दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन दीप नारायण सिंह क्षेत्रीय सहकारी प्रबंध संस्थान में किया गया। संगोष्ठी के पहले दिन किरणजी के महत्व तथा उनकी रचनाओं में निहित प्रगतिशीलता पर केन्द्रित चार प्रमुख आलेखों का पाठ किया गया। संगोष्ठी का उद्घाटन समाज शास्त्री प्रो. महेन्द्र कर्ण और दो सत्र में विभाजित कार्यक्रम की अध्यक्षता राजमोहन झा व छत्रानंद सिंह झा ने की। इस अवसर पर प्रतिमान के सचिव अशोक ने बताया कि रचनाकार कांचीनाथ झा किरण मैथिली साहित्य के मूर्धन्य कथाकार व कवि थे।

**दैनिक जागरण 26/11/06**

## किरण की जन्मशताब्दी पर संगोष्ठी

पटना (आससे)। मैथिली साहित्य"में अपनी परम्परा-भंजक रचनाओं से महत्वपूर्ण स्थान बनानेवाले कालजयी रचनाकार कांचीनाथ झा किरण की जन्मशताब्दी पर प्रतिमान संस्था द्वारा दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। समारोह के पहले दिन किरणजी के महत्व तथा उनकी रचनाओं में निहित प्रगतिशीलता पर केन्द्रित चार प्रमुख आलेखों का पाठ किया गया। आलेख पाठ करनेवालों में अशोक, अग्निपुष्प, सुकान्त सोम तथा डा. शिवशंकर श्रीनिवास प्रमुख थे। इन आलेखों के आधार पर विमर्श में भाग लेनेवाले साहित्यकारों में मुख्य थे- प्रफुल्ल कोलख्यान, वीरेन्द्र मल्लिक, रामलोचन ठाकुर, नरेन्द्र झा, पंकज पराशर, अविनाश आदि।

**आज 26/11/06**

Maithili literature : Maithili literature experts on Sunday gathered to discuss latest writings in Maithili literature at the national symposium held at the Deep Narain Singh regional cooperative Institute on the occasion of the birth centenary of Kanchi Nath Jha Kiran. Top experts, including Pankaj Parashar, Krishna Mohan Jha, Ashutosh Jha, Usha Kiran Khan, Mohan Bhardwaj, Ratneshwar Mishra and Birendra Mallick, participated in the symposium.

**The Times of India 27-11-06**

## SEMINAR ORGANISED

SCHOLARS DRAWN from different parts of the State threw light on the work of the noted Maithili poet and critic Kanchinath Jha 'Kiran' at a two-day seminar organised to mark his birth centenary at the Deep Narain Singh Regional Cooperative Institute.

**Hindustan Times : 27-11-06**

## कथा साहित्य, कविता व आलोचना पर विमर्श

पटना, 26 नवम्बर (एसएनबी)। 'प्रतिमान' संस्था द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन आज डा. कांचीनाथ झा किरण के कथा साहित्य, कविता व आलोचना-दृष्टि की व्यापक पड़ताल की गई।

मैथिली के कालजयी रचनाकार डा. कांचीनाथ झा किरण के जन्म शताब्दी वर्ष पर स्थानीय दीप नारायण सिंह क्षेत्रीय सहकारी संस्था में प्रतिमान ने दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की। इसमें मैथिली साहित्यकारों ने भाग लिया। आलेख पाठ में पंकज पराशर, कृष्ण मोहन झा, आशुतोष झा, प्रफुल्ल कोलख्यान, विद्यानंद झा और अविनाश शामिल थे, तो विमर्श में भाग लेने वालों में अशोक कुमार मेहता, हीरेन्द्र कुमार झा, ऊषा किरण खान, मोहन भारद्वाज, प्रमोद झा, वैद्यनाथ आदि। अध्यक्ष डा. रत्नेश्वर मिश्र तथा वीरेन्द्र मल्लिक थे। संचालन कथाकार अशोक ने किया।

**राष्ट्रीय सहारा 27/11/06**



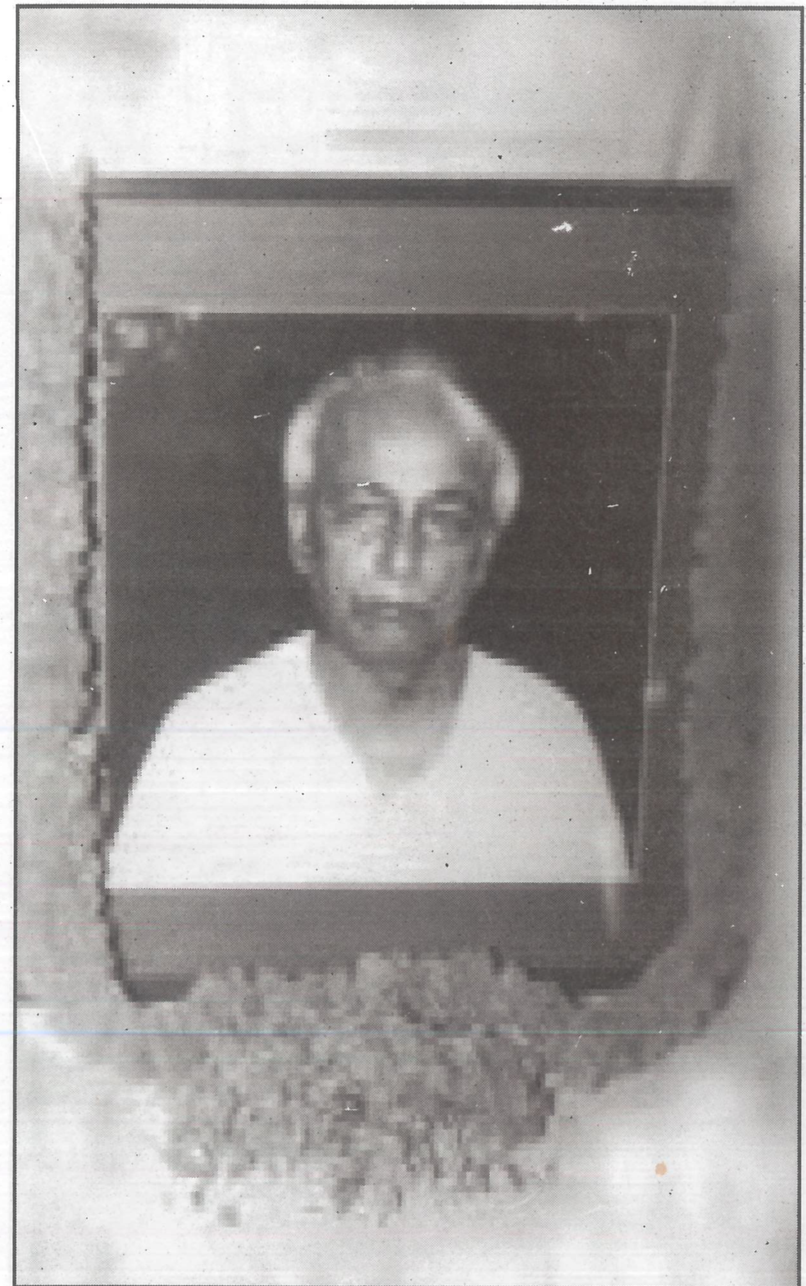
## मैथिली भाषा को जनता के दिलों में उतारा किरण ने

पटना : मैथिली के रचनाकार डा. कांचीनाथ झा 'किरण' का जन्म शताब्दी समारोह स्थानीय दीप नारायण सिंह क्षेत्रीय सहकारी संस्थान में मनाया गया। इस अवसर पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें वक्ताओं ने कहा कि साहित्यकार किरण जी अग्रसोची थे। उनके कारण ही आज मैथिली भाषा व साहित्य जनता के दिलों में है। प्रतिमान द्वारा आयोजित इस संगोष्ठी में देश के विभिन्न हिस्सों के मैथिली साहित्यकारों ने भाग लिया।

दो सत्रों में विभाजित कार्यक्रम में छह मुख्य आलेखों का पाठ किया गया, जिसमें व्यापक विमर्श भी हुआ। आलेख पाठ पंकज पराशर, कृष्ण मोहन झा, आशुतोष झा, प्रफुल्ल कोलख्यान, विद्यानंद झा और अविनाश ने किया, जबकि विमर्श में अशोक कुमार मेहता, हीरेन्द्र कुमार झा, उषा किरण खान, मोहन भारद्वाज, प्रमोद कुमार झा तथा वैद्यनाथ मिश्र ने भाग लिया, दोनों सत्रों की अध्यक्षता डा. रत्नेश्वर मिश्र तथा वीरेन्द्र मल्लिक ने की, जबकि संचालन कथाकार अशोक ने किया, विदित हो कि शनिवार को भी संगोष्ठी का आयोजन किया गया था। इसके पहले सत्र का शुभारंभ 'महेन्द्र झा' द्वारा भगवती गीत के गायन से किया गया। इस मौके पर नरेन्द्र झा द्वारा लिखित पुस्तक 'मिथिला मे जल संसाधन ओ प्रबंधन' का लोकार्पण भी हुआ। उद्घाटन महेन्द्र नारायण कर्ण ने किया जबकि अध्यक्षता राजमोहन झा ने की थी। आलेख का पाठ अशोक, अग्निपुष्प, सुकांत सोम तथा डा. शिवशंकर श्रीनिवास ने किया किया था। इन आलेखों के आधार पर विमर्श में भाग लेनेवाले मुख्य साहित्यकारों में प्रफुल्ल कोलख्यान, वीरेन्द्र मल्लिक, राम लोचन ठाकुर, नरेन्द्र झा, पंकज पराशर, अविनाश, मोहन भारद्वाज आदि प्रमुख थे।

**प्रभात खबर, 27/11/06**

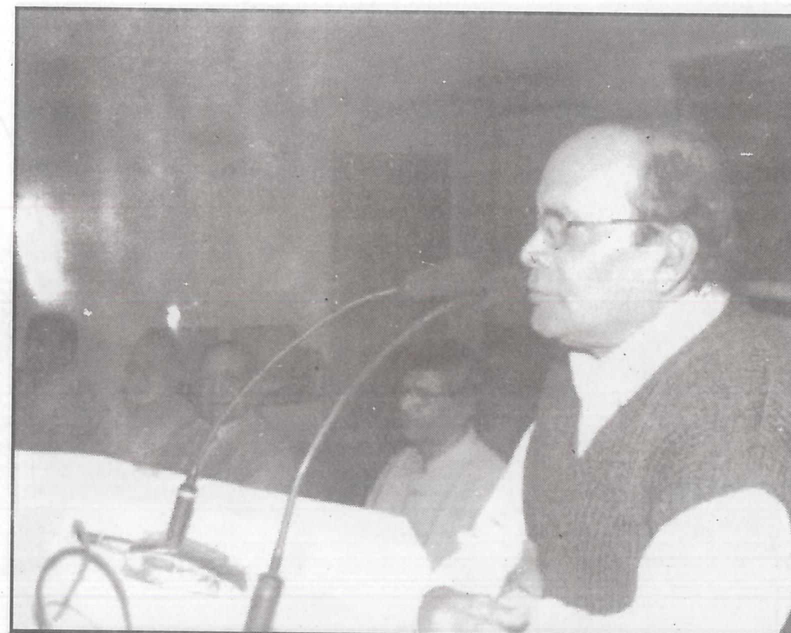
■









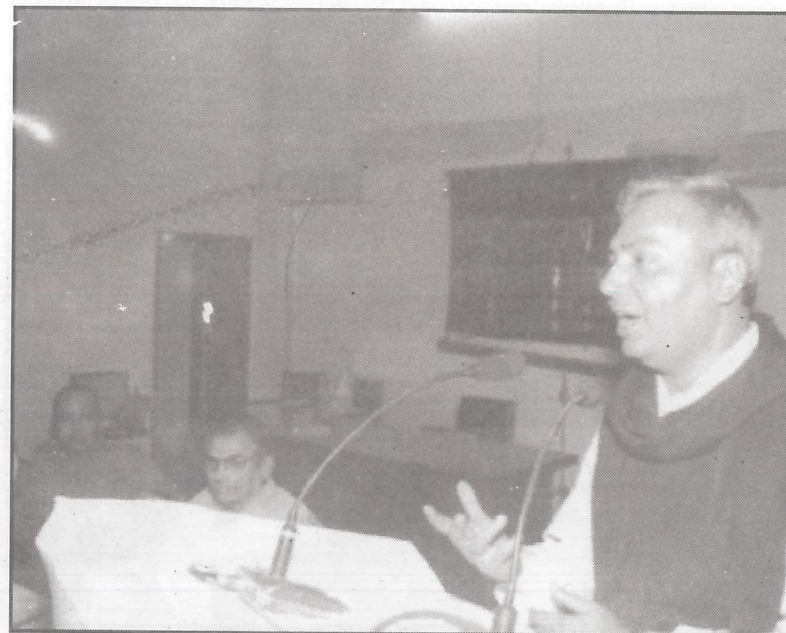


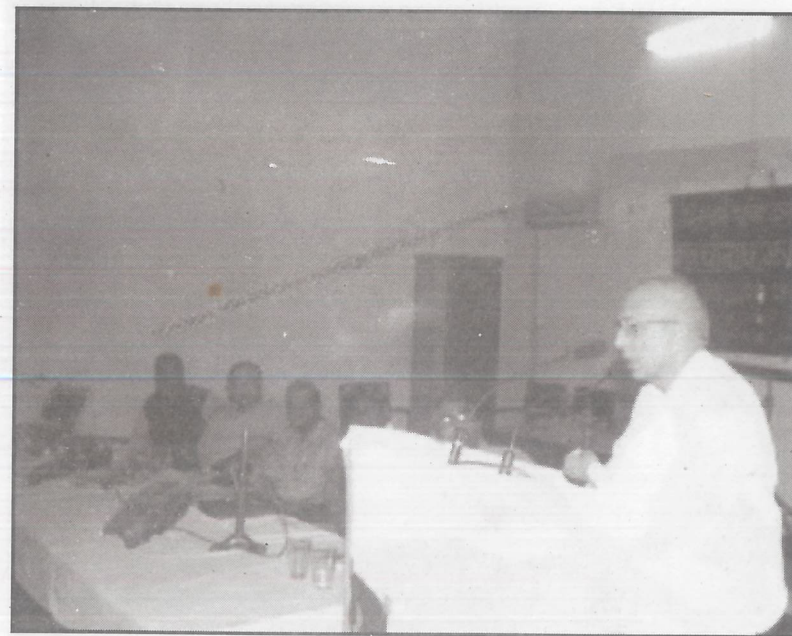


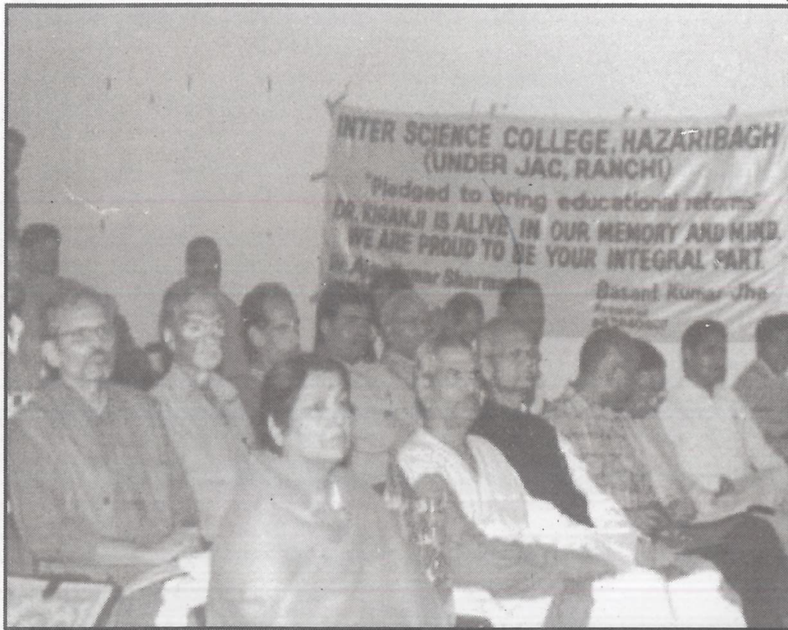











INTER SCIENCE COLLEGE, HAZARIBAGH
(UNDER JAC, RANCHI)
"Pledged to bring educational reforms"
DR. KIRANJI IS ALIVE IN OUR MEMORY AND MIND
WE ARE PROUD TO BE YOUR INTEGRAL PART
Basant Kumar Jha

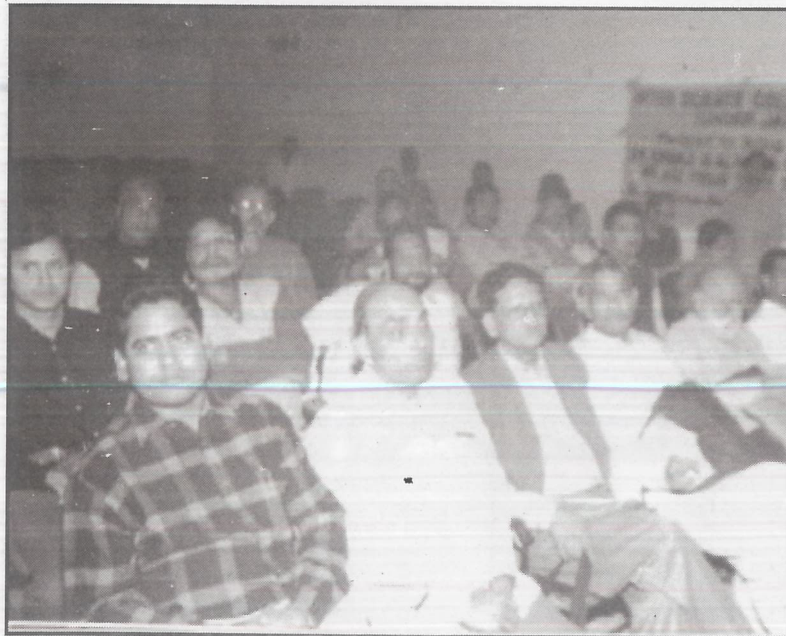






















प्रकाशक : अशोक, सचिव, प्रतिमान
मुद्रक : सरस्वती प्रेस, पटना, 9304625963